

ASBA ARCHIVES

5434

1.451

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

श्री

हादशमसंज्ञिति ॥ अत्र ब्रूत प्रवसासि तस्य त्वय दं नृयमन्य उक्ता क मिति कं चित् तद्वि न्ये उर्वमास
१॥ वृत्तस्य सप्तमस्य वृत्तस्य यान्न गते क वृत्तात्ता वं नै क मिति विषयो संतु वं नामाथ के त्वक ल्यना (गोत्र
वात् ॥ मास १॥ वृत्तस्य वृत्ता ग्रीय गुदू य गे मासादि १ सप्तकी कित १॥ अग्रीधी सोम तोम (असमा
फो पित सोम काविति कु पू पु यो (गया धिस रु के ता शो ग म दं व र्थ क जा दि व ग पु यो (गय व को व
रि क ल्य नाया अ न्या म्य तात् सो नादि पू पु यो ग सु यो गि क सा द श्व सं व र्थ य व र्का वं (गो व धा ल
न ला यो र्था व पा द नी म ॥ त इ की रु द पा द १॥ लघु मि का स गी वृ डि रु वं शो (गय दो नि ली क ल्य नी
या तु ल र गे नात्मानं यो ग बा ध त नृ ति ॥ न र्थ व र्थ का ना दा व पि कु फ यो ग वा ध न वृ डि ली का व
१॥ लघु ल्य नाया दि ति वा यो ॥ सा दि धी १ क व र्थ उ व र्थ क व पु जा य ग १ नृ ल्य न न्य था सि द्धा ति
गु द क पु मा न व लो क उ वृ ट् ना व र्थ क वा त न या उ पि आ दि ल्य वा डि हा (गने ला दि श कि मा
मान स ता लु ल्य मि ति वा यो आ दि ल्य ना जि हा ग व कि न्ता दं १ सो ना दि मा स त्व नृ य व
था सि द्धी क १ पु मा ना नी मा स प द श कि गु द क लो नृ प प र्क १ त थ उ क क १ क न्यो व

नै गिं ग ता क ल्ये मा सि नृ मि यु सा वं ॥ म स्य य ना वं ॥ को र्म १ प च्छि द्वा वृ त्त नृ यो रु मा
१॥ पि न क ल्य स थानं उ या क दू वृ त्त (१॥ म ते नि द श कि सो व मा स र्थ पु ति पा द य मि म द पि
था दि ति श नि थ्या ल को वि यो ग सं रु वा ना स प द यो गि क अ ग पु व म त ति (थ म ग ति धि या
नृ ल्य पु व म नी वि १ मू ख गु द् म ति मा सी ति ॥ रु द्वा ग य वि गि क १ लु का दं न रु व लो सा य दा स्य मा
मा ति पु नृ ना १ स म्प ना ल्य व स्या ती या लो सि कं ग थ ॥ मा रु व लो वि ॥ रु ता रु नि उ क र्क यो पु ति मा स
उ व स र मि ति ॥ वि म र्थ ता द पि न मू न र्थ ॥ नृ द्वा ग्री य गु दू य गे नृ ला दि पु यो (गया धि वा ध क पु
मा (१॥ न मा स ज वृ त्त पु यो ग न मा वि यो ग ल्य वा ध क इ क व र्थ नै म मा स ज दं य नृ स म्प न्धि स व र्क
(थ स म्प दा यै त रु लो क मू ग पु व र्थ क उ व द प म पु व नि य ग पु यो ग वि ष या ता त द न रु व ड नि ग
स स्का व ड म्प ल्य नी र्थ प म्प व वा कि वा व क उ पु ल्य य व लो ल्य र्क ड नि क र्क ता या नृ ला व य ति
वा ध र्क वि न्ता कि व र्थ ना नी स नि दि ता वि (गय व र्थ न नि य मा त् पु क र्क ला दि स नि दि ता ज ग ति
ध य का (गु यी प द व र्क मू दं उ यो ग र्थ प र्क व र्का वं ल पु यो (गया धि वा ध क पु यो (गया धि वा ध क पु यो

कूमदं प्रयो गाल कृष्णदिने लूकं मूर्खीं शुद्धं मासि मासी लादो मासय दस्य दशमं नयना
 मावश्च मासी लात। अतः सिद्धं वाचं वंदे शास्त्र मासं पृथक् सवसवनी वेदो मूर्खो ह्यगुलकं
 ति॥ यदुपसि नैद्यं द्वादशे कपूरययं लुपिमासो गेयो दशति मासि शुद्धो गयवि
 लिङ्गक तावत्सवयं दं पुष्पकं तद्वाक्यं। द्वादशमासाः सप्त सवन्ति निःप्रतिपदं गणकिं अ
 दकमा नै नशको कृपायौ तथैव पयकी नानाथ के ल्यनायो अत्रा यत्तादिति। अथ कश्चि
 त्द्वादशिकं वयं वा लुगतिवत् सवयं दमूयमं व। उयो दशमपि द्वादशे के सीद्धं दं क उवाच
 सो नय थगसा विल्वविरो धा द्वादशमासाः सप्त सवन्ति तु गितन नै। नदि मास्य लादि नृयं
 द्वादशतिः सप्त सवानी सक वा क्विपु शुक्ल पुतिपदादि निगति थ्मात्मकं त्वेन का द्वादशति
 किं तु पुतिपदादि देर्शनं नृय द्वादशति नैव तथैव ताना धी उयो दशमनाम पिसुता द्वादश
 मति॥ ॥ वत्सव श्री सप्त सवयं विवत्सवं दावत्सवानूवत्सवी दत्सवत्सं दापधी विव

ली

कं। निखिलनयव कुवकि तिलक श्रीमद्वल्लाल संनदं वं नृपुं शुद्धा निनवदशमि तगक
 नसागनी ववितः। वविरुगलम शत्र निष्ठा यत्ता दान सागव स्यात्स। कुमलमः उर्षी पवीद
 त्या वेत्सवाः पक्षीति॥ ॥ अथ यल निरूपणं ॥ तत्रा यदी सो वेत्सवादि हि वद्वि न के शुद्ध
 दि किं वद्वि नय वमिति द्दयमं व॥ तद्वाक्यं विष्णुपूजा (६)॥ मासः पृथक् द्दयं नोका द्दो मासा व द्द्वज्जाय
 उभा ज उतु यै वाप्ययनं दं अयनं वव संहि तं। तथा क कटावस्ति तं तानो दकिं लयन मूयते।
 उदवाय लामय कं सक वसुं दिवा क वंति॥ अयनपद श्रग लय थय धा गी र्मुद तां सिद्धमिति
 योगिकमं व द किं लामय नृय द्द किं लामयनं गसनं वव वं व मूयना य लामिति योगे द्द किं लामयना
 कना य लामय द थै योगिक वमिति तं नै वी पय को न वृदि नै व वादिति॥ ॥ अथ कु निरूपणं ॥
 यत्किं श्रि किं थ्मा ववुं गिं ग कि थ्मात्मकं वाचु मास द्दय मा गुं ज उग वद ग किं मूर्खीं शुद्धं मासि मा
 सि अयय्य फाव तं पुती तिसत्री विवयनात्। नव शुद्धं दशम लानि नव मिगुं उषरु नृ निला गुला
 यन वयना यु अयनादि न तं तिथि र्म त तिथि यावत् शान्दी मास सप्त अ गमज उग वदः शुभयं स

मतिः। अनियतता। यत्किञ्चिन्निधायकानुपवर्ज उपायः। किं विद्या ह तन्मन्द। अथि
 कपितक लपदस्य सामे तनिकपवत्तानुपपन्नं। अतः प्रवृत्तयु हावीर्गन अतः समस्त सर्वज्ञ
 दुर्ककर्तव्य। मासविदितमिति सामासिकस्यैव क्वाऽन्तासासार्जिक लोमकं सासिकं वृत्तदिकेसा
 दुयनागकीदृग्मासासार्जिकस्यैव तन्मासिकानां पुनित्वा तन्निधिषु विदितगता गुरुवत्तपन्नित्वा
 मत्तस्यैव कालवशादयतः। नित्तिदं तावद्विषयात्तन्मासिकवधिकतादको ज्ञेयसासनुका
 र्जमित्येव हि अत्राप्युक्तादं न तु सन्मासास्य उवर्तने नियमेन न च तु द्वा द्विदश्या वा सन्मासा ५
 तिकपुसं गदिति॥ अत्राप्युक्तादं न तु सन्मासास्य उवर्तने नियमेन न च तु द्वा द्विदश्या वा सन्मासा ५
 सपत्रमं वंति॥ तद्वत्तपन्न उपायः। किं यत्किञ्चिन्निधायकानुपवर्ज उपायः। किं विद्या ह तन्मन्द। अथि
 मूदं यैक उपायवत्त उवर्तनादं पुनित्वा सार्जिकस्यैव क्वाऽन्तासासार्जिक लोमकं सासिकं वृत्तदिकेसा
 यैव पुनित्वा सार्जिकस्यैव क्वाऽन्तासासार्जिक लोमकं सासिकं वृत्तदिकेसा

७४

५

वसासजदस्यैव कालवशादयतः। नित्तिदं तावद्विषयात्तन्मासिकवधिकतादको ज्ञेयसासनुका
 र्जमित्येव हि अत्राप्युक्तादं न तु सन्मासास्य उवर्तने नियमेन न च तु द्वा द्विदश्या वा सन्मासा ५
 तिकपुसं गदिति॥ अत्राप्युक्तादं न तु सन्मासास्य उवर्तने नियमेन न च तु द्वा द्विदश्या वा सन्मासा ५
 सपत्रमं वंति॥ तद्वत्तपन्न उपायः। किं यत्किञ्चिन्निधायकानुपवर्ज उपायः। किं विद्या ह तन्मन्द। अथि
 मूदं यैक उपायवत्त उवर्तनादं पुनित्वा सार्जिकस्यैव क्वाऽन्तासासार्जिक लोमकं सासिकं वृत्तदिकेसा
 यैव पुनित्वा सार्जिकस्यैव क्वाऽन्तासासार्जिक लोमकं सासिकं वृत्तदिकेसा

[illegible][illegible]

श्री ४

कृद्वयं नाकं नृपि अयना वक्रं कं (गो) सो वसा सपत्रियाय कसा नृ अग नुव दो मा सा वरुं ऊव उ
विलपि (गो) ए उ उ सवपय विवाव कसा नृ नउ ग किं गरु क मि ति य रु प द नु मा सा दू मूरु अ
ग नुव प रु मूल त्वा न पु ति य द ४ प क ति त्वा मू य य नृ । तद वं मूरु स्य वा नु स्या दू नु कृ पु ति य
दा दि यो (गो) मा स नृ क पु पु ति य दा दि द नृ नृ व प रु प द मूरु सो व सा व न न न क गो वी (गो) ए
मा सा ना म दू (गो) दी य था प का द यो ६ रि य दू वा नृ त्वा दि (गो) रि ल ४ ग था व र्क व दू रु पु व
६ द ४ ह य नृ म न उ डी व रु प रु म पि व दू नि शु वि व र्क नृ त्वा दो सा व नं ग था ग नृ थु रि त य
सा दू प रु य रु दि न दू य । दि वे स्या दू मं रा (गो) य न र्क को र धि मा स क र्क नि शा नि ल व व नं सो
नृ य रु प द ६ ४ नृ अ उ व सो व रु स व स्या नं मा न न ग रि न न उ । पु का द ४ मि ति वि नृ नृ दि ना
नि रु गु न न द नं नि ॥ वि भू व मा नृ नृ ॥ सो व स म स रा नृ व र्क का द ४ मि ति वि दू धा पि मा स य
ग स्य मूरु म मा ग ता ग प द म पि सो व दू मा स व न मि ति नि नृ य नं ॥ अ नो नृ थ मि दू मा स
प रु द यो ना क नृ त्वा स्य न ग किं गरु क र्क (गो) व वा द ति नृ थ मा स ग दू र्क नृ नृ

साव यो ग वा नृ नृ य पु यो (गो) या धि च उ रु यी वि भू ध मा नृ नृ क य था । व नु मा क रु
य न स रु मूरु अ नं । स नि क र्क दि था व स्य स नि क र्क म था व नृ व रु क र्क यो व र्क म स य नृ नृ त्वा
य नं । सा व नं य नृ थ मा सि रि नृ सूरु यो द यो ४ स ग ४ ४ द ति य वा नि नृ (गो) न सो व मा स ४ पु को
त ४ स व र्क य वि व र्क य ना रु गु नृ ति यो य नं ॥ अ उ स नि क र्क दि ति स नि क र्क य द नं सा मी य ल रु ल
या नृ कृ पु ति य दा व रु द यो ल अ नं ॥ वा नु ४ नृ का दि द नृ नृ सा व नं रुं ग्गा दि ने ॥ पु क र्क (गो)
व वि यो व र्क ल मा स ४ स रु क र्क नृ त्वा दि पु मा ले ४ नृ कृ पु ति य दा दि त्वा पु ती य नं त दं क मूल त्वा
द्य वा नृ । त ४ नृ कृ पु ति य दा य मा वा स्या नृ रि ग किं थ मा स क र्क रि ग द र्क वा ग व रुि नृ त्वा दि त्वा
क वा रि नृ ग वा रुि नृ त्वा स व र्क य वि व र्क व रुि नृ त्वा व र्क उ व रु नृ स व नि क य पु व य व रु यो (गो)
या ध य नृ ति य र्क जा दि व न । स व र्क व सा स ग द स्य यो गि क र्क न नृ त्वा त्वा क र्क वा नु नृ व मूरु नृ ग
अ नृ य नं (वा नु ४ नृ का दि द नृ नृ सा व नं रुं ग्गा दि ने ॥ पु क र्क (गो) व वि यो व र्क ल मा स रु
रु क र्क ४ ग था । स व र्क य वि व र्क य ना रु गु नृ ति यो य नं ॥ नृ त्वा दी नी न मा स ग व पु यो ग नि य म क

गी॥

तं मानावा (सोत्र वा) किन्तु विवादात्सक्यं पू सोर्वमानं पुत्राय तं । यार्ध (लाभं) एकाग्रं वा नु मि
विं गथादिकं । तथा । आदिकं पितृ कृतं व मास शुभं नु स मास ॥ सोर्व विवादादोक्तं ॥ सोर्व यद्वा दो
सावनां सतः ॥ गथा न क उ स ग ल्प य ना निर्वं दो मा नि न क मा ॥ १ ॥ एतमर्कं नेत्वा दि ध्य नु (गोत्र सा
वन ना क उ स सा ॥ १ ॥ व न क मा नि वि वि दितानि । त ग की द श म क ॥ १ ॥ आ की कायी त स्व नृ प दो ध क त्वे
मं व शु क य य दि पु ति प दा द श म क ॥ १ ॥ यो मा स शु नु स म न्नी क्ति या पु य यः स व नु स व द्वा रै र क त्वे
य स मा य त्वा नु ॥ १ ॥ नु र्वं स म्प स्य क रा गि का ग व द्दि नो य श्री नु स म्प क्ति या पु य यः ॥ स सो व ॥ १ ॥ नु र्वं स ॥ १ ॥
व ने ॥ पु त म्प ॥ १ ॥ न्दि न स म्प स म्प क र व द्दि नो य नि य नि ति ॥ १ ॥ द दो वा ग लि त द व द्दि नो य ॥ १ ॥ क्ति या
पु य यः ॥ स मा व न ॥ १ ॥ नु र्वं ना क ॥ १ ॥ यो पि । त त ॥ १ ॥ स व नु क मा स म न्नी य त स्य वा नु स्या दि व मं व द्दि (ध र्मः
स व मा स नृ प क्ति या पु य यं स व नु यो गि क ॥ १ ॥ य क ॥ १ ॥ यो प म्प त्वा दि व द नृ ग ग पु यो ॥ १ ॥ यो प म्प
ध क मा ना रा वा त ॥ १ ॥ नु गि य नु दू यं तं मा स दि ॥ १ ॥ पु की र्ति त ॥ १ ॥ अ गि यो सो म ॥ १ ॥ स म्प
पितृ सो म को वि द्वा दि लघु द्वा वि ता दि व र ना ॥ १ ॥ ॥ पु ति प दा दि द श म क नि धि य वि वि
मा

या पु य य ॥ १ ॥ अ नृ ग पु यो ॥ १ ॥ न मा ॥ १ ॥ क म्प दा दो र्ध क उ प द व न । त त ॥ १ ॥ सो वा दि क्ति या पु य
य त क ल मा स ॥ १ ॥ य क दू यं नो क ॥ १ ॥ न्वा द लु न पु यो गि यो म क त्व म्प क य क ॥ १ ॥ नु र्वं व थ का वा
वि वि पु क व ल दं व द्दि स्त्री का व ॥ १ ॥ अ त पु व मे ल मा सा धि मा स प दा नि स व नु वा नु प ना ल्प व ।
ग्री य नु दू यं तं ॥ १ ॥ न द पि म ल मा सो प यो गि मा स स व नृ प दो ध क मं व न नु पु यो ॥ १ ॥ यो प म्प वि वि न
क ॥ १ ॥ अ त पु व त द न क व मं व त म ति क म्प त्वा दि ना म ल मा स स व नृ प म्प क ॥ १ ॥ अ त स्य वा नु र्वं वा यो य ॥ १ ॥
ति वा र्थ ॥ १ ॥ स त्रि क र्ण दि धा व र्थ त्वा दि ना म न्वा द लं नो यो धि वि वि व व न्ने र्व मा स स व नु क्ति या र्थ
प तं त स्य वा नु म ति धा न ॥ १ ॥ वि ष य म्प द मं व ति वा र्थ ॥ १ ॥ वा नु ॥ १ ॥ न न्ने न्ने नु स म्प म्पि क्ति या च मा य
य य क ॥ १ ॥ न वा नुः कि नु स त्रि क र्ण दि त द नो व द्दि न पु व वा नु वा द द वा व वि ष य ॥ १ ॥ य वि ष य म्प
ल का वा दि ति य ॥ १ ॥ क वि द्वा नु दि प द मा स वि ॥ १ ॥ य त यो ग यो ॥ १ ॥ त त्रि नृ द ल क ल यो म र्ण नु ल
लं ने सो वा दि मा स वा व र्थ ना य प र्थी स रं सो दि व दि ति त त्व ॥ १ ॥ क श्री मा स वि ॥ १ ॥ य प वा ली का र्ति
क दि प दा नी द श म क ॥ १ ॥ व म्प र्थ त्वं स स वा दि सि द्ध त्वं न मा स स व स्या पि द श म क ॥ १ ॥ व म्प र्थ त्वं सो

ॐ

चित्तं न भवेत् सो न दा विनि अग सिद्ध ज उ प दी द श न क मा स द य मा गं म स्व मि नि व स का दि श य न ण
पित उ व श कि १ ज उ वि (ज सा ल मं व व स न क ता त अ ग पु व रा गु वि व स न क व व व श म षो नू ओ ता
म धु मा धे वो । अं वा वा टा व उ गु व्वा व उ क य गु वि स मा । प उ व श व ल णा डा खो न नो न र स
सं कि नो । मा सो ग व दि यो डो उ ता वा व य डि का रि को । स र प स र स्यो दं स नी मा ग र यो षो उ ता
मा । त प स य स्यो नि नि व सो मा सो मा च रु णु (सो । अ थ द श न क मा स वा व क म धु मा धे वा दि ना
सा मा ना धि क न ल्प द स नो दि य दाना म पि द श न क न व श कि नि श्ची य तं । न उ ता व व व स न क
वा व स्या व र तं । व स नी वे वा स ए स प उ व क न य उ तं । वा प्र दी रु य य उ तं त स्मा द स न
पु व स्या त । मा सो रु णु दी यो दु मा सी रु व ति । त स्मा न व प र क ता ग उ दं वा ज वि उ उ प स मा
न य नी ल ग व मं ध पु क व ल क्क श म य थ गु गो यो दु मा स्य नं व स न क प द पु थ ग म त त दि श्री धं
न रा गु वि स तं कृ ष्ण ता ग क थ श्री न गु श कि नि रु णु नि मं व व स नं वे वा स (सो ६ मी ना
धी तं ति गु ल्पा धा न का ल दै न स व नो वि दि त १ सा व श स्या सा वा स्या या वा दि ल्प स व द्या

मा द धी ग नू नि गु ल्प क वं व स री ग म वा दि ली न क उ य क मा स वा स्या यी वे श म ष प द पु थ ग म त गु
यं क वा क्क मा वा नु वे श रं वि व स का दि पु थ ग म (श्री त प दि नि न व त थ पि उ ल्प व ल गु नि लो को व
त थ दि वे य त स द श मं ध स व स नं त क म अ य स्या व र तं क वा ति व स्या द स न क पु व त के म स्या त ।
अ थ व स न क शं कि मू ल्यो (जो लो वा । ल्प ग र मा सो रु णु दी त्या दि अ ग पु व स र व लो गु वि लो गु
ति द यो थ म व धा य व स न (श्री उ वं श वा दि ला दि ना द श न क पु व वे उ दि य द वा यो मा स द य त मं
व व स का दि य दानां श कि नि श्ची य तं ति । अ ग पु व स म धु मा धे व (श्री ला दि गु गो सो वं म धु मा धे व
दो व स न क प द पु थो (ग स ल्प पि न सो व मा स द य प व ल यो दु मा स्य न स्य सो व स्य व मा स स्या ये पु व
श वा दि य द व ल्प वा दि ति । अ थ सो व यो दु मा स्य नं पि मा स ये उ दि य थो ग वि (ज वा त क थं द श न क
पु व श कं नि ल्प य १ म थ स र ता प व ल । का रि क स्य उ मा स स्य पु व इ य थ मं रु नि । अ ना दा र दि वा वा य
म वि श क म व क ता त द र्श उ उ यो द श मं स म वं ग त स नी म व उ द श मं नि श्या यी उ नि व क मा ग
धं कु मा दि ति ॥ अ उ का रि क स्य पु थ मं रु नि उ यो द श मं सो व वि ना स र वा ग सो व पु व का रि क य

दनिष्ठीयों। तथातपस्यस्यवित्तादिशुभावापि अथेनददगयनीदं वानीदिनमित्यपसीदावा।
 सोऽनुवमासिमायादिपय्ययिगयस्यस्योदियदस्ययोजउनीयतं। तथाचोर्लुमास्यनं वद। म
 मायादिपदपुष्पागादश्वनं। यथावुसपूवाला। वुसलाकं तपस्युपावितरां संहितं वनी। योषं क
 पूरुकायां उऽमकं। मृदुसु। मरुनमिति॥ अथप्रागुदायय्यां उहुं कपू। मृमीयोषीतिवदनायो
 लुमास्यनीमासः॥ त्वय्यतं योषंति। नवयोर्लुमास्य उहुं यास्यमास्यकासेवंयमकंतिवाय्य
 नेन्द्राउपथमापोनुऽमकं। सनय्यंयं लिगुन। वुसपूवाला। नवपुथमास्यकायां। मकोपदंमातु।
 ती। तथाग्वय्युक्ता। कपू। मृमीयुथादश्वमिमास्यवा। प्रावरेतोममऽयुतानुधिगु। अथयस्यनयां।
 विसर्जयतिमानुषीकृतामृनीस्वर्कपुवमिति॥ अनंनपिपोष्यपद्राउहुं कपूगुथादशीअऽव
 यजितिवदनायोर्लुमास्यनीमासः॥ त्वय्यतं। तथाग्वय्युक्ता। योष्यपद्रात। तीतायी मद्यायुकाग
 यादशी०। प्राप्यमृदुहिकर्कवी मधूनापायसंनयंति। अगोय्यतं सार्वे। मरुस्यमावासा
 वति। यात्रीदिवाही वय्यतं हि। शुतादश्वनं मासं वे। मयपदशकि० पुनीयतं। तथाहिस्वय

यदुससायऽयवऽसन्निर्कषऽसा। मावासायति। मरुलिलेनामावासायलकाहीकतपवऽसन्निक
 कवाश्ववस्तानं। दिनीनकगुस्यववयकाग्यतात॥ वेयोर्कमावासायीवे। मयपदपुष्पागातुव
 गवविसंको। नववकिंनंदश्वनका। नंदवे। मरुपदशकि। निष्ठीयतं। नववैश्वदिपदाना। मपिअ
 गपुववुसगुपे० मयगवविसंको। निऽगिमासंरुवगियउतवुर्गु। नववैश्वदिपदाना। मपिअ
 नंति। कि० प्र०। नुडागीयगुदुयतं मासादिसपुकीकिग। अग्रीधामो मृमीमयसमाकोपितं सो
 मकाविलनंनदश्वनीमासः॥ त्वय्यतं। मासविदुं उकं कवी योषमायाप्रमं वदि। त्वय्यतं ननय्यु
 वीतं नयोषमायादिसेह्लादश्वनं मासविदुं मिति वदनादश्वनीमासऽयोषमायादिवाय्यः॥ त्वय्य
 तातऽसज्जदवनीया। रुवतीतिदोपदं गिकीमायादिपदशकिः॥ असादवववनातुवंदापिवस्वाता
 पुनियदकी। नूमीयतं। अयवमद्यानदगुय्यक। योर्लुमासीयागस्यवकिवावातमायादिपदं वृदि
 नं वंति। यउवउवय्यकी दंमकं॥ ति तथागुवदंमनिकाना। नहोतिइविदिकंमं। दयाथंम
 वृत्तानां वरुस्वकगुसंवसेदिनिमास्यउहुं यं गीसादिपपुष्पागादश्वनं मा। उरुत्वाथलक

एषावर्तनीयादाहुर्नो गदु नीतिवत् न यवैपरीत्यं वसन्तः प्रवृत्तः सखावित्यादि रागु विवचनं प्रागु
 कय क्वासासद्वयं पु वज क्वा वध न लानाथ के ल्यने (मेव वा द्वासासद्वयं कि मास सवदु स्रथं ल
 के (लाति) ॥ अथाधिसा सनि ॥ गत्स वयसासु ॥ ति ॥ शम् ॥ न विहलं चित्तमासं शुभं भूया
 मासतिसु यथा गय हि ति के म् उरु वसासिका वयं ॥ न विहलं चित्तं क्वा मिष्ठं ने स्रथं लानि
 काने ल्यथ ॥ यानु श्वासास ॥ ३३ क पुनियदादि वें वें ति प्रागु के ॥ के विहलं चित्तं क्वा मिष्ठं ने स्रथं लानि
 ॥ ति ॥ ३३ क्वा दिव वनं व कायात्ति वी धान ॥ गथी असावासाद्वयं यगु विसं का नि वडि ग मिष्ठ
 न क वयनं व मलमा सल के लाप वं व पुनियदा मा वा स्रं न विसं का नि वडि ग ॥ ल्यन रि धाय ॥ १९
 यगु मा स्रं ॥ सा वासाद्वयं व विसं का नि वडि ग मिष्ठ रि धित ता वा द्वा विधि पुती ग वसा वासादि स्र
 दत्त उवसासा न शु क पुनियदादि वि ति वा वी द श्म दि लें मास स्रप वद श्मि वृ लु स स मा व
 के लें ना यर स्रग दादि ता रा वा द मा वा सल वृ स्रं ला व स्रं वं व ल्मा सानी नो पय कि असा वा
 साद्वय मि लो दं श्म य मथ ॥ असा वासा के वर्य यदि व विसं का न्ना क्रिया रूप मा वडि ग

७११

१९

गदा मलमास ॥ तदे वा न क क ला वर्य न नि स्रं न व वि ल्म शु क प दा दं र्ज य न ल व ति (अ तो द
 ल्ये ग पि ता ति वि धु र्थ ता ॥ त सा द्वा क्वा प दा दि वें व वा डी मा स उ वें स ति असा वासा के दि धो ल्य
 ना व सा वासाद्वय स्र व वि क्रि या वडि ग ता रा वा दं के ना नि स्रं व वि ल्म वा नु मा स लं य न पि सल
 मा सा रा वा प के ॥ न वें स्र प के ॥ न वि लं चित्तं स्रा पि ॥ ग ता द श व वि क्रि या वडि ग लें स्रं व वि व कि
 त ता दि ति ॥ असा वासाद्वयं यगु ल्या दि ना या नु मा स म (॥ वा श्म न व म धो ग रा वा दं व लं य
 न पु ती गं ॥ अ न्ना थ मा स स्र व वि लं य नं पूर्व मा सा वासा यो क्रि या वडि ग ता रि धा ना ॥ नो वि ल्मा क
 सा सा स्र व दि रु वा ग अ ग पु व उ के ना (मे द श्म दि मा ग ति ॥ ग थ मि थु न स्रं य दा रा नू व सा वासा
 द्वयं स्र (अ दि ला दो अ ग मा वासा यो क्रि या म पि सल मा स ता पु ती य के ॥ ति ॥ के य व के द य
 विसं का नि यदि न स्रा त सि ता सि त ल्य नें ने सि त क्वा त या अ सि त पि वा श्म न व यो ग न य र ल
 प व ल म व स्रं का नि य द स्र ति कि ॥ पु र्व कि श्री मल मा स ता रा वें पि य व स्र क क्वा दि न विसं का
 ल्य व डि न लें न दि ना या द्वा दि पु स्रं ॥ ति अ तो ॥ ग ल्या नो रि धा व द श्मि वृ पूर्व मा स स मा प क

१४

[illegible]

शखादियदानीं मुखालसिताइ सु शिखी अवमप्यरुवषकं शुक्रपुदियदादि उतायां सुय्यलीधुग
 लाः मावास्यायी व शिकसं कोनोपु वृपुतिपद ४ क न्यासु व कोलवृत्तं नपवपुतिपद ४ व नं व
 स्त्रिया व वृत्तं न उलासु व वृत्तं नपवपुतिपद ४ अ समनानं
 वृत्तयसीका नो व वृत्तं नपवपुतिपद ४ अ समनानं
 पूर्वमासं पुतिपदाद्य तर्कं एता न्ये संकुसं सुलमासं उरु वस्यवाजिस्तु व वृत्तं नपवपुतिपद ४
 गुपुका मासत्वाहा व नुवायधेनं गियस्कि श्रि दंतत् अउवमलमासवि (ग) वा (स) लं गतिव
 कान्दु वं ६ क सो (ध) य। अस्मिन् या धि मासं संरु व काला नै व क मी नै क र्क यी। व विहा लं धि मा १५
 सश्रु ३ खातामलिमुवध तगुयद्विदिती क मी उरु वं मासिका व यं ७। व दनिका ल स मासं
 कालविदं धि कं निंदं तगु वि (अ) धं धा म अ ग व श्र कादि (ध) नि ति ग ध य नि निष्ठ व य ना ग
 उरु वं मासिका व यं दि न्य स्या म स थ ३। व ४ खाद्य लं यं न यद्विदिती क मी तत्तु व स्य मल मास लं
 नतगु का यी कि नू र वं व ग म्य व वं शखादितादिगि। पय मा वा स्या ३। ३ पुं ता मासिके गुं डा

३४

१५

दिव मासिमासि विदिती त नल मासं पिक र्क यी पूर्व मास मां रु व गाला हात् अतदं व हान्य ग व श्र
 कादि (ध) नि ति। अत उ व त दा उ मा द (अ) गु ३ क र्क यी त द धि कं रु वं ७। तथ श कं ना प्य व य कं ना
 ति कु मं ७। मासिमासि वं न न सि ति गु ति नि ला दि। नि ल नै मि ति कं क र्क यी न्य म त ३ स म लि मु वं। ता
 थ स्ना नं ग ड क यी पुं ता गु ३ त (ध) व वं। तगु नि ल्य म रु व द ४ किय मा ६ संध्या यं व म हा य ह्ना दि
 नै मि ति कं गु ३ का दि ती थ स्ना न मा व र्क म ल मा स नो व र्क ती थ स्ना न म पि लो डं त ल गं ३। ग ड क
 या य न वृ म य र्वा (अ) का अ धि मा सं क र्क यी द ग्ग ३ स पा द ग्ग यी विं ग ति दि न या ता स र्क कं
 ह स्ना न क र्क यी स र्क यी रु वा त ग ड क यी र्वा दं ३ वृ या अ मा वा स्या य वा क र्क यी वा। व न स्या ति
 ग ते मा म क र्क यी यो प्रा धी र्वा रु वं ७। ग ड क यी ति मा धी का पि रु वं द क म र्क यी मि ति रु वि श्या पू व
 व व र्क ना ॥ ॥ श्रु ति नो लु। प वा श व ३ अ ग्ग (ध) य पु ति क्क यी य र्क दान वृ ता दि व। दं व वृ त व
 यो स र्क यी वृ ता क व र्क म र्क यी ३। ग ल्य म रि धं क श्री म ल मा सं वि व र्क यं ग य र्क दान वृ ता नि यं
 प य पि य द्वा पि वृ ता मा र्क नि धि र्क तथ पि य द्वा र्क मा यो धू लं य न वि दि ती त ल्य व र्क व उ क न्या

३११

यमूनतुं लाघवात् यदुसायाश्चैरवनविहितं किंतु पुनिमासं वत नलमासं पिकर्तुं कामं
 व निवृत्तकाशत जेतु पुनरुक्ताया बुताधिकारं निवृत्तदस्य । मासं मलिमुयं पौर्वं यजं
 दं वीं सज्जकीनी । किंतु नोप्रायेन नकाप्यमित्याहुगवाधिवेन्ति । उपायेन पुतिष्ठा । पुना
 दसायाधिवृत्तमावसोमलमासं नककर्तुं काशत इकं काश्वं धेना ॥ अत्रैकमदिवगता यदि
 जीवरात्रु लुक्ता स्तुगो ॥ सववरेकगुत्तु सिद्धं । नावस्यतं पुनविवाहगद पुतिष्ठा शोवादि क
 मसिमासो गमनश्रीधीने विनि ॥ अत्र वेषात्सर्गोदीनी ॥ १८ ॥ अदिकतमानिषधद (जोवाकदि
 तीयदिनविदितामपि वेषात्सर्गोमलमासं नककर्तुं विनिषात । केमिषु ॥ १९ ॥ कादसा दं वेषासं ॥ २० ॥
 विषकं याद्रिकं गथा । वेषात्सर्गोपुक्त्वा वीत पनसाइक कालिक ॥ सलपुनवचनात् ॥ सपिपु
 कव (२१) कवकिजमान वेषात्सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ पुकादसा ददिविदितां उमलमा
 सादविपिकार्यमित्याहुगनपनसाइक कालिक ॥ सलपुनवचनात् ॥ सपिपु
 वेषात्सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ अत्रैकमदिवगता यदि जीवरात्रु लुक्ता स्तुगो ॥ सववरेकगुत्तु सिद्धं । नावस्यतं पुनविवाहगद पुतिष्ठा शोवादि क

३१२

पपको सामान्यात् ॥ पुनर्वसु सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ सलपुनवचनात् ॥ सपिपु
 व (२२) कव सौवगत्तु वेषात्सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ पुकादसा ददिविदितां उमलमा
 काशात् सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ पुनर्वसु सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ सलपुनवचनात् ॥ सपिपु
 य ॥ अतोहीमपवक्रमं । अधिमासं कविवाहं यागी पुजीत धापनयनादिकु मन्त्रिसावकाशी ।
 मर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ पुनर्वसु सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ सलपुनवचनात् ॥ सपिपु
 निवृत्तकाशीतक मेषमपिनिषधार्थ ॥ २३ ॥ अत्रैकमदिवगता यदि जीवरात्रु लुक्ता स्तुगो ॥ सववरेकगुत्तु सिद्धं । नावस्यतं पुनविवाहगद पुतिष्ठा शोवादि क
 मलमासं पिकर्तुं कामा ॥ २४ ॥ अत्रैकमदिवगता यदि जीवरात्रु लुक्ता स्तुगो ॥ सववरेकगुत्तु सिद्धं । नावस्यतं पुनविवाहगद पुतिष्ठा शोवादि क
 दर्शकोर्तुमासोपि लुपिपुय ॥ २५ ॥ अत्रैकमदिवगता यदि जीवरात्रु लुक्ता स्तुगो ॥ सववरेकगुत्तु सिद्धं । नावस्यतं पुनविवाहगद पुतिष्ठा शोवादि क
 द्विकं रुवं ॥ २६ ॥ अत्रैकमदिवगता यदि जीवरात्रु लुक्ता स्तुगो ॥ सववरेकगुत्तु सिद्धं । नावस्यतं पुनविवाहगद पुतिष्ठा शोवादि क
 कं लार्थ ॥ २७ ॥ अत्रैकमदिवगता यदि जीवरात्रु लुक्ता स्तुगो ॥ सववरेकगुत्तु सिद्धं । नावस्यतं पुनविवाहगद पुतिष्ठा शोवादि क
 धादुं मलमासं नककर्तुं मित्याहुगनपनसाइक कालिक ॥ पुनर्वसु सर्गोपुक्त्वा वीत कालिक ॥ सलपुनवचनात् ॥ सपिपु

[illegible][illegible]

त्वमिति वाच्यं अथ मयि मलमासगतस्य वर्षकर्म वक्ष्यमासं उक्तं सुववा ननु मुकु पुनिय
 दादिदमं निसमासखं गु रे विदोय उलाह नववदिनको लसो वेलाघवर्ष कल्पनेति अतनु
 वसलमासं कुसं प्राप्य वासना नियमं यदि। उना रि। धयो मासी सो कथं क्वं नियाहिका ॥
 मस्मिन्वा नंगं गौनो विपक्तिः २ सा द्विज मनी। तं वीगते वक क्वोपि लु दानी दक क्रिया ॥
 गथा माधवी मसं गुहं। वर्षे वर्षे उय कुहं मगा दं ग मलि मुव। क्व यी हुत लुमी गाना मन्त्र
 धा तुन गह्वं २। सा मा गयी वचनमिति ॥ अता वता वु प्र गु यो क मं व माद्या दि यद पुव नि नि
 ७३। व नि मिलि पि सु दीय का वं ति। यतु अधि मासं न क र्क यः ३ गुहं स म्ब ल वा दिकं तथा वर्षे १०
 वर्षे उय कुहं मगा पि गौ म गा रु नि। मलमासं पि क र्क यी वा यु स्य वये न यथा ॥ २० ला दि
 गद पि य दि स म लं त दौ क विष यं य दा (जे रये गि ती सा म्ब ल विक ३५ ३ म (जे वा नं मलमा
 सं क र्क यी ग या प ग ति त दा म ल मा सं पि का यी मि त्वं यं य व श्री अतनु व ज घा म जी। गु यी रु
 गे न द ग वं या ति धिः पु ति य द गे। सा ति धि स स क र्क यी न त न्मो वे क दा च नं ल उ मा ल मा स

पा ग पि ना न्म ल कं। अ न्म थ वे य थानि। न व वा ध का स खं स गि ना न्म ल व त्म थ ३। अ न्म थ (जे
 वा नं द वा अ स प कि नू य वि द्या प कि धि (जे वा नं व ना या व पि गु ह पु रं (जे ली पो वा अ य प्र गं ति
 वा यी वि द्य क म नि वृ द स म्ब ल वे वा सी रु वा द (जे नि धि द्वा द न्म उ वा नू खाने सो वि द्या त म ल मा
 स ग गं उ उ क रं मा सि उ धि य थ म दि न नू य क ल स्या स र वं नि व व का ग त या पु ति पु स व वि ष
 य त या क र (दा दा क र वा त न ल न्मो वे क दा च नं ल स ग दि ष य ली वि द्या त त दं व ज पा ट वा दि (जे
 वा दि ना य गि ती सा म्ब ल विक ३५ ३ म (जे वा नं मलमासं न का यी ० कि लु म ल मा सा वा क क र्क
 का द (जे मं वं ति क र्क मा धि ली री वि न्म मं वं ति य तु द ग द ना दि ष नू ल क र्क ३ य उ य पि य गं दि ष ॥
 उ पा क र्क मि ली त स (जे त क र्क यी व वा दि त न्ति ग प्र प पि नि ष न्म मा व व नं प ठि ता डी म त वा द
 नं न द ग र वा उ न्म ति थू क द य ३ मो व उ व का यी ० ल कं। त द ना क रं म ल मा स स य र्क वा दि य द
 वा य वा रा वं न ग ग द ग र वा दी ना म र्क र वा न। अ र्क का नी पो लु मा स्य क मा स नं व स मू ले वृ ह कि
 वृ व ने वि धा ना त उ पा क र्क (दा पि रं प्रा प्यं गु व द स्या नं यो लु मा स्या दि नं दं य ० ला दि व य नं न व

गोमोक्षानां यथैव दत्तं स्मृतां गतिं ज्ञाता तदुक्तं वा तदिदं वीर्यं बालवयस्यैव इत्युक्तं तावत्कालं कलानी
 पूज्यं तेषां कं तन्मेष उक्तं ज्ञात्वा दिव्यं कालं सत्तमसं नै दिवा विष्णु पद्मा वैद्यं दिवा विष्णु पद्मा
 तिसृकं सन्त उमानादौ मंत्रं यथा दत्तं दत्तं पुण्यं कालादौ ॥ १ ॥ अद्वैतं न मानमिति ज्ञानं
 ॥ १ ॥ ननु वयं न ॥ तदुक्तं । मानादौ सात्त्विकं यत्पुण्यं सर्वं वीर्यं । संपूर्णं वा दत्तं वा तं च उद
 यत्तमं यं विद्या अर्द्धं वा तं च संपूर्णं दिवा पुण्यं सनागरी । संपूर्णं तु रूपां कं मिति तिस्र
 कं यत्तं दत्तं । एतत्किं तदुक्तं किं तं दिवं तिस्रं वत् । पुनश्च यानि ज्ञानिका दिवा विष्णु वत्
 सत्तलीति विषयः । अविष्णुः सत्तलीति दत्तं अर्द्धं वा तात्पर्यं संपूर्णं लघुत्वाद्वा सत्तं वसन्ता २०
 द्वयं पुण्यमित्यर्थं न यथा तं । संपूर्णं द्वे वा तं संपूर्णं लघुत्वाद्वा सत्तं वसन्ता २०
 अयं पुण्यं द्वे वा तं संपूर्णं लघुत्वाद्वा सत्तं वसन्ता २०
 यं विद्यानादौ किं तं कदिनस्य दिनं यथा वदितुं न तात्पर्यं वत् ॥ संपूर्णं को यत्तं सति दिनं पू
 ण्यमित्युक्तं । अतः पुनश्च विद्यादिपुण्यं मानादौ मित्यर्थः । तद्वानागरी अनागरी स

कानि संपूर्णं विद्यादनागरी तं न पूर्वदिनं यवमानादौ पुण्यमित्युक्तं तदं वसं कानं वनागतं तं संपूर्णं
 ॥ १ ॥ उदयं त्रितितु रूपां दिनं यथा मानादौ मित्यर्थः । अतिरिक्तं द्वे वा तात्पर्यं संपूर्णं कानि संपूर्णं दत्तं
 उदयं विद्यानादौ पुण्यमित्यर्थः । पुनश्च पुण्यं कालं विदितं निषिद्धं कर्म यथा सत्तं वसन्ता २०
 दिका यथा लीत्यर्थः । संपूर्णं द्वे वा तं संपूर्णं लघुत्वाद्वा सत्तं वसन्ता २०
 किं न त्रितितु रूपां तदुक्तं । अदो पुण्यं विद्यानादौ मित्यर्थः । अतिरिक्तं द्वे वा तात्पर्यं संपूर्णं कानि संपूर्णं दत्तं
 उदयं त्रितितु रूपां दिनं यथा मानादौ मित्यर्थः । अतिरिक्तं द्वे वा तात्पर्यं संपूर्णं कानि संपूर्णं दत्तं
 द्वे मंत्रं यथा न यवमानादौ पुण्यमित्युक्तं तदं वसं कानं वनागतं तं संपूर्णं
 उदयं विद्यानादौ पुण्यमित्यर्थः । पुनश्च पुण्यं कालं विदितं निषिद्धं कर्म यथा सत्तं वसन्ता २०
 अर्द्धं वा तं वसन्ता २० दिवादि । पुनश्च दत्तं मानादौ मित्यर्थः । तद्वानागरी अनागरी स
 संपूर्णं संपूर्णं कालं । त्रितितु रूपां सत्तं न वदितुं न तात्पर्यं संपूर्णं कानि संपूर्णं दत्तं

यं आषाढी कार्तिकी माघी वैशाखी पूर्णिमा सत्रह मसानादिक मित्यर्थः अयमेव विषयं वैवयः
 आषाढी पूर्णिमा जलं। गनी। मानस्य वषादं कृतं सत्तमा प्रयात्। तथा यामं दू द्विषं गता पञ्च
 कुपुत्रं धौम्यं। नमं कर्षं सरुडा च। सवेष्टु वपुर्वेष्टं ॥ आरु कर्षुमा सृजान्ता पञ्चोदग्भी
 रद्विदग्भी आर्धे वासवं। नवी उयं सोनवर्तु नापि का वं। योजयं ॥ संपा ता श्री गणोदग्भी
 यक्रान्तं नवमी तिथौ। सफ मी न विवा नं य स्नानमा मल के स्त्रुडं ॥ तैलं मी सें मथुन श्री पयुषं
 तानि वरुं थें दिति ॥ अगु आर्धे पावुं विधिना कर्षुं। तग ॥ पुरु ति सृजान्ता वय रागादि
 यवुष्ट। विपि तु माव वं कुडु मं का दिष्ट मता रुनि। मत्स्य पूवा ॥ अगु व। अयने दित यं गु ॥ २२
 ई विष्टु वदित यं गभा। सृजान्ति प्रसव्यं विष्टु निर्वय लोद तं। वैभय म्पु गी मायी नवमी
 कार्तिके स्त्रय। आर्धे शुक्ल नु कर्षुं सृजान्ति विधिना नव विति। मनि नाम गू र्थं पपि ता
 सृजान्ति विधिना विष्टु नदि त विधि नं ति गतुं कं न विष्टु कं। मत्रय क सप्त लवं वा विष्टु
 दोन तं राव यार्थिक त्यं तिके वित्। अगु वायवा सी पि पूषा काला व विष्टु नो हा वा गुं अ

३३

२२

यने विष्टु दोयुग वरु दित्यवका अति नुं कं ल विधि मं ति पु तीय गं। निविष्टु मपि मी सृ तलादि
 पूषा काले पुव। अर्धे वा गुं सव्यं मं व सृजान्ति विष्टु वयुषा काले म्पु क ता ॥ वाइ दग्नि सृजान्ति वि
 वाहा ल्य मव दिष्टु। स्नान दानादिकं कृष्य निजि काम्य वृत्तं वरुं लादिना सृजान्ति निमित्त क कला न
 आर्द्धादि म्पु ता वरुं। तदिवा सृजाम लो वं व नाति पु विष्टु पूषा कालानां (गवां द्वय मिति) ॥
 अथ गृह गनि कृष्य ॥ तत्र विष्टु धर्म विष्टुं वाइ पुति दं व वा वरुं। पर्व काले उ संपा कं च डा कं तै ग
 सिम्य सि। तमि क्का या ग ती वरुं। रेनु (गर्क) कदा चने। सृद्धादि म्पु सिम्य दा ग थरा व स वा स्य सि।
 स्नानं दानं तथा उयं हा मं आर्धे स वारुं न। पूषा ॥ काला यै रवि ता नित्ये मं वा स रं पु वं ॥ अगु यय
 वृ काले ति शुव स दो त्या तिक य वं गु द हा म्पु न ग्रा द्वा दि निमित्त ता। अगु पुवं पोर्णु मा स्यं पति
 पत्स (मो) वाइ गुं निज क वरुं ति वा वरुं वरुं नाया वरुं ति ॥ ॥ मार्क (पुम) वाइ गुं वाय दि वा
 त्र्यो दग्नि वाइ महा गुं। अक यं क थि रं पूषा त गाय कं वि (मय) त ॥ स वं वरुं नापि क र्षु वी
 आर्धे वं वाइ दग्नि। अक वरुं ल सुग कुडु य कं (मो) विष्टु दी दिति ॥ वाइ दग्नि दग्नि दि आइ मा

पत्रहनीतिदं वलवयनात् गुह्यकालं हो जननकार्यं । चतुस्रप्रदिवारानीयस्मिन्नुह निरा
 र्गव । गुह्यं तुल्यं वरुते तस्यैव हो जननक्रिया । नायं नैव नागुह्यं वरुते वास्तव्यमयं । याव
 त्स्यान्नादयस्स स्यान्नाग्नीमाकावदं वरुते । मूर्कं दृष्ट्वा उच्यते जीतमानं कृत्वा पत्रहनीति ॥ विष्णु
 स्मृतं ॥ अथोक्तं ॥ अगारुविष्णोर्गोत्रं प्राहो मया । अगारुस्त्वैवमिह लिखितं नागं रुविष्णोर्गो
 त्रं ह । एतान्तेन हो जननिधिर्ह । गतेत्यर्थं लिखितं नागं । अगुसामो अत उच्यते नायागं तस्य
 गुह्यं तस्यैव स क्रियायं जनिगुह्यं । कामधेनू लिखितं वरुते नागं । तस्यैव गुह्यं दिवा तस्यैव
 नैव जीतं चतुस्रं तस्यैव वाचो नैव जीतं तिरुहं । एकं गुणितं तस्यैव लाघवात् । उच्यते २५
 हो वा उच्यते नाग्नीयावैव तस्यैव गुह्यं यदि । मूर्कं दृष्ट्वा उच्यते जीतमानं कृत्वा विधानं नैव
 भातात् पत्रहनीति ॥ अहो वा उच्यते तस्यैव गुह्यं अहो जीतं चतुस्रं वाचो हो जननि
 धि ॥ तदपि गुह्यं लभ्यं पूर्वं मूर्कं दृष्ट्वा लिखितं नागं लिखितं तस्यैव कालं विन्यस्य ॥
 नाया तस्यैव गुह्यं तस्यैव लिखितं वरुते गुह्यं पूर्वं हो जनस्य निधिर्ह तदपि कु म । चतु

तस्यैव गुह्यं उच्यते । अजापत्नं ननु ज्ञाति । तस्मिन्नेव दिने उच्यते । त्रिगुणं शुद्धिं विष्णोर्गोत्रं तिरुहं वरुते
 लिखितं वलवयनात् । अथवा यावत्तं न कामार्थं अहो वा उच्यते हो जनस्य कामार्थं अहो वा उच्यते
 नाग्नीमादित्येन नैव तस्यैव चतुस्रं तस्यैव कालं नैव कालं नाग्नीमादित्येन नैव तस्यैव कालं नाग्नीमादित्येन
 भातात् दिविदं वरुते । भातात्तस्यैव नैव तस्यैव कालं नाग्नीमादित्येन नैव तस्यैव कालं नाग्नीमादित्येन
 दिनैव दिने नैव तस्यैव अथ नैव दिविदं वरुते चतुस्रं तस्यैव गुह्यं तथा । अहो वा उच्यते तस्यैव सव्यं
 यैव पुंस्यं तथा । नित्यं द्यौ वरुते तस्यैव त्रिंशं विष्णोर्गोत्रं तथा । चतुर्कं यो गुह्यं यो वा तस्यैव
 वरुते तस्यैव । अहो वा उच्यते तस्यैव नाग्नीमादित्येन नैव तस्यैव कालं नाग्नीमादित्येन नैव तस्यैव कालं
 यतदि तस्यैव लिखितं वरुते । कामानी विन्यस्य उच्यते नैव पूर्वं नैव कालं वरुते अत उच्यते तस्यैव
 कालं उच्यते तस्यैव उच्यते । यावत्स्यान्नादयस्स स्यान्नाग्नीमाकावदं वरुते लिखितं नैव उच्यते यावधि
 अहो जननिधिं विमूर्कं दृष्ट्वा उच्यते जीतमानं कृत्वा पत्रहनीति । नैव तस्यैव अमूर्कं यो वरुते तस्यैव
 यावत्तस्यैव पत्रहनीति तथा दृष्ट्वा तस्यैव वरुते अथ गुह्यं लिखितं तस्यैव लिखितं द्यौ वरुते

सपत्नं यवै हनीति गुह्यं कदिने अरुः जनमं वपुती यतं । यवै हनीत्यादीनां प्रवृत्ति नरां जनया
 दृक् कतये वसाने नयत्यात् अरुः नवालादिना यत्प्रयुग्मं दिवा नरां कर्षी चन्द्रगुहं । इना
 गात्यगा वरुः नरां नरां कर्षी किं तु दिवे व अरुः वागाद वान्जिह (६) उते वपिदिया पि नरां कर्षी ।
 नाप्राप्तं सूर्यगुहं पूर्वमिलादि पूर्वलिखित वचना ॥ अरुः वागं वृतीतं उ यदा वन्दुगुहं
 सवै ॥ सायं तगु नरुं जीत नउ प्राग्नरां जनमिति वरुः नात्र दीययना (६) पुमं वै वरुः ॥
 संध्या काले यदा वरुः गुसं गलिना कर्षी । तदा दिवा नरां कर्षी सा इवली नृगिगुचिने २५
 गिह वरुः नो तम धा सूर्यगुहं उ नाप्रीयात् पूर्वमास यउष्यं । यनुगुहं उ यामां स्त्रीन
 वा लव द्वा उ वं विने गिह मास यउष्यमिति दिवा यले कर्षी । पुनरुदत्यका समर्थवा लादि
 विषयं । अरुः क मागुवा लादिना उ दिवा नरां कर्षी पुनरु वरुगुहं यनुगुहं लव द्वा गीत्य
 यमाति निराजी नरां कर्षी । अत्यका समर्थन उ वरुगुहं दिवा पि यनुगुहं यामस यउष्य
 सनकं विरा कर्षी । अरुः नउ पूर्व नरां कर्षी मं वपु मज्जि क गुतं । किं तु मर्कं वनकव

७।४

मव अयात् साखा विमूक यो १ मर्कं गलिनि उ जीतय दिन स्थान नहानि (गति) । अरुगुहा सम
 मगुह ददं नरात् । इहू लादि गुह्यं नरां मया दिना मूक यो वरुः गिह पि नरां जनमं विरुद्धं नव नवैक
 गुनि लुत्तं १ मर्कं (धविध क म क वं ला न्य गायि वरुः तन्ति आया द गायि दं नं विवक्ति तमिति
 त सायमदि सिद्धं गालु विषय लं नवा रनिर्कं (धपु वरुं १) अरु उ वया वरु वरुं दिवा रनिर्कमिला
 फा नो समयः ॥ तथ प० नि ॥ मं घमा लादि दा धं लय दिव नुं न दध्यतं । अकल य उ रं का
 लं उ जीत पूर्व क मिति । मरु निग्न वरुं वलं नो कं । मरु निग्न उ विरुं या म धर्मं पुन वरुय
 मिति । पुनरुद पि पुन वरुं सा र्धं पुथ म पुन रीय विमू निरि द्वि न न मू कं मर्कं वा सिनी निरु
 अरु निरु तथ म मरु निगी सा र्धं पुथ मया मा क विमि दु नो गय विजि वरु यना इका ल मित
 यो लुगदि नं उ पवा स पु वप रीदि नं सूर्य विनु म सो द्वा ला ला ही जनं । इहू ला ला प वं दनी
 लादि गुतं १ । मं घा दिना दं नं त गायि नरां जनमिति कं पुनरु द्यहा वा गुहां जनं काम
 मं व । अरु उ क का मना विरुं त गायि नरां जनमिति विरु मं वं ति कश्चि न नरु ले गु व ला न नव

७४।

कमलतुल्यलाभाग्रहलक्षणमिति यावत्कामस्य पूर्वदिनापवासास्यगुरुहादिनेमूकिदशनि
 नकर्वेहाउनविधानाहुदलापवदिनेमूकेनकनतदिनापवासनेकमूलतानूपयत्प्रातिनशु
 तिमूलतुल्यस्वावशककोन्युसालवगो।नेववस्यापिनायथाग।प्रेष्ठमभुरुलकामेनोपिनका
 म्मोहागदीगुयोदलीगुद्धनेवकवीगपुत्रवाने।उपवाससंयसंकाभावउत्तुम्यगुदंतथतिष
 ति।नामावयनाग।अगुत्रजोउनविधिनिष।ओउपयोगदशनिंसमानाधिकवदविषया
 वंवनउपुत्रवनागुविषयोमानासावाग।मूकिददंलादिनातसंयवुकतथाश्रुतिमूकोयप
 वान्नाहाउननकाय्मूकमोहकतहानपश्यात्कमोत्स्ववैमनीतिजातागयवयनाग।गु २४।
 द।(६)वभावा।ओयउत्तुम्यम।ओयमूकोउनन।ओयउत्तुम्य॥तादकं॥गुरुहाभावसा।ओय
 विमूको।ओतिकै।मूतं।तथासम्यक्मिसागुं।उपस्य।ओक्रियाकुमनूति।तथासमनू॥गुरु
 नकीकयवुद्धवाही।महाश्रुतगकं।अगोगुरुहादशनिनकर्वेहावापिसूतकस्यान्वस्यप
 ष्टसमययाकस्यमकाव।ओयोनंलागन्ति।गुरुहादशनिश्चउननेमवलास।ओयनाधिक

कवी।स्नानगु।आदिकंयतिदिवाभावासूतकंमूतकंयवमूतकंवाहदशनि।तावस्यादमुविधि
 योयावन्मूकिवैदश्रुतं।सर्वकामववकुनीसूतकंवाहदशनि।स्नात्वाकमालिकवीतमूतम
 नैविवरुयं॥७॥आदिसूतं॥अगुसूतकमूतकपदप्रमश्रीनयनेमा।लोपयने।अतक
 तादिउना।ओयसापवादन्तिमेषिलाः।अभाउसूतकपदवायाउननसवला।ओययोव
 वसानादिकंवलुतलुहानमागुं।धिकावीनगुद्धादीमूतकंमूतकंयवगुरुहावउत्तुम्ययो॥
 असायीमूत्युसायीमिसापीपापीनविदति।सूतकंमूतकंयवप्रदासाडाहदशनि।स्नानमा
 पुपुदवीततेदागुद्धविदरुयं॥७॥महाउनपविगृहीतवयेनेकमूलकतथोकवयनेसम्या
 नमागुपवगायाउवमकताग।अतउव।सूतकंमूतकंयवनदीमाहाहदशनि।स्नानमापुपु
 कवीगदानगुद्धविदरुयंमिति।अतकंमूताविति।गमी।वाकावत्प्रातिवितमिति।अत
 नित्यस्यकर्म।ओहानि॥कंवलमूतउनना॥नउनेमिदिकीकूद॥कंरुवादि।कथयने
 ति।सामान्यमैमिदिकपुसवस्यापिनेमिदिकवि।ओयववत्तमा।गुयैउउद्धकनातिपनीउ

जीवउद्भूतिनाति । अगुवमकं ४ पूर्व पाकस्य गमिनधिकारयुतातं गुणस्य पकं मूर्ति गलितयकं मि
 ई निष्ठितं लसत्ता पाकस्य गमिनगुणद्विदेवयिगुणः । धिकावोऽप्युदगुव । यदेवासीगतमुद्धा
 गहीमानन (अभयवः) । अकलया उतीकालीक्रियाकायैविवरु (एति) ॥ वृक्षयुग (ए) ॥ दृष्टा साया
 पवद्वि कृत्वा दिगुवे (ए) उज्जैनमां उवदऽनिधैति । गुरु (ए) युगुद्धा मासात्वेनेवकायै
 शययै न (मोमी) धियवउत्तयै गुदं गथा । जमगुद्धा दिडे ४ कायै सुडला उमदेवदीतीति ॥
 गुद्धा यागुपुत्राववा माउव सो वदं वताती नउकाले कामयात्रे मित्रिकं काले कामविले गुने
 मित्रिकपदस्य सागिवद्वे रकत्त कनवगुद्धायां काद्विषयवत्तवावकायनादिति ॥ तार्कयु
 (ए) सूर्यगुरु ४ सूर्यवायं सासं सासगुरु सथा । युजामलिविति ख्यातसुदाया गयुकी कितभा
 अनादा उयदाहा नो ज्वादीया गुदली रुवें ग । तत्काले कोटिगुलितीया (गगुरुलादऽने) व्यास
 ॥ सर्वरुमिसमैदानं सर्वे वाससमाद्विजे ॥ सर्वं गमी समं ताम्यै गुरु (ए) वउत्तयै यो ॥
 न्दी लोके गुली धी कं ववें दऽगु (ए) रुवें । गीमता ययै सैयुफ न्दी कोटिववें दऽगु ॥ दऽगु

७५

२०

कोटपदं लर्थः । सामान्यज्ञानेन यत्काले तद्गुरुदलाकाले गीधनं वक्रगुली ववें दऽगुली । गमी सा
 ने उरु नुगुरुलातं दवकोटिगुलासिनिगुरुलस्राने वासमुदगमया अयिनया ध्रुवने वजो दी वाना
 सि । यनु सूर्यगुरुं ये ववजो दाधान विद्यतं नित्यं दी गपविजिष्ववनात । गुरुलनिमिषकसा
 नगुद्धादि कं उवागावपिकायै । वादुदजनि सीकानि विवादायमयद्विषु । ज्ञानदानादिकं
 कर्म त्रिणि कामावुतं पूरु ॥ तथा ज्ञाने दाने उयः ॥ गुद्धमनर्क वादुदजनि । ज्ञासुवी वागिव
 न्यगु गसागी पवित्रं यं दित्यादि स्मृतं विद्यादि ॥ ॥ अथ सामान्यतिथिषु कर्मा गीरुनि
 ध्रुवै ॥ तत्र प्रतियदादितिथिः । अथ विदितानां देवयिषु कर्मलो मखलु मि (थो) नि ४ गम
 भवानुष्ठानं । यदा उदिनद्वयं विविदिता काले गतिथिः कर्म भोग्यलस्यतं । तदा कुरु कर्मा
 नुष्ठानमिति सी जयं पवस्य वति रुद्धा याने कमु निवचनदर्जनात्कथं निर्लुपः ॥ को धीयने ॥
 अथ यन्नवसविगायी तिथिप्रतिपद्यतं । सातिथिः सकला कं यादनाय यनकर्मसु ॥ गुरुयवि
 जिष्ट ॥ सातिथिस्तदक्षरा उयस्यमस्य दितो ववि ॥ तया कर्मा लिखीत जासवद्वीनकायली

प्रदासं सविता याति विगवसा मया सतं । तिथिं तं सोऽपराद्धादि स्वयं दत्तं स्वयं उवा ॥ १८
 वल ॥ योति धिं समनु प्राप्ता उदयं याति रास्ते न । सति धिः सकला ह्यं या सानदाने नृणां दिष्टा ।
 योति धिं समनु प्राप्ता अस्मि याति रास्ते न । सति धिः सकला ह्यं या सानदाने नृणां दिष्टा ॥
 विष्णुः सति नृणां ॥ नृणां उदयं दत्तं वल तिथिः सति धिः विनिर्गता । इष्टा यवा सत्कर्मणाः कथं न कर्मा
 नगा ॥ १९ ॥ स्वयं उवाच ॥ सति धिः सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 सवृद्धी नको वयं ॥ मुकुपकं तिथिं मुद्रा यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 सति धिः सत्कर्मणां अगु कर्मादि वं कर्मलि तिथिः सत्कर्मणां उदयं याति रास्ते न । सति धिः सकला ह्यं या
 नीति वावसु माह ॥ दत्तं कर्मलि सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 उल्लेखाय याद्वि की ॥ मार्क ॥ उपप्राप्ता तन्मयं विदितं वयं ॥ दत्तं कर्मलि सत्कर्मणां
 मित्रा अपि तिथिः पूज्यता तिथिः सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 तस्मात्तिथिः सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क

१४

२७

प्रसादात् सति तिथिः सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 सावासा कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 तिसृतीया कर्मावधि र्गता पञ्चमी वृद्धी । मृनिः सत्कर्मणां वसुवर्षा वसुवर्षा वसुवर्षा
 कादशी । अगु यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 तीयादीनामूदय सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 निष्ठा यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 वासादिति लक्ष्मी धनं निरिवायवा वयं ॥ पूर्वयुगं तिथिः सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 श्रमागु प्रवर्षा यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 द्वादश्या उदय सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क
 दत्तं कर्मलि सत्कर्मणां यस्यामस्य दिता वति धागधक मलिक वीता क

२४

तिथिष्वप्यत्राद्रुक्तं तत्रापि कर्मसु निर्दुष्टानुपपत्तिः किञ्च । सातिथिसु दही वा गुमित्यस्य
 प्रयति निरुद्धवचनस्य मयि योपसी हारवैयर्थ्याधिक्यं । अत्र कृपादिवचनवाक्ये कतया
 तदुसातिथिसु दही वा उच्यते धर्मकवचनस्य कर्मलीति वद्वेचनं न यावत्कर्मोपवर्त्युपती
 यते अतो दृष्टोपवाससंज्ञे उपवासस्य दं पुदमनिर्धमं वैतितागपनादिकं पितृकृतं प्रमा
 र्गसविनायतीति विज्ञापयन्नात अस्तसम्बन्धमुक्तं कर्मयुगाय मवचनविषयतिथिष्वदेव
 कर्मसंगं मयिमादिवचनादेव निर्दुष्टं अतः पात्रिगम्यायुगमवचनाविषयतिथिष्वप्यत्र ३०
 ७॥ किं कथितं कतं तत्रायेकं कर्मसु मयि तिथिष्वपि कर्मलिपूर्वकं संध्याद्रुविदिनं वसु
 कृपकादिवचनद्वयमपवादविधिर्न पविहतीत्युक्तं । पुनरुक्तं तिन्नायानुनयाधौ प्रा । स
 उपवासविनायकमवचनं उपवासस्य दं स्य दं कर्मोपलक्षकं त्वेति कर्मोपेति युगमादनी
 सुता । पात्रिगम्यायुगमवचनाविषयतिथिमागुपुवसु कृपकादिवचनमिति वायं
 नुक्तं किं तिथिगुप्तं तदिवचनद्वयस्य मयि तिथिष्वनिःपुतिपकृतया देवपितृकर्म

यत्र मौरुयवादि सिद्धं सव । तदायमांतिथिं समन्तं प्राप्य उदयीमागिरास्तु वैति दं वलवचनद्व
 यं मानदानवगादि विहितं देवकर्मगलाकीर्तनस्य पितृकर्मयावत्कृतं तमेव सखिकं तां नीरु
 यनु कृपकादिवचने कवाक्ये तादिति मयि मवचनकवाक्ये गावर्धवाया । अतः युगमवचनाया
 पि दं देवकर्मविषयालीति युगमवचनं उपवासस्य दं स्य दं कर्मोपलक्षकं त्वेति यद्वा उ
 धाप्रः न तमेव मयि वचनं प्रयुज्यते तान्मपवादसमागुपवा । अत्र अगुमानियुगमवचनवि
 द्वा निगनितरं यत्तदं तान्म वयं मवचनस्य दं देवकृतविषयकं त्वेति नापवासस्य मयि कर्मा
 अयानि उक्तं द्विगुणानि तान्मपवादसमागु । मयि वचनं न विज्ञापयता उपवासीति तदायका
 नीति विधी । तानि तान्मपदमं वव आसदं ति । नूनं यावत्तं ववचनानि उदयास्तु संध्या
 नयेव विद्युत्कर्मविधौ कानि तानि यथासंख्यं नुक्तं किं तिथिगुप्तं तदिव मयि मयि तदिव
 मासी सविनायतीति त्रितयेकवाक्ये तया वा वक्तुं पमीयानीति यदुक्तं न विदुः । सर्वो
 दयसंज्ञादि । सातिथिर्विधि तिथि लक्ष्मीं सर्वदयोपि नो पूज्ये हि प्रायः पूर्वकालिकी लक्ष्मी

२४

इकोयेवदितीयासंपुदधनं । तृतीयासानककयादितीयासहितविना ॥ तथादितीया
षयकायसुतीयाकृतंनय । समातिनेवकीधोवैकालसुवैरुयैकवै । सुन्दयना ॥ क
लाकाष्टातिकायेवदितीयासंपुदधनं । तृतीयासानककया कर्कवागलसिधंति । चतुर्थी
यक्षमियतेवगुप्तकततानीतिवचनात् । प्रकादधरमीषधीजमावासायवुधिका । उ
धोवाऽपययकाऽपयगऽपयवैलसंयुता । जगिपूवालीवचनात् । वसवैवकै । चतुर्थीसंयुता
कय्यातृतीयायवुधिका । तृतीयमायगतनेवपत्रमाकावयेकुचिन् । वचनान्नरे । चतुर्थी
गलनाथसमाहविद्धापुलास्यतै । न्तर्दिनदिनायकवृत्तविषयमिष्टमीयवुधियुतेव ३३
अथयुग्मवचनकततानीत्युक्तं । अतः । यक्षमीचतुर्थीकाय्यावुधिसिद्धिगाविना
यक्षमीवुपककया वक्ष्यायुक्तातुनानद । नदिषधीनागविद्धा कर्कवाउकेदारनैति ।
वसवैवकै ॥ नागयक्षमीविषयवक्ष्यायुक्तानमदनयात्रिजातमतुवाहय । षधीउस
कमीयुक्तैवगुप्तायुग्मवचनवक्ष्याविलोकत्वात् । सुन्दयना ॥ नागविद्धामक

नकाषधीयेवकदावनासकमीसंयुतायेवकाय्याधर्माधिविर्नके ॥ तथाविष्णुधर्मागुनं । प्र
कादधरमीषधीवोक्तुमीसीवुद्धजी । जमावासातृतीयायताउधोवाऽपयवैनाचिता ॥ नि
वेनहस्यसोवपूवालीधोनागविद्धाउयाषधीनिवेविद्धाउसफमी । दशमकादशीविद्धाभाया
व्यासः कथंयनैति । अउसफमीयतायीषक्षामयवासप्रतिषेधः । वेगस्यतै । सुन्दयणीउ
यक्षमीयतायीषा । कष्यायमीसुन्दयणीनिवेकात्रिचतुर्दशी । प्रताऽपययताकाय्याति
थनंयानदीरुवैग । वसवैवकै । निगमैति । नागविद्धाउयाषधीवुधिविद्धादिवाकनः । काम
विद्धारुवैदिष्णुर्नगुप्तासुतवासनैति । नागऽपयमी । वृद्धायमी । दिवाकनः सफमी ॥ काम
मुयादमी । विष्णुद्विदिगीति ॥ सफमीषधीयुतेवगुप्तायुग्मविलोकत्वात् । सुन्दयना ॥ य
क्षीकादधमावासायवुधिकागथायमी । सफमीयवविद्धावनायायातिथियक्षीकै । षक्षायुता
सफमीयककयागतसर्वदा । षधीवसफमीयउतउसत्रिदितावविः ॥ उक्तायमीउनवमी
यतेवगुप्ता । वसनयुप्तावितिस्मरत्वात् । वसवैवकै । सफमीनायमीयुकोसफमापिनया

अत्रमात्रं ललितं नि संशयं ह विवासेन । अथैसाकं वलीकुं कं योउकं ह विवासेन । तदि
 न सर्वपापानि न वेनात्रा नितानि उ । हनं कं स रं हनं दिने ह विवासेन प्रव उका दली तदि न ॥
 अगुहो जन दोष शु तं त्रित्व तं प्रतीयतं । नावदीय प्रवा लदा वगुरु लेकी र्जन । तदानुप्रमि कं ।
 याव त्रित्व कमा नू काना दु स्र लोक पा प्या दिव दिति । नावदीय पि । नावत्या पा नि दं हं सिं सिष्ठ
 किमनुजा पि पा । याव ती यव स उ उः यमनारु दिने गुहं ॥ अश्व मे ध स ह सा लि वा उ यं य
 जगानि य । उका दः धु प वा स स क नी ना ह नि यो उ जी ॥ उका द जी स मू कं न वे दि ना या त कं न
 न । रु स मा ती या मि वा उं नु अ पि उ न म ग ता रु व । उका द जी स मं कि प्रि त्या य ता र्जन विम ३५
 तं । स ग मं क पु दा अं या वा अ पू उ पु दा पि नी । सु क ल गु पु दा अं या ज नी वा यो ग्य दा पि नी । न र्ग
 ग न ग या रु य न क जी न य पु र्क र । न वा पि को व रं क उ न र्म दान य दं वि का । य म ना य नु रा ग
 व उ ल्या ह य दं दि ने । अना मा स न ना उं नु उ पा य तं वे पू रं य दं । रि का म दि स मा अं या अ थ
 वा पि नि धः स मा । रु क म स्य नि त्व तं उ पा य दं पि अ ग कं कि शि द र्ज वे गु अ पि पु ध नं मी य

३४

३५

वास स क र्क वा ता नि त्वं कि शि द र्ज ह न्ना पि क र्क वा या । स्त्री क त वा दि ति । द श मी नि य ता हा यी
 मी स मे ध न व र्जि त ॥ उका द जी न उ जी त प क या रू थ य पी मि म स्य पु रा हः ना ग पु प नी कु न
 नि धे ध नू पे ता य र्वा क पु ता दि ग दः पु तं ॥ पु त नू य ता पी ति थ म क त्व म स्य सा रा यं वे पू ज वे पू
 व स र्व वे पु नू लो म रू पु ति लो म ज नी सा धु न ह्ये पु र्क ह र्वा पु ति धे ध व दं दि ता र्वा । अ थि का व धि
 (अथ गुरु व दः ७ अत उका द जी हा उ न नि वे की न द श म्मा दि नि य म वि लो धी न वा सी क त्वे ॥ न य वा
 य मं का द जी न उ जी त ल्वा स नि धे ध नू प तं प अ वि धे व नि नि धे धः क ल म ग ता स क र्क नि व व ना
 द का द जी म ग म ति वा अ र्जो उ न पु स र्जि र्ग मि । य त उका द जी य दं त द व कि नू पु य हा ना ग य न
 मं वं ति क र्क ह दि न र्क उ न पु स र्जि ति । ल कं ग क प ल धी म स्य पु रा ली । य थ व र्क नी ह य रा ह
 नि रू या र्क यो व न न न । न र्क र्क यो न र्क र्क यो सं शयं ह वि वा से न । अ ग ता स न य दं ना हा वा उ
 य न त्व पु ल्या य ना दि ति । पु त स्या य स ग दू तं वे पू रं स ह दि ल रि धा ना ह । वे पू वा ना म य क र्क दि
 त क म । ह ले नि त्या मि हा उ व दि ता ह । व लु त लु त द र्क वे पू र मि ला दो पु त ग द शु तं व स

पुनर्निवेष्टयानदी कृयादिनि। पात्रालालु उपवाससूयस्य पुनस्तथापद्ये वसमाफ १। सायं
 जनादं देनिषिद्धताद्वयनमिदमना क २। तीव्रपात्रसमाफाविति धाव धनि सावा दुतसमा
 पनस्त्रिययाव लभपदा थला ३। अत उपवाससर्क पुनमिति पुसिद्धि ४। यथेष्ट जीतथा नो
 पुन। एवञ्च सर्वदं निपुनरुजिना नू वाद ५। स्मृति ६। अतो। नृपावलाया अपि अर्जिता गद
 रुवैवेगुभापक ७। पुनरुजिनाया व श्चक मितो ८। तत्रपावलापदस्योपवाससूयार्ग समाफ
 थत्वं नाप्यपयको यधनविष्णुका पुनसमाफाथक त्वं मानावादी। पावलाया पुनस
 माफाथत्वं पिपुनरुजिनादीनामदीवाजीनी वि। धनवाध १। दक्षिणो उभा दू समाफो पिपु
 नियकि। अथ रुकलाय दीवा र्ग वदिति कथमन्यथा रुवन्तं वि अनूपा वलाया र्ग त्वं न
 विधिनूपययतामिति। यथेष्ट वेलादि वयनं यमूल में वसमूल त्वं पिन पुनरुपायवा सपा
 वलाविषयत्वं तानुपाय यथेष्ट पुनरुजिना नू वाद नूयत्वं में वलाय वादिति। सायमाद्य
 कयो विलादीना नुसदनपाविजातादिलिखितत्वं नाशुल त्वावादि। अतुवपु उप

७३।

३१

तीरुलागुमी एम गुके कादश्याम वापवासाधिकार १। उकादशी च कृष्ण सूत्रविही कुम। ए
 तथा। ये तु सूत्रविवालाय न कृयात्पु उवान् ग दी। आदिपद निसेकी तावसिगे कादशीदि
 ने। अतीकातं कं गुं पुतीना पवसे ग दी। तथा नू चक्ये १। कं स का ला में कादश्याम
 तं तं। पावली योपवासश्च न कृयात्पु उवान् ग दी। पुनपुवाला वचना ग। गदी गववान् पु
 यतयो १। पुति एव पु उवा ग दि। एविके पु कादश्या दावपि उपवासधिकार १। तथा व। ग
 किल १। उकादश्याम नू जीतय कयो नू यो वधि। वनस्य मतिधर्माय गुका मं वसद ग दी ति।
 पुनवा विलासु सामान्य वचनं पु उवा ग दी। एव निषेधनदिगवं प्राधिकार १। वधिवा वसी कु
 लादावपवास निषेधस्तु न कृनिमित्ती पवासपव १। तन्निमित्ती यवासस्य निषेध। अइ दादत
 ठाना नू वसी कं गुं अथो यती निलमूयो वला मिति स्मृते १। उकादश्या लु पुन क वधिवा वादि स
 वन्धे ल विजा यो भयि स्मृते ॥ यथा सन क मा व १॥ रुने वा वं ल सीयकी तथा स का नि स य
 ती। उकादशी सदा यो यो सर्वे सम्यक् वीति धि १। विष्णु धर्मा न व ॥ ए गुरुनदिनायं तस्य

संकीर्तिसंयुता । उकादनीसदायैषाप्रयुक्तोऽविवर्धनीति ॥ नविवावा दोषावहानिषधस्तु
 यान्त्रिकयवोसविषयः ॥ ननुवैवावहानिषधस्तु ॥ कथंकादश्यां तु गायत्रीकोनस (ध्रुव
 रुक्मं नाप्यपवा सकर्तव्यः ॥ तदकं पुनर्वैवर्ध ॥ शयनीवोधनीसध्रुवाकं पुनकादशीरुवै ॥
 । सैवाध्यागदसं ननान्नाक प्रकादवर्धनीति ॥ श्राद्धदिने तु वि (शेषः) विषयमस्तु ॥
 उपवासंयदनिषः ॥ श्राद्धनेमिर्नकर्तव्यः ॥ उपवासं तदाक प्रकादप्रायचित् (न) विगमिति ॥
 अत्रोक्तं तु मनसा लगवर्ध विष्णु प्रलम्भ उपवसं ॥ सुतकं सतकं वैव पुनं तन्वैवद्वयति । तथा
 ॥ सुतकं सतकं वैव नत्वायै द्वादशी पुनमिति ॥ अत्रोक्तं ॥ उपवाससमर्थस्तु किञ्चिदुक्तं प्रायः ३६
 ॥ अथ ॥ उपवासपूजा ॥ उपवासनिषधः ॥ उपवाससमर्थस्तु किञ्चिदुक्तं प्रायः ॥ उपवासः ॥ पुनर्धुतु
 पवासस्तु तत्तत् ॥ उपकादकं ननकं नरुक् नवद्वय उवः ॥ अथ ॥ उपवासः ॥ उपवासः ॥ उपवासः ॥
 पूजा ॥ उपकादकं ननकं नरुक् नवद्वय उवः ॥ अथ ॥ उपवासः ॥ उपवासः ॥ उपवासः ॥
 वायुः ॥ उपकादकं ननकं नरुक् नवद्वय उवः ॥ अथ ॥ उपवासः ॥ उपवासः ॥ उपवासः ॥

॥ कावयं दुर्मपत्री वा पुनर्वा विनयान्तिरी । रुजिनीरु तव स्वायि वृत्तसंयुक्तं ॥ रा
 यारित वृत्तं कृत्वा द्वादशीयात्री पतितथा । अत्रोक्तं (ध्रुव) द्वादशी वृत्तं जीनजायते ।
 उपकादकादिनाप्ययमेव द्वादशी विष्णुयासना पूर्वकं वा वलदिकं कर्तव्यं सव । उपका
 कं ननकं नरुक् नवद्वय उवः ॥ उपवासं नदो नन नरुक् द्वादशिका रुवै ॥ ॥ ननुवर्धनी
 ॥ अथ वृत्तं जीनजायते ॥ द्वादशिका मयि नानु कल्पदाधा वचनादिनि । निषधः ॥ उपका
 द्वादशी द्वादशी निगमाविति । अत्रोक्तं (ध्रुव) द्वादशी वृत्तं जीनजायते ।
 उपकादकादिनाप्ययमेव द्वादशी विष्णुयासना पूर्वकं वा वलदिकं कर्तव्यं सव । उपका
 कं ननकं नरुक् नवद्वय उवः ॥ उपवासं नदो नन नरुक् द्वादशिका रुवै ॥ ॥ ननुवर्धनी
 ॥ अथ वृत्तं जीनजायते ॥ द्वादशिका मयि नानु कल्पदाधा वचनादिनि । निषधः ॥ उपका
 द्वादशी द्वादशी निगमाविति । अत्रोक्तं (ध्रुव) द्वादशी वृत्तं जीनजायते ।
 उपकादकादिनाप्ययमेव द्वादशी विष्णुयासना पूर्वकं वा वलदिकं कर्तव्यं सव । उपका
 कं ननकं नरुक् नवद्वय उवः ॥ उपवासं नदो नन नरुक् द्वादशिका रुवै ॥ ॥ ननुवर्धनी
 ॥ अथ वृत्तं जीनजायते ॥ द्वादशिका मयि नानु कल्पदाधा वचनादिनि । निषधः ॥ उपका

भासव (लादय) । सानासुनक्रियाः कार्य दानदासादिसंयुता ॥ गभरुं ॥ यदासुन्यादयक
 र्भक्तोरुवं ॥ यद्युनावदीय ॥ उदयात्या कुगमुतेनातिका अरु (लादय) ॥ कात्यायन ॥
 सन्धादिकरुवं निरुं पावली उनिमित्ततः ॥ अहिलु पावयित्वाथनेत्यका नंतुजिरुवं ॥
 देवल ॥ सकं ट विषमं गुणं द्वादश्या पावयं कथं ॥ अहिलु पावली कथा ॥ पुनेरु कन
 दापराव ॥ अयवेदिने द्वादश्या लारं तु पूरुं वायाया द्वादशी पावला नूवाधन ॥ रुद्र ॥ स
 पूरुं कादशी यग प्ररातं पुनर्वस ॥ तथीयाया द्वितीया उपरतं द्वादशी यदि ॥ पुर्वगा ॥
 पूरुं या कादशी लाया वदतं दितयं यदि ॥ द्वादश्या पावला लारं पूरुं वय विगृह्य गं ॥ ३२
 द्वितीये पुकादशी द्वादश्या ~~पुकादशी द्वादश्या~~ दशमी कादश्या पूरुं या कादशी ल
 कं ॥ उरु वदिने द्वादश्या निर्गमं पूरुं वायाया ति यकं ॥ तद्वि विषयं यत्नादिक
 लुपवायाया ॥ कर्म प्रवा ॥ सम्यु पूरुं कादशी यग प्ररातं पुनर्वस ॥ उरु वयति
 ति ॥ कथा सुप्रमय वसं रुद्र ॥ पुकादशी यव द्वादशी वृकं वि (लघतः) ॥ तथी गवामि

लादिसताने । पुकादश्या ववि (लघतः) व द्वादश्या दिने निर्गता नदगमीना पि द्वादशी लध शत
 थामाधवीयसंगुद ॥ गभरुं यवाला ॥ पुनः प्ररातं समयं द्वादशी कं कायदा रुवं ॥ तथी यवा सो वि
 दितो वेन क्ति सयतं रुद्रा विधवाया अत उवयवतं द्वादशी नवं दि ति । लं वशी पुकादशी द्वाद
 शी च नाति (लघतः) यो दशी । द्वादश्या द्वादशी द कि उयो दश्या लुपावला मितादिना समूलनं थ
 तद्विषयं रुद्रं । विष्णु धर्मा कि नं । सम्यु पूरुं कादशी यग प्ररातं पुनर्वस ॥ लघतं द्वादशी तस्मि
 न्नयवास कथं रुवं ॥ उयो थ द्वादशी त उ विष्णु जी लन तल्यने ॥ दं ति थि यव वि वया धि कवि
 रुं दादित्य थ ॥ यदा पूर्व दिने यव दिने रे कादशी लुप्या तदा द्वादशी नाति (लघतः) यो दशी लं
 वं द्वादशी कयं तिस्रः शमदा से वसं रुद्राया । यकं ॥ पुकादशी द्वादशी च नाति (लघतः) यो दशी
 । त उ क उगं पूर्णं यो दश्या लुपावला ति । यकः । कली का वृमि रुद्रं वायदिसा नायवं रु
 नि । द्वादश्या द्वादशी द कि उयो दश्या लुपावला ति ॥ वृद्ध वे वकं ॥ तदं कादशी कथं । तिस्रः श
 यो यो दश्या द्वादश्या निर्गम विषयं । वक्रमान वचना नी कविषयं उ क वचन वि वी धा दि ति ।

यदाहमस्मत्पूना ६॥ विद्यायाकादशी गुणपवनतादादशी नय ॥ कर्मपूना ६॥ मूकर्म द्वादशी
नस्मात्पुत्रोदशी यदाभन ॥ उषायादशी विद्या सर्वे न कादशी तदा ॥ नावदीये ॥ उषादशी यदा
नस्माद्वादशी घटिकादृष ॥ दशमी कादशी मिश्रा संवीषायासदा निधिविति । यदा वदशी विद्वका
दशी द्वादशी ननिःसरति । उषादशी मयि द्वादशी सत्यानिधिति तदा मूकर्म कि ६३ द्वादशी
याया सकामे सुगुण विदशी विद्व वीषाया गुद्वेवदादशी वा उषाया मूकर्म कि ६३ निः
काम सुगुणी कृयादि न वे कादशी सदा । सकाम सु सदा पूर्वमिति बोधाय ६॥ दुवीदि नि ॥
विष्णु वदस्य ॥ उ कादशी दश विद्या गुद्वेवदादशी पना । द्वादशी सन्ध्याये व उषादशी उषान
मिति वयेन जात । तदना के वसं वसा क वतं पिउ क ववन विवीषा गुषादशी गुषादशी दि
नं गुषादशी के लयावलमिति वा खी मिति । उ वदशी कादशी विद्या गांधी ताम्रया वि
ता । तस्मात्पूना ६॥ नयं तस्मात्पवित्रं य ॥ मूकर्म पिसेय कादशी कादशी गुया
ताम्रया नवी माउ न सुखाद्व माविदीयत । ये ६ क तादशी विद्या गु तवाक् वृत्तान वे ६॥

गगनन के यो व मग मीको नयि जति । य का मय नि कर्वे नि दशमी कादशी यती । जालोका नमूर्ख वृम
न सुय्येदं नमवरे दिवा दि । दशमी वे धनि का वी धवय नाति । तानि सया लि निस्का मय निस्का मय
नोया गुषादशी द्वादशी निर्मम विषया नि द्वादशी दिने उकादशी निर्मम विषया निरुक्तं याति न्य
शे सर्वे दश सिद्धाया वरुणाय लि की म म । य तु जे उ स मय उ दी पा दो सु मी दया न उा क दे श
मीयो गदशमी विद्या पका स विषया लि वयनानि । उदयान के व वं ध उ गुद्वेवदादशी पको स विषय
काला कृयादि लारं सय क्री नालारं पिउ वं जनी । उषाया दशमी तग उषादशी तु नव ६॥
उदयान उषादशी मी उ (जय ६ सय म ग न्यती । उ पवित्रा तु वं ग तु तस्मात्पवित्रं य दिवा दि
। सो वध मी क व वय नादि ति नि धी तं त नाना गु का पि दृष्टं क व लं जे ज ल व सति म हा कु व र
उ द व लि खि त मिति । वेद नि दं म न वं सति म हा कु वं पि ने व दृ य न दृ श्य तं त न स दि ग व व न स
ल मि दं । समुल ल वं पि ज लारं उषादशी द्वादशी लारं सय क्री सु मी दया न उा क व उ वि ली क
न स मय द श मी मू क्री षष्टि द दु मि का म का दशी कृयादि लारं द्वादशी पावे लारं य लु

[illegible]

वै० तावद्वननाकवीयावदंकस्यसंकुय० वि० (अथैवमदीयालुवलीवद्वयंअदि। निधिऋयंनना
 कवीद्यादशीनेतलंघयं०। किन्तुशुबलेकादशीवामनावगावैविष्णु०। शुवलादादशीकुडना
 दनसिंरुका०। ह्ययंति। शुक्रपकंउयोदशीउपूर्वविद्धायाया। उयोदशीपुकरंवाद्यादशी
 सहितामनं। सतविज्ञानकर्कवाद्यपूकुकिदावनंति। उपवासेपुकरलपुनवेवकवचना०।
 कषुउयोदशीउपवविद्धेवापवासादोग्रायायदारु०। वराष्ट्रमपमावास्याकषुपकंउयो
 दशी। उगा०पवयगा०पूजा०पनायपूवलासंयगा०। शुक्रपकंउदशीपवयगा०ग्रीष्म०। नव
 यनाग०। शुक्रपकं०। एमीचैवशुक्रपकंउदशी॥ पूर्वविज्ञानकर्कवाकर्कवापवसंपूर्णंति। सन
 वास। कषुउदशीउपूर्वविद्धेवकाया। कषुपक०। एमीचैवकषुपकंउदशी। पूर्वविद्धेवक
 र्कवापवविज्ञानकषुउयिग०। आपसुसुवचनाग०। निववायादोउवि०। (अथसुगतावेवकवीश
 यो०। मासीउदशीयुतवग्रा०। उदशी०। अथयु०। मिमंति। युग्मवचनाग०। अथकादश्यमावा
 स्यापूर्वविज्ञातथ०। एमी। पूर्वमापवविज्ञाउनायाया। निधियंयकमिति॥ उप्पप्रमालव

पचाद्वसं वल्लभानां तदा वल्लभकामाणां वं विषयदिनं प्रवृत्तं । यदा उपवर्दिनं वासनं तदा
 (श्री) अर्द्धं याग्यकाले तदा सदापवर्दिनं अर्द्धं पूर्वदिनं यमावासायां अपवादाथं अर्द्धं
 राधप्रसक्तौ नाति सन्ध्यासमीपतः । पुनरुत्तमसामाह उवर्णाहं च उक्तवान् श्रीधरः
 दध्नाहं नाख अर्द्धं ति यदा उपवर्दिनं सामाहं विनामावासात् तदा । यद्यौकमिति (गो) तिनं
 ॥ यदा ह्येव वन्दुमाह शतं तामसावासां कवी तं तिस्रं तं लेतादगं पूर्वसु तं लेतादगं
 वसुतपोनरुद्धो दशनिपदं न कथं लक्ष्मीं सिनीवाल्यामसावासां यौ विनयकादिकया
 दिल्लिखितमहं श्रमानं कथं ति यद् कं तस्मिन्नीवासी दिनवर्ति यत् उदं श्रयं कया अतो न
 पो नरुद्धमपि तावत् । तदा च विकल्पे बुद्धिः । सादित्यत आह अमावासा मित्यादि प्रसिद्धं
 तपित् यद्वाधमिति (गो) ॥ प्रकृतं यत् पूर्वदिनं यदा द्वाप्राणापवर्दिनं वदो सवत् तीया
 भाषा सा अमावासा प्रति कथ्या न सीरुवाचु उदं श्रयं न प्रवर्ति । यदा उदिनं दधं विमर्शा
 यदा द्वासेमां निनी पूर्वदिनवर्ति यत् उदं श्रयं कया वृद्धिः क मग्न्यामावासायां प्रीति त

५११

५६६

दातव्यं वदित् यद्वाधमिति (गो) ॥ अथ पुनरुत्तमसामाह उवर्णाहं च उक्तवान् श्रीधरः
 वसुतपोनरुद्धो दशनिपदं न कथं लक्ष्मीं सिनीवाल्यामसावासां यौ विनयकादिकया
 दिल्लिखितमहं श्रमानं कथं ति यद् कं तस्मिन्नीवासी दिनवर्ति यत् उदं श्रयं कया अतो न
 पो नरुद्धमपि तावत् । तदा च विकल्पे बुद्धिः । सादित्यत आह अमावासा मित्यादि प्रसिद्धं
 तपित् यद्वाधमिति (गो) ॥ प्रकृतं यत् पूर्वदिनं यदा द्वाप्राणापवर्दिनं वदो सवत् तीया
 भाषा सा अमावासा प्रति कथ्या न सीरुवाचु उदं श्रयं न प्रवर्ति । यदा उदिनं दधं विमर्शा
 यदा द्वासेमां निनी पूर्वदिनवर्ति यत् उदं श्रयं कया वृद्धिः क मग्न्यामावासायां प्रीति त

शुक्रपदं उवाच ॥ तिथिः ॥ तृतीयायां हि दीयुका अकमासा पुकीर्तिता ॥ तस्मीं प्रदीयते दानं तद
 कथं सुदातामिति ॥ तथा दत्तं पुनरुक्तं तद्विषयम् ॥ तृतीयायां तु वैभवं वादिषु नैव पु
 नः ॥ उदकं च उदानं न वृक्ष लोके मदीयते ॥ विष्णु धर्मोक्तं ॥ रुक्मिणीं समाश्रय्य वद
 नी ॥ यः पुनरुक्तिः ॥ तृतीयायां तु वैभवं वृक्ष लोके मदीयते ॥ यस्मिन् वैभवं शुक्रपदं तु
 तृतीयायां तत्वे वद ॥ गङ्गायां नमः ॥ सा त्वं मया तं सर्वं याम के ॥ वैभवं शुक्रपदं तृतीयायां ४१
 या विना कते वा त्वं दं समस्तं याम न वद ॥ त्वं दत्ता य पूता रुक्मिणीं सर्वं याम ॥ यं वृत्तं सिद्धं नि
 यः पुनरुक्तिः तदकथं याम वा प्राप्ति ॥ उवाच ॥ तृतीयायां अकते यं वै दं सोपि विष्णु वं अश्वि
 रुक्मिणीं ॥ वस्म यमा ॥ वैभवं शुक्रपदं तु तृतीयायां अनादं नमः ॥ यमा नूत्या दयामास यमा
 कीक गवो नेकरी ॥ वृक्ष लोकां क्रियं यमां पृथिव्या मवावयं ॥ तस्मीं कायां यैव विष्णु समस्तं
 यं ॥ यवान् दया दितातिरु ॥ उवाच ॥ पुनः ॥ यं यवान् ॥ उवाच ॥ यं यं रुक्मिणीं के सागरे दिमा
 यत् ॥ रुक्मिणीं यं न यति सागरे ॥ सुखावहं ॥ त्वं दानं अयं शुद्धं अयं हो मादि

कश्चिदयम् ॥ शुक्रपदं यमं तं गगनं न्यायकल्यतं ॥ सिद्धोत्तरे विष्णु वं सर्वं मय मया गं ॥
 सिद्धो नैदी विष्णु वं ॥ अतः शुद्धं अकय तृतीयायां निमित्तं कामा मितिकं यि यत्नं शुद्धं द
 विष्णु वं नैव वापदं ॥ पुनः ॥ उवाच ॥ त्वं विष्णु वं नैव वापदं ॥ पुनः ॥ उवाच ॥ त्वं नैव वापदं ॥
 हि तं शुद्धं यम वया क निमित्तं शुद्धं यति तदयं ॥ उवाच ॥ त्वं नैव वापदं ॥ पुनः ॥ उवाच ॥ त्वं नैव वापदं ॥
 दय मया गं ॥ तथा ॥ वैभवं शुक्रपदं तु तृतीयायां कते यमां ॥ काकिं कं शुक्रपदं तु तं यम
 वं दनि ॥ अथ रुद्रपदं कयं ॥ उवाच ॥ त्वं उवाच ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥
 ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥
 या दय मया गं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥
 वैभवं शुक्रपदं तु तं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥
 नवमं रुक्मिणीं नैव यम वं ॥ शुक्रपदं तु तं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥
 कीर्तिता ॥ सोमादवत्तु ॥ नवमं रुक्मिणीं नैव यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥ त्वं यम वं ॥

सन्मासवत्सु माकायादि। वृक्षपुत्रादिः॥ अथ यमासिद्धिं वृत्तुर्दश्यां सावित्रीमय्यनियता ।
 वेदमूलं साधवासानतावेधमायुः॥ अथ यमिधिदेधेयमादशीदिने दिवायत्तं कदम्बु
 पित्रापिलत्पतं उक्तं वृत्तुर्दश्यां मादमासुयाविनीतदापूर्वदिनं प्रवे। प्रसन्नायाविनी
 मा उमेवपुत्रासदातिथिः नगययमादवदासन्नुदविवासनादितियवाग्नववयनायदा
 उगयमादश्यावोदयसुयाविनीपनदिने वृत्तुर्दश्यानासुपयने गानदायनदिनं प्रवे। अथि
 धे॥ वृत्तुर्दश्याममावास्यायदातवमिनात्रद। उपायापुत्रनीयासा वृत्तुर्दश्यां विधानता। अथीय
 दासावास्यायी सावित्री पुमापवासरवचनकारिण्यत। गद्यदिसमूहं तदासावास्यावकिनादा
 उपवमवैजि। सकलजोउसीगुदकावसमतावावस्यपाध्याह्याह। सगविधानकर्तव्यादश्या
 पूर्वकिदायनंति। वरुं यिवामनि। शुद्ध सावित्री पुतमूकर्म। तथा। सगविद्याप्रमावास्यानक
 र्कयाकथंयन। वरुं यिवाउसावित्री पुती उज्जिखिवाहनंति॥ वृक्षवैवर्क॥ कन्दपुत्रादोपि॥ प
 र्दश्यां तथा अथ वृत्तुर्दश्यां मदासती। प्रिवायापिता नानी विधिना ननपूजय॥ तथा॥ अ

ममा उगयमादश्यां नकं कय्यदिउं नुया। अयाविनं वृत्तुर्दश्याममावास्यामपावदामिति॥ रुवि
 ध्यातनवृत्तः॥ अमावास्यायामंवेगदुतमिति वदन्ति तत्रिहं पूर्वाकि वचने अथ वृत्तुर्दश्यां मं ववगवि
 धेयं वग्या वचनानामूकाया नूसावितात। अथगव॥ क्वप्राप्ती सुन्दवशी सावित्री वृत्तुर्द
 श्या। पूर्वदिदे वकर्तव्यातिथिराकं वपोवदामिति पावितातः॥ अथयहं नैवपावदामकाया। यथा
 पावनायकादानी। सावित्रीमय्यिह उरुताहारायनं रुनि। गगन्याविधवानानी विद्वंतीं लनं तसा।
 नूतिसावित्री पुतनिर्दुय॥ वृक्षपुत्रादि॥ अथ उक्तं वृत्तुर्दश्यां नूजायाय वृममासती। तसा। तसातुगीये
 अथी लीतिहोतापुत्रवृद्धयं। उपरुं वृत्तुर्दश्यां विविधेयं तनयैः स्वनादिति॥ तथा॥ नवधवशी कर्म
 अथमासिसिनेयं कर्म वशी यावदसिद्धिमा। वृत्तुर्दश्यां नकं कय्यदिउं नुया। मठ निविधिने लिमः। तं विन्ध्य
 वासिनीं सुन्दवशीमा नाधयन्ति वा। कन्दमूलरुताहारा लेहकं सक्तं शुही॥ तामिनिस्वीसू
 यन्नेनेनगस्यासित्यर्थः साधे। कन्दं शूनादि। मूलं गदितं मूलकादिति। अथ तिथिदेधे
 यमादवगव॥ अथदश्याहना॥ वृक्षवैवर्क॥ अथ सगुदश्यामी समस्तवमूखीसुता।

तस्मात्तानि पक्व वेनि दाने ज्येष्ठ वि (श) यतः ॥ यां का क्षि त्ति विगं याप्य दद्याद्दर्श तिलोदकं । मय्यां दण
 हि ॥ पाये ॥ सम दायग कोप मे ॥ दण मी धं धु कु स्य समुत्स नमस्वी स्म ता ॥ दनं दण या पा नि तस्मा
 दण दना स्म ता ॥ अनया ॥ कं व ल दण मा ॥ समुत्स नमस्वी स्म ता ॥ धना धं नदी मा पुं तिलोदक तय
 ॥ ॥ क स्य तान् स दण या प क य पु नी य तं । अर्ध दान मा वि अ गृह विधा न नं वि ल भ ॥ अ
 मा सि सि तं य के दण मी रु स सी य गा । दनं दण या पा नि तस्मा दण दना स्म ता ॥ तस्मा अ दण
 मा कु रु वं शो म दि नं यदि । कं या रु स के सी य का सर्व या प द वा ति धि ॥ त गृह स्ताने क य या ॥
 तिलोदक सन नं ॥ स्नान मा पुं ॥ दण या प क य स्य रु उ रु सा या ॥ ग न ड रु वी ॥ दनं दण या
 पा नि तस्मा दण दना स्म ता ॥ तस्मा अ दण मा कु रु उ रु सा स मा ग मं । ग मी । स म्म द्या व ल म
 क्तो लो क म वा त व त ॥ दण ज न क रं या र्थ दण या पा नि अ व दि । आ र (ध) ले पु य तं न तस्मा द
 दण दना स्म ता ॥ त थो गी र्थ य र्थ ति त्रि व (ध) । अं धं मा सि त्ति त्ति स ग दि नं ॥ अ क य कं दण मी रु
 स (श) ला नि व ग म दि र्थ जा द वी म र्थ लो कं । या या अ स्मी रु न ति दि ति लो सा द (श) ला रु नो

५४।

५५

अ ॥ अर्ध दद्याद विग त गु ली वा डि मं धा य ग स्य ॥ सा ग नी ॥ अ गृह स्ताने क लं ॥ दं या धं ॥ ॥ अ द क
 नाम या दान दि स वे वा वि धा न त थ य न द नो प मं वा व का थि कं वि वि धं स्म रं ॥ या रे अ म न त थ पि चे नु
 नी या वि स र्थ ॥ अ स म्म द्य पु ला य गृ वा द्य र्थ मा अ उ र्ध्व ॥ य न द यं व रि धी नं म न सा नि य वि
 क रं । वि त थ ति नि वं ॥ अ मा न सी वि वि धं स्म रं । उ ता नि दण या पा नि उ ण मं या रु उ रु वि ।
 हा त म्म म नं दं वि उ लं वि धु प दं रु वं ॥ व वा द पु न ॥ ॥ य कि धं लं क य द न क रं दं गु य म ति
 नि । व र्ध ण म य र्थ म क वा य र क्री डि तं डि य धं अं धं मा सि सि तं य के दण मा कु वि (श) य त ॥ प
 र्थो ग म मा ला व त ता ॥ वि क रु लं ल रं ॥ अ द द य र्थ गु क य के उ वि (श) का वि धु ना पु ता । वि रु
 वि ता गु र्थ मा लो क स मा गी य ति व र्थ य ॥ वि (श) का ल र्थी ॥ अं धं गु क व उ र्ध्व र्थो प र्थो र्थ य
 क स म्म र्थ ॥ अ र्थ यि त्ता म रु दं वं ॥ उ रु लो कं म दी य तं । अं धी य वो रु मा सी म न क वा दि ॥ अं धं
 मा सि ति ला न द ता पो रु मा सा वि (श) य त ॥ अ र्थ मं ध म य न् र्थ तं दं पा थो ल्थ सी य ॥ ॥
 वि धु ॥ अं धं अं धा य का त स्मा रु उ पा न न पु दाने न ग म्म धि प ल म वा प्री ती ति । उ र्ध्व अ र्

[illegible][illegible]

सा जीव वं अलु सुपुमपवमायुयात् । ताम्बुलवर्जनां गी वरूक ६४ श्री जायतं ॥ घा त्या गा लु
 ला वं सदैव सुवर्णवपुर्वं ७ । रु त्वा ग लु मतिमान वरू पू उ ग्वा जायतं । शक पठा ना न
 री गी पका सा दो । म ती रु वं ७ । पादा र्थ ग प वि ला गा द्य पू ४ सो प र मायुयात् । दधि र सु ग क नि
 यमा । आ लो क लरु ते न व १ । ल स ते स क ति दी र्घा । ला ती प क म रु क य न । रु मो पु रु व न्ना यी
 व विष्णु व न्ना यी रु वं ७ । समा मु नि स दा री गी म धु मी स म्प व र्ज ना ० । नि वा धी नि वृ डी क स्त्री विष्णु
 रु क ७ जायतं । उ का क रा प वा स न विष्णु लो क म वा यु यात् । अ व द न र ख ली मा धु र गी सा ७ ३
 नै दि नै दि नै ॥ मो न व ती रु वं अ लु त म्पा जी स व लि ता रु वं ७ । रु मो उ क न रा य लु स प थि या
 ४ प ति रु वं ७ । न मा ना रा य द्वा यं ति उ ला । न न डी रु ली ॥ पा दा नि व द न विष्णु लो क ७ । आ दा न
 उ रु ली । विष्णु पा दा म्प उ स र्ग लो क ग क ७ । रु वं न व ४ । विष्णु दं व क लें क र्मा ७ । उ प लें प न मा उ
 नै । क ल्प सा यी रु वं क रु स न रा ना गु री ग य ४ । पु द दि द णी र्ग य लु क र्मा लु ति या ० क ४ । ह
 स यु क वि मा न न स वे रू व र्ज वु र्ज ७ । क ला पु धा म क दि र्घा । ल न मा य व र्ज वु र्ज ७ । न क री

श्री समग्रं तर्कार्थयागारु लं लरं ७ ॥ पञ्च ग व्या ण ना र्थ का क य दारु लं लरं ७ । उ क रु का
 ग ना त्रि ल म ग्री हा ग रु लं लरं ७ । अ य वि ग न रा प्री ति वा पी क य प वा रु लं । प र का ला
 नू री । ग ने स र्ग लो मी न वी रु वं ७ ॥ प र्ण यी न रा उ कं क र्मा क रु लं लरं ७ । गि ला यी री
 डि नी नि ल प्र या ग स्ना न डी रु ली ॥ मा स द य प वि ला ग न न री । गे ४ प वि र य मं ॥ पु व सा
 दि र्घा ॥ पा र्थ उ रि मा या ति के ण व ४ ॥ आ षा ढी यो लु मा सी य म न व न रा दि ४ ॥ अ
 थ ग्रा व द क ल्प नि लु य ४ ॥ ॥ का ला य न ४ ॥ य व द य ग्रा व द्वा दि स र्वा नि श्रो व ड स्य ला ॥
 गा स स्ना न न क री त व र्ज वि ला स म्प ड ग ४ ॥ य यी सा स ४ । अ य वी सा वी सा स ४ । गे थ वा
 दि ४ । सि द क र्क ट यी र्म । स र्वा नि श्रो व ड स्य ला ४ । न स्ना ना दी नि क मा नि गा स रू वी त मा
 न व ४ ॥ अ उ ता स्ति ति ग द्वा क ल म्प द्वा स्ना ना दी न दी व न्ति ध न रू या द य ४ ॥ स म्प द्वा
 ग ४ । सा स ४ । अ न्ध थ वा व र्ज क ला ४ ॥ न दी ल क द म्प कं क र्मा ग य वि लि र् ॥ ध न ४ । स रू
 वा ४ । री र ग ति र्मा सी न वि द्य तं । न ता न दी ग द व र्ज ग क र्मा य वि की र्मा ॥ ध न रू र्मा

चउख्य ॥ तथा विषाभादि तद्वदिता गजी वै (गामगीतथा । तज्जाननप्रदप्रानि यं वा न्नदसं
 रुकांति ॥ यत्तु कर्कटकं दवीयादमावडजखला । चउख्यदिनिर्सायकं मुद्रारुवति
 जाद्रवी ॥ गडुआयोगमागुवीधयति । ननुज्ञानादि निबंध ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ गजीध
 मंडवीपूजा यमूना वसवस्यती । अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 आयोगसुनी वाजेनाप्रथमं तिर्गवधवः । नञी दीयापवादानुवमूर्कं कुन्दी गयप्रिलि
 ५॥ उच्यते कर्मविधीं तं पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 मनसा पशुमी ॥ ॥ सुफेजनादभंकं यं पशुमी रुवनामि तं । पूजयं मनसा देवी सुदी
 विटपसक्तिर्गं ॥ मनसा देवी विषद्वी सुदी सीरु ॥ विवमर्दस्यपुत्रादि स्त्रियं यं देव
 नादवं । स्वयं पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 यमापूयादिति ॥ न्यमश्च पशुमी पोर्तुमास्यने पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 मनासा द्या न कवितात् ॥ तद्वर्कं रुविषा ॥ पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥

जीध

५५

य । द्वावश्वारुयगांलखा । गाममंनविषात्वत् ॥ पूजयं द्विषवती नदधिद्वी कुं त्रेः कलि ॥ य
 श्रीमती सापयमी दनागम नृकी नं नयनरा ॥ गंभी कलं पुयक निनरुयं प्राददकि ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 नागमनाद ॥ वासुकि कर्कटकं (प्रेव कालिया मलिरुडक ॥ पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 यानिति ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 गयनारुविषाकं ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 तिनयापिप । पत्नी विमर्कं पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 द्वयदानप ॥ कपूय कं द्वितीयायी पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 नादिः ॥ तथा मनीवि ॥ मासं नरुस्य मावास्या तस्मादरु रथामत ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 मी ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥
 पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥ अतः पुनर्निगमः ॥

आव (एव) रुतं यत् कं कृष्णमासमीवर्गं । न कं मासिन मास सुखतिगुप्तनाकसी । आव (एव) रुतं
 यत् न कं मासि यदासमी । कुनमखा ४ कुनमपा ४ हि सन्नि यमर्किक ना ४ न कं मासि यदा विष्णो
 कुनमी संरुवर्गुतं । यमस्य वनमायत्र १ सप्तगं नानकी ० वाथ १ । अतीतामाजगं नं न कलमं
 कान्तरं गते । यागिर्गनन कं धा वं उ ३ ता क वू वास नं । तद वं वीसा पुत्य वा य पुत्य प्र वा वी
 पुतसा स्या निरु तं ३ (अप संहार नाय न पुतान् मी कानू क ल्याप संहारो पात वी ध ४ ॥ य
 इकं वसे वेवर्ग ॥ उपवासा समर्थ (पु) दं क विपु उता उय ० ॥ तवद्व ना निद आ य रु क्ता
 ५४॥ दिगुली रु वं ० । स रु पु समिती दं वी ० जयं पु एव स यमान् ॥ कृष्ण द्विद जसं खाना यथ ५४॥
 ग कि पुतं न व ४ । गि रु त गु व टा का म्प त मे पा स्य अन र्ख ग रु त ल वं वा । यथा विष्णु व रु स्य ॥
 प्राजापत्य र्क सी य का क प्रान रु सि वा स मी । मूक र्क म पि ल न्ध ग सो पा सा स म दा रु ला ॥ क्च पु रा
 (६॥) उतं ना ना धा रं द वं द व की स दि र्द हि । मू क्ता म म य र्ध धा रं या ति विष्णु ४ व र्ग य दं । उ ना
 स मी व र्ग य र्ध कृष्ण की द न नो क मा । का न य न्ध धा लो कान् ल क्ती त स्य स दा स्मि वं ला दि । पु वा

र ति विष्णु रु व ति । उ ना स मी नो दि ध र्म स मी ज य की वं ति । ग उ कं व ला स मी उ ना स मी । अ स्मा अ
 र व कु मी ना सि वि पु ति य मि । ति थि दं (ध य द रु व स ग म मि नी त द रु वं व पु र्ग कृष्ण प व दि नं ति थु
 नं पा व र्ण । अ ला रुं नो दि ली रु स्य का य र्म स ग म मि नी । त जी प वा र्ण क र्ण व ति थु नं पा व र्ण स ग
 ति विष्णु व रु स्य व र्ण न ग । जो स व न्ध दि न द य ॥ स स म्भ र्ण वं पि पू र्ण दि न उ व त द र्क विष्णु
 व रु स्य ॥ अ स मी नि जि ना ति थु का य ग उ उ या चि रं । क र्णो प वा र्ण ति थु नं त दा क र्ण कृष्ण
 व र्ण ॥ क र्ण प र्ण स मी व र्ण क र्ण प र्ण व उ द्द जी । पू र्ण वि द्ध व क र्ण यो प व वि द्धान क र्ण उ चि र ॥
 त था स म्भ र्ण ॥ क र्ण स मी व र्ण उ या सा वि गी व र्ण व र्ण की । अ न र्ग उ यो द जी व र्ण उ यो यो प
 व र्ण स मी । त था यो न सी । क र्ण स मी क र्ण व र्ण जी व ना ग र्ण उ द्द जी । उ ता ४ पू र्ण यो ४ का य र्ण
 ति थु नं पा व र्ण र्ण वं ० य दा उ दि न द यं प र्ण ग म मि नी त था प व दि न उ व । ति स र्ण यो पि नी
 यो उ स व प र्ण स दा ति थि ४ न ग उ य ग्मा द व र्ण स म्भ र्ण उ रु वि वा स ना दि ति ल क्ती ध व लि लि
 त प वा र्ण व र्ण न ग ॥ अ ग उ व ति थि वि वं कं ॥ य दा व र्ण स मी त स मी पू र्ण दि नं यो द या

कथापिनी तदापवदिन उर्वेत्तुर्क तद्वै जन्मास्मी अथ अथ पूर्वदिने अस्मात्पवदिने अस्मात्
 रुयजस्त (गतिव) विधादजति सिव वास्मी पूर्वो रवौ वा । यत्र वादि दीयु कास्मात् तेषां वा
 ॥ उडापत्यर्कसंयुक्ता कृष्णनरुसिवास्मी । मूदुर्कसवित्तस्य त उपायासामदाहला ॥ मूदुर्कसय
 हा वा उयस्मिन् यर्क उदध्म ॥ अस्मात् पूर्वो दिदीष्टर्क तस्य पूर्वो मूपावसंदिनि ॥ वासने वा नि
 ज्ञायावाय उयर्को तु वादिदी । विजाधेन नरु मासं सेवयुका मूपावसं ॥ माधवीयसंगुह लि
 खितवलिष्ट वयनायु ॥ २२६ यदि षष्ठि द हानि को यस्मात्पवदिने उदयात्यर्क स्वत्यमाग
 विवादि दीयुका तदा सेवा धौत्तुर्क यदा उ सफसी बिडास्मी अर्द्धा गतात्यर्क वादि दीयुता ॥ २२७
 पवदिने यार्द्ध गतात्यर्क तथा पवदिन उवन न क उस्मात् सस्य ॥ नवलवला च । तर्क रविषा
 उपाधित वीन क उ यनास्मात् यागिरास्म न ॥ यत्र वायु अर्क वास निजी ॥ २२८ जिनासंदिनि । य
 दाविना जय की धौ गी पूर्वदिने निजीथयापिन क उय गास्मी पवदिने वास्मात्पविने क उय
 का तदाने क उस्मा निग्रामक तथा गिस अथापिनी गिव वनात् पवदिन उव यदा उ सफसी

२२१

विडा पवदिने न गिस अथापिनी वादि दीयु पवदिन उव निजीथयापिनी अस्मात्पविनी वायु पूर्वदि
 ने अस्मात्पवदिने गतिविमा उ ह्यजति । तदापि उर्वे यदा उ सफसी वा गिजाधेन वादि दीयु पवदिने उवन
 दिदीसदिना नास्मात्पविनी तदा पूर्वदिने उवापवा स मूदुर्कसय हा वा उ नूत्तादि विष्णु नदस्य
 वयनाह लव नरु उसी वन्धा यु । यावदीत्यर्क रूनीति वस्मा म ॥ २२९ उय वासे द्वय । पवदिने म
 हा निज्ज्यामं वति ध्रुव लारादिति सी उदायिका रुदस्य । तिथ्यु क यो न क विधा । गतिपान
 वा वरुमान वा । उर्व उडास्मी वा गिजाधेन वादिने वा गिजाधेन यर्क वादि दीयु वा
 वपिर्क य । तद्वै विना जय की ॥ २३० जय न क उवलवला इय वास्मात्पवदिने तिथ्यु न वा धौ
 यवा स ॥ २३१ निनय न नि ॥ २३२ सर्व उति यदा क वा गिजाधेन वादि दीयु का तदाने क उ
 वलस्य यो ज की क त्यापितस्मी जय लामं वा पवा सं क त्याप पवदिने यथा स रू वं पावली ॥ ॥
 यथा विष्णु नदस्य ॥ २३३ अर्द्ध गतात्यर्क ॥ २३४ क लयापि यदा रु वं ॥ २३५ जय की नास सा धौ का सर्व
 पाप उल्लिखनी ॥ २३६ रविषा पूर्वो ॥ २३७ अर्द्ध गतात्यर्क ॥ २३८ अर्द्ध गतात्यर्क ॥ २३९ अर्द्ध गतात्यर्क ॥ २४० अर्द्ध गतात्यर्क

५४१

इनेलोभं दनिपायैतिउमडी। सापवासादुनं ४ पूजी कृत्वा नउनसीदति ॥ वज्र ४१ ॥ अरुमीनादि
 लीयुका निम्नद्वेष्टमतेयदि। मरुकासविहं श्रीजातीतगुस्वयेद्विभयदापुनस्मिधिनक
 उवदादिनद्वये पिउमकीतदापने वाधोया। तदिनउवनकयास्मिनीथसम्वये श्रीवृत्त
 वत्ताहि। थ। तिस्मि सन्ध्यापिहोत्। पुनमूलमं वपूनादावयने सदनपा विजातलिखिते
 तथा। वरुनीयापुमपुनस फमीसदितारुमी। तथा। सज्जयापिनकर्कया सकमीसदिता
 रुमीति। यदु अरुमीनिवेनायि शुकायातिगुजया निता। ० गितस्मासायमक विजयमे
 वपूवमिति। अउवसर्वे उवापकासं यदापवदिनं तिथिरुक्तं पावला श्रीग्यका लं नलस्य ५६
 तं तदात श्रीनं कविश्री। गविपावली काय ०। तथा ववद्वि पूनादा। तानं कयादि। थवा
 नं शक्राननत पावली। तथा। नोदिली संयुतायं विद्वद्भिः समया चित्तः विधा। गयान
 ली कृष्ण मीनया पुम वादिन ४। सो योजिके पुते पाके मय्य को विविम सुते। तउवपावली कृ
 म्। दं वं द विदा विद्विति। यदापुन नं का विविम सुते। तदात श्रीवपिपावली कृष्ण ०

अत्रथाद्वितीयदिने कृष्णवास पुसर्ग ३। तथा सोपवास उत समाप्य थपावलापदानूपयकं ४। त
 थावागो थवचनाय विद्वद्भिरुक्तं। तिथु कया मदाहं दानकउम्या नउववा। अरुवापुतग ३
 कृष्ण ० पावली तय वं सनि ॥ अपवद्वि दिवपावली कृष्णदिलथ ३। तथा। माः का गित
 तिथय ४ पूष्ण ४ प्रोका नेकउयौ गत ४। मरुका नं पावली कृष्ण दिना गुतल वादिलीमि ला
 दि ॥ यदु तिथिरुक्तं यावला मिति कापित सुमवति प्रायति तिहं मादिसदन पाविजातादि
 समगायाव सु वं ति। यदापुन ३ सुम्य दयं स्वत्यारुमीनादिली यता अनननं पूर्वनिवमी
 सोमवारं वा वृधवा वं वायूतासात् तदा सद्यवादि कासेवाया यदाह वृषवेवर्ग ४
 उदयं वा ४ रुमी कि शिववमी सकलायदि। रुवं उवृष संयुकाया जापत्य रुसंयुता। अवि
 वरुजागं नापिलस्यं वामवा विना ॥ विष्णु धर्ममं ॥ अरुमी वृधवा वं ल वादिली सदिताय
 दि। रुवं उमृनिज्जहं लकिवुते वृते कादि रिध तथा पादं ॥ पुतयो विगगना लु पुतयं नानि
 उं उते ३। ये ४ कला भवलासासी कषू उमा रुमी वृते। कि पुनवृधवा वं ल सोमं नापि विना
 वादिली संयुता रुमी। वा ०

फलकलागस्य नरुयेनागमारुवे०। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नागमर्षयुक्तयेन न०। यथैरादय
 दं शुक्रावलीगतासगस। सानदानादिके सर्वसम्प्राप्तकयमन्त्रे०। गथाविविधा। नृडउ
 वाव॥ सासिराडपदं प्रमां शुक्रपदं वानन॥ सापयित्वावमीत क्वा पयसावद्यतेन
 च॥ जपासां प्रोक्तत्वा उ पूजां समविधानतः। हंसयानसमावृता लोकममवृजं दिति॥ गृ
 यमं वदं स हसी॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ पदं रादयदयेव शुक्रावलीमृषिधिव। इष्टीक
 मीवृत्तं पूर्य म० कथं गीतमानव॥ नगस्य कयसाध्याति सनाने सा फपोरुषी। नन्दनं वदं ॥०
 गं नित्यं यथा देवताथकृत्। अस्यामैव लक्ष्मीं पुतावक॥ सासिराडपदं यस्यां नवमीव
 हस्तं तथा। तनुं पूर्य वेदं मन्त्रं धरुत् लरु०। प्राफं रादयदं सासि उकादध्यासि
 तं हसि। कटयनेन वं द्विष्टा मसापुजा पुवर्तते। कटयनेन पार्श्वपारवर्तते॥ द्वादश्यां उ
 सितां यक्ष सासियोष्ठपदं तथा। शक्रमूला यय द्वाजा विष्णुवदवा सवे॥ १॥ १॥ १॥

स्रवप्रति॥ कापडहलीमहावत्॥ गायत्र्या धिया दं वत सौम्य कायवेन म॥ वदं हस्त
 नोमिष्ट वदं न उयूर नदं॥ कंसाथं सर्वलोका नी पूजं यं पुति गृह्य गी॥ शुवभाद्रवदी
 यावेत्युक्ती क्वा समादिता॥ गोजो विसर्ज्य यं कुर्कं मर्कुं लामेन पापुव। साहं सुभासु गगलि
 ॥ पूर्य नदं गगकुती। उपहारी गृह्यो त्वं मं स हं नुष जग म्पती॥ नृ ॥ १॥ १॥ १॥
 सादात्तं कृती यदि। ततो द्वादश्यां वैधं कर्तव्यं नाक रायने॥ द्वादशी शुव। लमये ता सर्ववा
 य ह्वा मिथि॥ वृषवावसमायुक्ता ततः गतं गुह्यरुवं०। तत्सु पूर्वमवा प्रीति द्वादश्या
 दशी हलमिति॥ ॥ अथ नक्तवृत्त॥ गती क्वा नानक वितां शुक्र उदं द्वादश्या मनकवृत्तं। शु
 क्रपदं उदं द्वादश्या सासिराडपदं रुवं०। तस्मान्मृगानसां न सर्वपापं उदाध्याति। रुविष्णु
 गाल॥ अनक्तवृत्तं मंगि सर्वपापदं नृ गुरुं। सर्वकामपु दीन ली ली ली ये वयु धिधिव।
 अउतिभिद्वे धय उदं द्वादश्या ध पूरुमंति। वयना ॥ यवदिन मूर्कमा उद्यापिन्नापि उाया॥
 नगदुतीय वासनियमां घटिके कापि यदिरुवं दि ह्या दिवसं पू ववमं पू यटिकाया को वप

अथावगाता न नकापित दून दं धुव वधादिनि । तसेवनक्रुतया गतातिशायशायान्धनस
 मायुके लादिववनादि नि के विना ॥ ७ ॥ तद्वचनं संव दू नपदी यमाउ लिखितं नाने धुव
 तं ॥ ८ ॥ अथ अथाव विना धावु नमते । समुल तं वि यदि शत निषयं तदा ॥ ९ ॥ अथ लव नि
 जक यत्वं वा क ल्या स्यापित मिमिया ॥ १० ॥ अता नक्रुता नूनी धादपि पूर्व दिने युगमि
 ति । पुता नूतान विधि य पद ताव नूतं ॥ ११ ॥ अथ अगमो दय ॥ १२ ॥ तत सो वरा ड
 सफाद ॥ १३ ॥ निष्पन्नं अगमो दय ॥ १४ ॥ अतिथि ॥ यत उता गद वि त गममर्क युता के वि
 ३११ यदा स्यात ॥ १५ ॥ मा मीरा दा स्या इरु या त्रिभक्त मूनं न गल्य स्य सुवा विद कु ॥ १६ ॥ अस्या धि ॥ १७ ॥
 यत उता ये ॥ १८ ॥ तत्वं पं व विं शति पुत लु विता गममर्क युता न व गता स्य युता यदि न वि
 स्तुता तुल्या रुवति यं व विं शत्य भिका नि द गता निमिया वत मधी उ कु पूर्व स्वा लु
 नी पदं व विना उक्तं ॥ १९ ॥ नि निर्गति ताथ ॥ २० ॥ अथ ॥ २१ ॥ कन्या संकु निम ॥ २२ ॥ अथ ॥
 कन्याया मग तं सूर्य सदि रा ने ति दिने ॥ २३ ॥ कन्या सप्त च म पा फं सूर्य ॥ २४ ॥ च त नि वं के ॥ २५ ॥

दिन उय स विरा ॥ २६ ॥ दिन मर्क । तन य उ कि ने वि ल्य थ ॥ २७ ॥ व स ये व र्क ॥ २८ ॥ अथा फं रा क वं क नी स ति
 को ने ति दि दिने ॥ २९ ॥ अथ दय न ग ल्या य ये म ही दय रा जिन ॥ ३० ॥ म ही दय उ कु य नी । तथा क न्या या
 मग तं सूर्य ॥ ३१ ॥ अथ स फ दिने ॥ ३२ ॥ अथ दय न ग ल्या य या व ल्य नी व वि तु ॥ ३३ ॥ अथा फं रा क वं
 क नी ॥ ३४ ॥ अथ स ते ति दि दिने ॥ ३५ ॥ अथ दय न ग ल्या य जो उ दं श नि वा सि ने ॥ ३६ ॥ अता उ दं श न दा दिक
 ल्य ॥ ३७ ॥ अथ दान वि वि लु य द्वा दा व न स ॥ ३८ ॥ वि लु व क्रिया ॥ ३९ ॥ न लि खित ॥ ४० ॥ रु वि धा ॥ ४१ ॥ को धु मा
 सान रु स्य ला क य ला स म सूर्य ॥ ४२ ॥ वि धा न क स थ यि स व क म वि व द्वा ये ॥ ४३ ॥ अथ नि
 ने क ल्य ॥ ४४ ॥ तत ॥ क रू प ति प दा न्या सा वा स्या य र्क न पु ति य कि थि या ॥ ४५ ॥ वि वि ना उ द म व थ रू
 ल रु मा धि ने क रू वी ॥ ४६ ॥ व स पू वा ली ॥ ४७ ॥ अथ यू क दू यू य र्क उ रा र्क क या दि ने दि ने । तिरा ग ही
 ने प रू म्या तिरा ग ल्य दू म व या ॥ ४८ ॥ न स नि पि त व ॥ ४९ ॥ ति क ल्या म ने सि थो न व ॥ ५० ॥ अथ ने क रू नं तत
 त स्य न क वि व कि ने ॥ ५१ ॥ या व यू क न्या उ ल थो ॥ ५२ ॥ सा दा फं दि वा क र ॥ ५३ ॥ ता व द्वा द्वा स्य काल स्या क न्या
 पु ता पू र तदा ॥ ५४ ॥ तत दिन प दं ति थि प र ॥ ५५ ॥ ति थि ने क ने दि व स ॥ ५६ ॥ न माने न को दि ने ति थि ति थि

न्यय कव ६७ वाच्यय क क प्रूप क दित्वादिना कल्पमागु विधानादं वसमीहितसिद्ध ३ नयदा
 वस्यत्वाथ पुनत्रसकीलादिनादं मुक्तिधनमिति वाच्यं । सामान्य १ यु कव ६८ १ ग्वयू क क
 प्रूप कीय क ल्यानामरि धन नपून दं मुक्तिधनानां वा द्वापयुक्त्या संरुवात् । अत एव
 सा ६९ न गय प्रधिकार ३ अन्यथा सामान्य क प्रूप कीय त्वं न द (न निविना ग्राह्य माहि ता ६९)
 द्विज नम न ति मनुना ति धन नं ग कु द्वि स्र सा मि (अत व गय नि वि द्वा ता द नू षा ना य
 ६९ १ अ त १ न न वि वि ना ग्रा ह्य क यो स व स रं क यो स क त । द्वि ज उ द्वा य धा ग्रा ह्य ६९ ४
 मा स मा स दि न दि न ति । द व ल व र नं वी सा व ला दा जि न क प्र ये क सामान्य क प्रूप क वि दि
 त म म ग य क प्रूप क वि दि त श्री ग्रा ह्य त नुं (ले व का र्य मि ति सि द्ध) त त य य ग स क ल क
 ल्य प्र वा ध स ग य क प्रूप क य ग्रा ह्य नि व र्ग त ए व सा मा न्य क प्रूप क वि दि त नु ।
 स क द पि का र्य मि ति वा व स ति । अ त व क ल्या न वि ष म नि ष त्वं न क वि क ल्य ना यो
 ग त ए का दं या मि धा दं या न ति व त ह त ह मा क ल्य नी य ध न र नि त्वं ह त ह वा क न्या

१ का हं द नै व वि क ल्य न ति वा यी । अ न व र्गि क रू ल र मा प्रूप य को ग द स्या न्य ग रू ल र वा व क
 ल्य ना यो अ न्या य ता न नै व रं गु रू क ल्य ना का प्र लं ष स र्ज न ति वा यी । अ न्य त म क ल्या क व ६९
 तै नै व दं या रि धा न न म किं चि त् क ल्य क व ६९ दं या रि वा व र्ग त १ ए व ल्य प य न यं य रं क वि
 ला म न या स म ल ना दि ति का ल नि य म १ ग कि त न् ल्या दो ल न न्य था मि द्वा व ला क (ध मि) अ त
 ए व य नि नि ष क ता त द सं स क पा र्श्वी क उ क पा दा द्वा पा द पी या दि स न्धा व न नं स्र यो यि स्त नं
 वि ष नि ष वि क ल्य म रि धा यो कं य ग य त क द्वा र य स र्वां य सा पि म नी षि ल १ रू य स र्वां य
 तं ग रू क क यो प्र वा य तं ति । अ त य यो व क न्या उ ले यो कु मा दा सं दि वा क व ६९ त व क
 द्वा क लः स्र क्ते न यं ग रू रं ग द ॥ द स व स र क न्या स १ ग कं ना पि ग दं व स न । य क मा उ
 क वं द ग्रा रू यो वं ग यो र्ग द मि ला दि प्र र ल व र ना यो ग य क य द स र्वां य य र तं य नि य
 म क य ज नि या त ना कं यः स्रा ल्य क ल्य य र म १ स वि दं यो १ य र १ य क १ ग्रा ह्य त य वि धी य
 तं ॥ पू ज मा य र्ध न धा न्य सा रो ग रू मि म व र । प्रा प्री ति य श्री मं द ल्या ग्रा ह्य का मा स थ य र

न। आवादीयावधिकतायः स्यात्कमुपकीमः। गगुण्डं पुक्रीत कनीगदु उवानवा ॥
तथा। आगगं विगको कनी आइ कनी तमत्ततः। आवा आः पनीमः पकः पुगसः पित
कमीसः। लादिका प्रि निडादू ककुजावा निवयनानिगानिनी उदं वपुरु तिरिगति
विगत्तादमूलाभं वः समुलैवै विकेना मुदु उवय शीमय काखगुलरुल विधाय काभी व
उकनेपह गयः। गदकं पुस पूरा (॥) को कुमास्य कमासं नसमसक्ति थिक ला रिधनान
उकनात्त मनाकुाई। गुषसाइ रिधमने। वा उमस्य शी गगवि पुस फें कें गवै दिती
पुषय आः पनः पकः सगपि वि (गय कग। पयः मूदु शी गगपि दः मयूदु मतीय ॥
ति। मया यक पिग गपि गसै गदं सुयो दे शी गि। विष्णु धर्मा गन यथमको उवयना
शीः यमूकः गदस्य यो कुमास्य नय नुव मव कि वी वुस ये ग (॥) उवयक गदस्य
सो नपतं याव व के ना उलथा रिधनं नै व सिद्धी अः यय कय दे वे यय रिधनं व साद
तः। को कुमास्य ना धनं कयूपकं पागु कयू कमासा नमो स कयूपकीय आइद विकेना

५११

५१५

ईगकल्कल्पविधिवि निषे कर्कवा मिगि सिद्धि। नित्यतमपि। सक्तिपित वः श्रुत्यादिना कः। यानि उ
कं न्यास मधुन गुद विधायका निकनी गगं सवितरी लादी निगं प्रिग गदीनादिकल्या नगु
यनं गपि यः। मयक साय कग। गत श्रुति विधिय कें सि दार्क सकलयः मयक समाको
विनिष्कालाया फ्रा आइ हावै नित्य वरु नी पुस नं साग नयेक गु मिमूलतं तं लायवादि
निषे स्ये वनित्यतमिगि वायी कं न्यास मधु निगुद विधायका नी सा मो नय कयूपकं गुद विधा
यक के ना कं नवय लवकं लादि कू प्र गु मिमूलतं ना यय कू यूपकं लोदं (॥) अक यक
कनी सम (॥) नै वय कं दाय थक गुद विधायक तं नै क गु मिमूलतं सा सक्ति वं ना गत्ता उमादीव
नी (॥) नै वय सा पि न्याय ता ग। अग उव गु दारु ल विधिय वि। अग उव अरु वरु या वि की वं
थी मया सी ति निरयं क विधाय गगसै धा व न न स न उ गत्त क म ना धिका वं म मू द्वा यय
वादन कामना धिरदं। कु व ला या व की वा व धक कर्कवा ता रुमी दिगि। गगुरु ल कामना मा
नूय नि कल म वं ति सिद्धा निती। रुविष्णु पूरा (॥) नित्य क्रिमी गथवा न्ना धनं व गी रु नी गु

३४

ति। यत्तु उो वस कं उो यो पूजा विद्यादि बाधकं विना लघुर्वेन न गत निवर्षे कविधिविनि। तद्वं
यदि कं न्यायासं वा न्यय कं उपकसन्निपातः तदा तं तु लोकं वं वं ग्राह्य यदि उंसि हा कं पञ्च
मय कं गुह्य वं गं तथा कन्या कं १ वं ग्राह्य सामान्य कं पूय की ये ग्राह्य कार्य मिति सिद्ध कन्या कं
पाठकादिना ६ कन (६) उला कं पूय कं सामान्य कं पूय की ये विद्या गुह्यमाव ग्राह्य कं गदं वाड
यावद्व कन्या उत्तया विद्यादि कं सा कुड् स्य काल स्या दि लार्थः अन्वयः वेपयानि कुमग्रया
गपयारावः। अतः न के सिद्धे दं दं ग्राह्य काले एक स्या पिरुवकीरु। कन्या कं न्यादि
ना कन्या या १ वं ११ ग्राह्य गुह्यमाव स्या मं वन दस कवात। उलाया मं गौ मूखात् कल्याणक ६४
ल्यरा वी मं सिपय वसति। उलायी क्रिय मं ग्राह्य दीपा नितो मं ग्राह्य ल्यमाद। रुविधे। यं
मं दीपा नितो मं उत्तया ताप की दशी तु वि। तसी दं नय दं पिरे धी वं महालयं। न्
तिसहालयं कन्या कं पूय कं। नय मं दस्य लय न्ति महालयं यं यं मय कं नित्या रा नय कं।
उक्तं मं वी पय नावधिक कल्पनया माना हा वा त। कन्या गं सवित विधित वा जानु गमना

१। तावत्यं तपूवी जूना यावद्व शिव दर्शन मिति। अर्थ वादा कन्याया मपि पित वं नृणा नित्यादि
ति। जमा वा स्या १ सामान्य कं पूय कं कृप पुनरु काले वीधे कं लार्थः वा वं ति अगु वपञ्च म
य कं अरु मं वा स का ग्राह्य माव ग्राह्यं पुष्यमा मती तया मय कारीरु विद्यासी तिव नदान
गुं गं वं स्व मं धा स वे ग्राह्य मं वस वं दं ति पुष्य पुनरु व वना य। तदने कं न वे मी दं ग्राह्य
नी कार्य। उत बुद्ध प्रसिद्ध स मी न वा स्या स्या मं तथा। उयो द ग्राह्य मया यो ग्राह्य नै न
कं की उत दपि नित्य अरु मय मं कं पूय मं उयो द ग्राह्य मया स व। याव द्दु तो य मयं ता न पि
त नृणा थय मा लया त। दिस कं यति मान् धी कं ता ग्राह्यं स्व कं पूय। कृष्ण कं की र्क य कं श्री ३४ क
त श्री स्वयं कं। की कं १ पुं यो उं स १ यय सी मधु मं यं। तस्मा ग्राह्य विधिना तयं यं
य सं न उ। मधु मय मिति सुं हा तथा नी तं न वा ममा। गुसमा उं य व ग्राह्य कं य ग्राह्य
त नृणा तिका सा उं दाय १ ग्राह्य सं धा वय तिवार्य। या वा स वं दं दं प्रत्ये ह स्तान वि क्रिया
१ ग्राह्य तं नापि कं की तं कं दु वं १ सु स जी तं। उयो द ग्राह्य विधिना वं वं मया स्या

कोदिर विविना गुडु कार्य । तर्पणीया शुद्धि लक्ष्य पितृ दक क्रिया ॥ अमावास्यायां
 पितृ वपुष्वा नान्दी मुखे अर्पति वृक्ष पत्रादावचनाम् । अमावास्यां तु कन्याकै तीर्थ योको
 तथान्न पाक लो गुडु विधाने न दद्यात्तु भोजनं पिबेत् । कु के मि तिसम्बन्ध न प्रदीप लिखित वचना
 ॥ धा उ ग वि ह्यो यानं विक्रमा ॥ धा धं यु कु ट स्र सा धे व द दिन धी उ ग के प ल दं भ द्वा निकाया
 ति । यथ वृक्ष पूजा ॥ ॥ कन्या गते सविते विमाना नि उषा उ ग ॥ कु उ लि सानि उ त्पानि
 गं प्रद क म थ क र्म । धा उ ग दि ना त्प कानि स्र यो सि द्धानं उ ला दि धा उ गी ल्प ॥ धा उ गी ति स्र ॥ १८
 रवे दिनी । ग वृ उ प र य मं क स्या दि ॥ स्र रा वें ध रानि स्र । ष दि ॥ ध नू धी रा ॥ ग द्वा वि ॥ ॥ नि मि ष
 स्र उ । मि धू ना ष्टा द ॥ ग रा ॥ ग क न्याया अ र उ द्द ॥ ॥ अ ग उ द्दं तु क न्या या य न्म हा नि उ षा उ
 ग । कु उ लि सानि उ त्पानि गं प्रद क म थ क र्म मिति । अ नि मि षा मी न ॥ ॥ अ ध र ॥ म
 स्र व ॥ ति र्ग प रा ॥ ॥ क न्या या क षू प कं उ प र यि ता टं रं दि वा । न व म्प्री वा ध यं दं वी
 म हा वि र व वि स्र ने ॥ उ पु य कं र उ थान्नु दं वी कं ग वि मा क र्म । द्वा त वं व उ य पु म्प्री हा

जीध

पयस्य गुरुर्देवः । यथा सायं युक्ती ग विल्व वक्त्रं धिवा सनी । सप्त मी पत्रिका पूजा अरु म्प्री वा
 य म्प्री वा । पूजा वजा ग रं चै व न व म्प्री वि धि व द्द लि । वि स र्क नै द ग म्प्री उ कुी ग को उ क म र्म
 स्र ॥ अ उ ति धि क ल त्वं न यो लु मा स्र क मा स र्म वा र्मि ता र क न्या या मि त्प स्या म म थ ॥ क न्या स
 व न्ध पा फ क षू प क र्म ति यो लु मा स्र क मा स र्म वा र्मि ता र क न्या या मि त्प स्या म म थ ॥ क न्या स
 लार ॥ क न्या या मि ति क लो रि ग मा थ क ॥ दं वी पू वा ॥ ॥ न्धं मा स्र मि गं य कं क न्या या मि गी तं र वी
 न व म्प्री वा ध यं दं वी कुी ग को उ क म र्म ति वि ति ॥ अ य सो व य व र्म कं न्या या मि गी तं र वी न नै व
 था का वि धि मा सी ल्प स्र वे म्प्री व कं वि ति । अ उ या डी यो ग म्प्री ॥ दं वी पू वा ॥ ॥ अं षा न क र उ
 यू का यी ष ष्ठी विल्व लि म नु ली । सप्त मी मूल यू का यी पत्रिका या ३ प्र वें ज नी । पू र्वा षा ट यू का य
 म्प्री पू जा हा मा त्प यो ष ली । उ क र वें न व म्प्री उ व लि ति ॥ पू उ य धि वी । लु व ॥ नै द ग म्प्री उ पु
 लिय ल विस र्क यं दि ति ॥ मू ला दि या ग म्प्री ॥ ग थ कं व ल न र उं धं व शू य गं ॥ आ दा म्प्री
 वा ध यं दं वी मूल नै व र वि धि मि । पू र्वा दि वा स्या म्प्री लु व ॥ नै विस र्क यं दि ति ॥ ग ग ३ र

कलयास्तुतामस्तु कदावा गयामस्तु क प्रवृत्ति विविक्त कश्चित् न नन्द । प्रवृत्ति विविक्त उ मेल
 कस्य पुत्रे दम प्रोक्तो कदा विलम्बे लोयं च तल (गुयनी) जे वादं आनियग मानस ३। ७ ति
 वलम्बे कस्योति स्थापन श्री विसर्जनी । तथा । दि । लोयं च तल (गुयनी) जे वादं आनियग मानस ३। ७ ति
 वलम्बे विधागवा स्थापन श्री विसर्जनी । तथा । सम्बत्स रं वृत्ति गं बुधून गगमनायेति मनु
 लिनी श्री विरुधं गं । गगमना कल दलीया या वा लं वल तिथि वं वल कर्म न क उ या गल
 स्तुता मिनाया धनुव । अतनु वे समस्त प्रदीपादी । मलारा वं उसफ मी के वला मी पुर्वे ४२
 मय ७ । तथा मिथुन मय वम वम दै म त लु लो य म ३ । लो य म लो य म ३ ॥ श्री ति ३
 म ३ ॥ उक्ताने मधु सुदनस्य जय न वा खलु लो य म ३ । क न द प स्य विपु धि धा सुव विधा
 वनो प्र प वृत्ति वि । न क रं लो य म न विता म दि ति धि दै वा लो य म ३ । प्र प रं स प्र प रं व ति धि क द ति
 मून म ३ । प्रा दू मी म का द य ३ । गगमना क ल दलीया या वा लं वल तिथि वं वल कर्म न क उ या गल
 द वी धी धन विले व के का य ३ । ०० धमा सं नि गं य के न व मी य ड यो ग ३ । श्री व क वी ध य ३

४३

न २

मिथी या व लुका क वी म ३ । उ वा व ल स्य व धा धा य वाम स्या नु ग हा य व । अ काले द म धा वी
 ध लु वि द वी : क ग ३ य व ॥ मनु लिनी । त ग स म्पू र्ण न वे मी य द प र्वा दै । आ द यो ग म ३ द
 नि ३ । जय म व कर्म य द उ त द रं व वृत्ति दै वि ना ड यो ग म ३ द न य वृत्ति दै वि ना ड यो ग म ३ द
 न व द अ नि क रं य वि (ग म ३ य व ॥ य ग उ क व य न । न व मी य द रं दि वं ति यो ग म ३ द न य
 स व क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द न य क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द
 न व द रं न य य द अ क मी य क न व मी य द रं दि वं ति यो ग म ३ द न य क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द
 न ग व रं ज य म् य ग म व य न वि य लो ग । य द उ प र्वा दै न व मी य द रं दि वं ति यो ग म ३ द न य क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द
 क उ व री प र दि नं व प र्वा दै न व मी य द रं दि वं ति यो ग म ३ द न य क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द
 स यो ग म ३ द न य क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द न य क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द
 द वी ध य द वी मिति य ० ति ग द न क रं । त स्य न क रं न मी स वं लो ग हि न स व क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द
 लो दि न नि दि त लो ग । अ उ रं वी धी ध न म न क रं त दि न म ३ द न य क र्मा र्ज ग यो य फा व पि दि वी ग रं दि न म ३ द

[illegible][illegible]

लोपः गिकः श्रितः । तत्र धर्मसासान्नायाफेनायादीतनका लस्य यदाहव की मन्नायनसायन
 पत्रिः (लसाव वृद्धेः) विवासेः पुकेः प्रवसुतसु धंश्या न के गुमे कायाः सद्यः विल्लाधितोः
 तनः पुतिपय्री रुत्रे नखे मितादि देवी पूजादि वयने सूर्य निवर्षे कवची सायु गुतेः सा
 र्थकालः ३५ लाति जामो धनुः । अत्राध दिन द्रुयं सार्थ सद्यु लानं कर्म सायाप के । तथा मिथ्य
 कर्तव्य वमं वमं द्रुयु क वं डुरु लो बुध गलने नवी सातावा पिषष्टादी मं लक मना दह्ये मिथ्य
 मा उत्रिः धन न्य गो विनिः धन न्य गो विनिः धन न्य गो विनिः धन न्य गो विनिः धन न्य गो विनिः
 रु युय कायी के वेलाया म्मा पूषा द्रु यल ल गून वीं गी थो द्यो लक ल गून वीं गी थो वी विल्ला दिन
 वय त्रिकाः ३ पुर्वे ग्म सफ सी विदि तां पत्रिका पुडी क्क यान्ति ॥ पत्रिका व । नैरा क सी रु मिडा व ज
 य नी विल्ला डिमो । अ (भा का मान क) न्ये व धा न्या दिन वय त्रिका ॥ देवी पूजा ॥ ६ ॥ य व ल गून
 रा (भा वा दे व्या नियत मान सः) पुति सम सूर्य क यान्ति स्याप न्य विसर्कु नी ॥ तथा दि
 गी नी वं वं वं व ल (गु के उग गं व वी विषे वय विधात वी लाय न वी विसर्कु नी । धनी धनी व

७३॥

११

लंल (गु दिग मी वं गिताः पुजाः ॥ गच्छा विना गमि दू लु छि वल (ग निवा र्थि ना नूति आ ति आ
 लु ॥ अ उ छि ति थि दू (ध) उ दय ग मि नो व सफ सी गु आ त इ के ॥ युग म्मा वय व द्रु श्री सफ सी
 पार्थी गिया । वं वं दय मी रु के न ग गु मि थि म्म के ति । अ उ स वं गु य व दि नं घ टि का नून
 वा पि नी न गु आ पुर्व द ज म्मा पि । यथा रु दे व ल ॥ पुगी य वा स निय मं घ टि के का पि म्मा रु वं ॥
 सा मि थिः स कला दू या पि थि (ध) वा य ना द्रि की ति । त गु री द य ग मि न्ना म रा उ म्मा म पि स
 फ म्मा पु वी द्रु पु वा य ती पुर्वे ग ॥ न उ म्म लान रु गानु मा धा द य न्य उ त इ के आ ति ग म्म ॥
 पु वी द्रु न व य त्रिका उ रु क नी स व थि सि द्धि पु दा म्मा गी म्म धन दा क नी मि थि उ म्म व ली पुर्वे ग
 उ हा । म धा द्रु उ न यी उ न रु म क नी स गु म्मा वा य रु सा य द्रु व ध व न्ध ना दि क ल दू स य रु
 गी स व द ॥ सफ म्मा स रु म्मा य दि वि स ति ग दू य त्रिका गी रु ला य्वा गारु ३ सफ मी ना उ
 उ न स रु म्मा र्थि ल रु कि म्म लान री धा न्ति । त म्मा स म्मा दि या र्थी न य पि उ रु दी सफ मी पा य
 दे वी ॥ रु पा ली वं ग य म्मा स क ल उ न दि गी ना क स रु वि हा य ॥ ना क स रु म्म ला गी स रु

रुता। चकादमीका। सुरुतुल्या। निगायमी। पर्वतवाजपुया। गतापि। हुका। मुनिगा। गन
यना। नवा। सुवनिष्ठसुखे। अयमी। समया। वनवमा। वा। वला। हनि। मत्स्यमी। मा। पला। नं। दा
दया। नैवं। प्रसूतमी। तं। नैव। वि। धिना। न। कु। ल्यपि। उ। जि। तना। न। यथा। गथापि। कि। नि। मा। मि। धे। नैवं
द्रीया। दया। दुर्मासा। दिना। उ। यथा। सुरु। तं। तस्या। न। न्या। दया। वा। रिकी। तस्या। दामि। यनैवं। द्री। पुय
हं। नद। दा। त्रिय। न। वमी। ति। धि। मा। सा। प्र। ग। दु। कु। दि। वि। मा। द। मं। अय। प्र। पवा। स। का। मा। रु। न। न्यु
तं। अय। यप। उ। व। गो। म। सि। नी। ना। भि। वा। न। न्यु। ल्ये। कं। क। लि। का। पू। वा। ला। उ। यथा। सी। म। ला। पू। मा।
नक। य। सि। य। ता। न। ग। दी। मि। पू। डा। नृ। धा। पवा। स। उ। तं। ना। पि। क। र्मा। न्या। थ। पु। धन। म्या। नि। वा। दि। य। ॥ ५
॥ अथ। दं। वी। वि। स। डं। ना। न। के। री। ख। डं। मी। ट। द। र्जनी ॥ ॥ गते। व। गुरा। गुरा। द। र्जनी। ना। नि। कु। य
बद। व। ॥ अग। उ। व। डं। मि। धं। क। ता। नी। वान। ना। डा। वल। व। डी। यथा। वलं। मरु। नै। ख। डं। नै। य। म्य
कु। ल। गा। म। ध। सु। नि। म्ये। अग। म्या। दया। न। न। व। मि। ति। व। स। क। ना। डं। गुरा। गुरा। मा। दं ॥ वथा। न्य
म। ली। य। व। ना। न। वं। पू। प्रा। सा। द। दं। म्या। गि। सि। ता। म। वं। म्यु। दया। दि। रा। पु। ध। रि। ति। फ। र्मा। ख। व। डं। मा

जानि। कवा। मं। म्यु। स। म्या। य। व। म्या। कृ। न। य। उ। पू। ध। रु। ता। व। व। म्या। व। गुरा। दूं। मं। म्यु। यं। ना। प। वि। षु। ॥ प्रथमं ॥ ॥ १
ई। ल। म्या। नि। यं। ख। डं। नै। की। द। दा। ति। अग। नि। व। गुरा। कं। गुरा। ग। रि। या। न। लि। रि। ता। नि ॥ अगुरा। रु। ल। मा। दं ॥
स्या। म्या। रु। वि। द्वा। व। स। स। दि। का। म्ये। म्यु। उ। ना। मा। स। य। ख। डं। मी। टं ॥ नि। वी। कं। म्यु। धा। दि। व। मं। उ। ल। गी। इ। ॥ १
दयं। नी। स। मि। या। व। दं। ॥ गथा ॥ खनी। पु। की। ले। य। क। य। षु। स। हं। हि। न्ये। स। य। कं। वि। द। का। मि। मू। ली। वं। की। वि
धु। न। न। दि। व। स। म्या। ना। कं। वं। डी। म। गो। वा। न। गुरा। कं। दा। वि। दि। ता। दि ॥ यं। न। यं। न। पु। का। वं। दा। न। वं। यं। म्यु। ति। र्क
जनी। ॥ गी। पु। का। र्जनी। या। नी। या। म। खा। ग। मि। कं। थ। न। नि ॥ अयं। ग। नि। मा। दं ॥ अगुरा। री। ख। डं। नै। इ। ड्वा। दं। व
वा। म्यु। ध। म्यु। र्जनी। म्या। नै। कं। वी। ग। क। म्या। म्या। न। स। यं। वि। धी। जं। ले ॥ ख। डं। न। दं। र्जनी। य। ॥ ७ ॥ ॥ अगुरा। म्यु। क
म्यु। वि। म्यु। कं। म्यु। न। दी। म्यु। ॥ यं। वि। वं। नं ॥ नी। ख। वं। आ। म। लि। गो। वं ॥ स। लि। कं। म्यु। य। वा। डि। गं ॥ ख। डं। ना
यं। न। म। ल्यु। र्कं। स। वं। लि। षु। पु। दा। य। य। नी। ल। कं। वं। य। रु। डा। य। ख। डं। मी। ॥ लु। तं ॥ वा। स। दं। वं। स। वं। यं
दा। स। वं। की। म। रु। तं। पु। दं ॥ यं। धि। या। म। वं। ती ॥ अ। सि। ख। डं। मी। ॥ लु। तं ॥ दं। वं। दा। न। वं। यं। का। म्यु। नं। ना
नी। पू। धि। वं। नं ॥ दं। र्जनी। ता। वं। यं। म्यु। वि। षु। वं। यं। मी ॥ लु। तं ॥ यं। रि। ता। पु। ला। मं ॥ ॥ अगुरा। म्यु। नै। मा। सि

शुक्रपक्षे विदितदिने श्रीहिवाक गुणक कर्तव्य ॥ ॥ वस पूजा ॥ ॥ शुक्रपक्षे नवधन्य यक्ष सा वास
 आरुन। गुरुं गुरुं उ विधनं न गीत वाद्य यतः स न भ। हति (धोयत न क उ समुद्र मं शु रं सति। स
 तु नैन दवा न्ये तु (जेवत ययं द दृष्ट अक (धति ॥ ग उ धन्य पदं श्रीहिवाक ॥ काम धन के गो अ
 धिन मा। य मिति क ल उ क व (०७) अ ग ॥ श्रीहिवाक के व क र्क यी य व पा के र पा थि व ।
 न ग वा श्री महा वा ज विना अ ई क र्थ व न । वि सु ध मं कि र व र न । य द पि । न वी द के न वाने न ग
 रूप का द नं ग थ । पि त वः स्य स्य न्ये न म म क को स म द्या स र व । त म्मा द द्या स दाय को वि द स र वा ॥ १६॥
 म (०७) य वं वि । ग ग ग ग य व र न । त द पि श्री हि न वा न वि ध र्थ । उ क र्थ नि मू ल त वं ता य वा र । अ र्च
 न ग वा द्या वि ल न न ग अ द्या पू र्ण रं ज न नि धं ध मा उ वि धी य त । न उ र अ स्य अ ई उ ति नि मि क
 गं ति । नि मि क उ श्री हि य व व का वं व श्री हि पा क क ल्या दि स प मी व य नो त । व र्ण क शु क य
 क उ न वा नै रं स्य त व (०७) अ य वं क्रि य मा नी हि ध नू धा व क र्क र वं ॥ ग ति व र नानु वा न
 नि मि क अ ई ग रं रं स नि क के न प थ क क र्क य मिति त न ग अ दृ रं दं वि धि (जे व वा प के श्री हि

१५

१६

श्रीहिवाक निमित्त उ व ग अ धन्य क र वि धिः । अ र्च शु द्दी ग य वि नि र्ण क ला य न ॥ ग न
 क र्म त म्मा क वि न र व य र्क य व क र । धन्य पा क व ग द न्ये ग म्मा क व ति न स ग व ली वा न पु
 र्क ॥ य र्क उ त्प न्ना य ता क उ द म पि धन्य पा क व ग द वं ति क वि त । व र्क ग ल । ना नि द्या न व स
 म द्या य गु रं वि दि आ गि मा न । न वानु स म्मा र्म र्मा दी य मा य जि जी वि ष ॥ न वं ना न वि नि
 द वा य गु रं व न वा ग य ॥ अ द्या नं वा र्क मि क कि न वा न नि ध म धि न ॥ ति म नू व य ना ॥
 तथा । न वी द के न वाने न ग र्क उ द नं ग थ । पि त वः स्य स्य न्ये न म म क को स म द्या स र व । त म्मा
 द द्या स दाय को वि द स र वा म (०७) य वं वि । ग ग ग ग य व र न । न वानु स म्मा र्म र्मा दी य मा य जि जी
 स्य स्य व ग मा द ग य ली न वा न ग अ दृ रं र नि मि क स क र्क र वं । स क र्क र वं रं ग अ ई स र्क
 र्क ति ना य ता । अ न्य थ पु ति धन्य न वाने अ ग य म्मा ग अ द्या व को (जे व वा र) । उ र व य व (ग ध म
 प्र नं पि धन्य वं र्क ला र्क र वि धि र्ग रं र मं व पा धन्य र्क र्क र वि नि र्ण य न य थ (ग वा गु य द
 अ ई न वा न ग म नि मि क क र्थ म्मा र्क र्क र वि नि र्ण य ॥ र वि धि र्ग य व म र्क र क द नू श्री हि

स्मृताः। भाष्ये कोऽवलोमादीन् सर्वलोकानि वक्तुं यः। अलि। अथ सादीनी उच्यते। दागसंभु
 वातागदधुधानमिति। अत उच्यते ननु इह पादिति एकत्वे। सत्ये न नवगसंभु। तदनुक्तं
 द्विजाधिवे। यमुना वायनस्यो दो समको सोमिके मरेवे। न्ति धान्यवदमरिधायमवादि
 पविगुसाय सत्यपदं पुश्च कौतुके यदि यवयोः। धान्यात् त्वाकं पुनदन्तं नकार्यमिति न्या
 यमूलं वीदिपाकं यकृत्वा यवपाकं यवार्थि वलादिनदवकिं नगवद्वगनक्या नववांशुद्वि
 धायकं वचनं। अत उच्यते वीदि यवपाको वल्लिधाय पुनश्च। अद्वका लो नित्याना इनादं
 लादिना विष्णुदीनी कालप्रधाने प्रकनलीति धनं। नगरसमूहं सामान्येन वा नूनं पिधानं
 पाकवज्ज। सामूजीर्षकं गदरुयामुहानं। अयमं वा ल्पविशेषकं शुद्धागपमिजिष्टकं ताडा
 वद्वगनकाः कविनवमहं प्रवक्तुं धान्यात् कुवडादिना यकीकृतं न्ति नवद्व
 वीदि यवपाकं यवार्थि कर्तुं। किंतु नवात्रागमस्यैवेति उच्यते नवधान्यात् सकेवे प्रनागन
 वीदि धान्यकार्यमिति निवर्तते। ननदं वा नृपिष्टं। अलादि विधीयते अथ विहितमिति विज्ञा

७॥

११

निमा गूजीर्षकं त्वं वक्तुं। अत उच्यते नित्यं वीदि यवपाको वल्लिधाय। अत उच्यते अद्वका लो नित्याना
 नित्याना इ प्रजापति विमिषु मां कृतां मु कुं यक नियमलेखी प्रापुर्क वचनात्। अथ
 नवात्रालरुतं दं को कालको नो वयेत् क पाठगमना कर्तुं अतः पुनो नवीमा उच्यते नवदं व
 तात्वं पुनः प्रथमतः पुनर्तं कीर्तनं ति पुनो ववा न उच्यते अतः सिद्धं नवा असीधु
 ति दर्शनात् पुन नवा न्ति। सहि वा अविनाय वीयक उच्यते समरिधायमादिति॥
 अथ को जागरे। अलिर्न पुन। अथ जिनं पोर्लु मास्य उच्यते को गवली निजि। को मदी सास
 माख्याता काया लोके विरुतये। को मदी पुत्रय लुक्। काजा गदीति रा विधी। तस्य विनीपु
 यका मि अक्के कीर्तयति यः। नाविकं लेखि पिठकेऽपि न नदं वा नृसमवृत्तं। वेत्तुं
 श्रीलया न नृसमवृत्तं नृसमवृत्तं। नाविकं लोदकं दीत्वा अक्के कुं गि वली वृत्तं। तस्मिन् विनी
 पुयका मि का जागर्ति मदी तलं। अथ वा जिनः पोर्लु मास्य न उच्यते विधिकं ललात्। निनी
 ति निनीधन्ति वा रिधानात्। नाविकं लमिदं अतः। अथ उच्यते उच्यते पुनो ववा पित्रा व

[illegible]

धितस्मात् नृन्यं विदुः पूर्वध्वं । यौ कश्चित् त्वविनिपापकृष्णयक्ष्ण उद्धृष्टी । यमूनायी वि (नृपुं) ६
 नियतसाधयेयं तूमान् । यमायधर्मवाजायमत्येवं या नकायव । वैवस्वताय कालाय सर्वरुत
 दायाय यो जे रुतवाय दध्राय नीलाय यममंष्टि न । वकादमाय विजाय विजुगुफाय येन स ३
 उके कस्य सिले मिश्रं मुी सुदद्या ऊलाजी लीन । समस्तवक्तृपापं तद्गुण दं वने अति
 सिने प्रवा (६) । नकं पुतय उद्धृष्टी यः कृष्णश्चि व उद्धृष्टी । तग कुतुजा तं नापि प्राप्य तं पू
 मोद्धृष्टी । तग पुतय उद्धृष्टी गौ उ पिता तं यो धनान् । नेवा पुतै प्रवा चि प्राप्ता जिव लोक
 मदीय तं । नकं नकं गौ उ नमिले थः । तदं वसा दि व रन य म्मा ता येन मा दि वा या पि उद्धृ
 ष्ठी तान दं वता पूजा दि का य्य पुदा प्रया पि न्नी उ नकं गौ उ नदी पदाना दी नि । मिथि दे (६) उ
 उ यो द ष्ठी उद्धृष्टी गियु म वय नान्नि लु यः । मरु । जिवा यो वा तथ पुं ना सा वि जी व
 उद्धृष्टी । कुरु य कुरु वक र्गया कुरु मं वदिया व (६) । य विष्णु म ग्न्य व र्गं पठि ती न द ना क
 री । उपवा सखा पक ह ल पु मा ना रा वा व उपवा सखा वा पि विन्ने उ व । अथ रत्न मुहुरा न

कादिकि ॥ कं गं हं मं दि ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

दिवावद ॥ तदकमैरुवं सुर्व विष्ठाः प्रीति कर्मयर् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

महाराजगण॥सखनाउंमुपवगादिगीयायासिगारवें॥गसीडागदितीयायीडातरीसीउयेंसुसा॥
कारिकेउकुपकसादिगीयावांअधिचिने॥यसीयसनयायुर्वेगाजित॥सुगदंसुखें॥गगीय
सदिगीयगिखागालीकेंयुधिचिने॥असीनिउगदंपार्थनरीककांमतीवृधे॥यतेंनरुगिनी
हसाहोकरूपूरिवदने॥दानानिवप्रदंयानिरुजिनीसीवि॥गवत॥सुकुलिकीववकोदि
पूजासुकावराजने॥सवरागिनी॥संप्रसासुदरावेंपुपत्रका॥पुपत्रकागिनीया॥यम
॥विउमुपकायमदुतायपूजयें॥अर्थवाउपुदागंवीयमायसदउदये॥सहउलेये
॥१॥उरुगिनीहि॥अर्थ॥यातरुगिनीडातरीनिमकुसध्यादंसुगभिनेंलोदकनादिनासा॥६३
ययिवातेंनसदमसंयमना॥पूजयें॥गगुमकु॥धर्मवाजनमकुसंनमसंयमनागुड॥
याहिमांकिंकरे॥साहं॥सुयपुनमी॥कुतें॥अनदानमकु॥रुगिनी॥डातरी॥या०यकि॥
यथा॥डातरीसुवानेजातें॥उंकरुकमिदंशुर्त॥वीगयंयमवाउसयमूनायावि॥गवत॥१॥
॥१॥उंकरुकमिदंशुर्त॥वीगयंयमवाउसयमूनायावि॥गवत॥१॥
॥१॥उंकरुकमिदंशुर्त॥वीगयंयमवाउसयमूनायावि॥गवत॥१॥

रुंनकरुग॥मि॥असीव॥गसाहमीगुकाहमी॥रुविष्णु॥॥गसाहमीगवीपूजी॥गगुसं॥गमुद
क्रि॥गवानुगमनकांरुसर्वपापविमाकली॥अजविनिधि॥अयमादवगुव॥कारिकामलय
कस्यनवमीरुगसिद्धयें॥पुवहीउडमझोडीपूजयेंदीपमालया॥मासेअउरुयुत्पुर्णविधि
नापूअवलुका॥गलुलंअप्रातंवीनवमीकारिकसर्व॥अगदायीइजगि॥गथा॥कारि
केंउकुनवमीपिहलंरुफिदासदा॥गसीस्नानेकरीदगमनकरुलसापकी॥॥यंय
गगानेवमीसोकारिकेउकुपक॥गिस्ततिः॥॥अथगीहनेंरुकां॥वुसपूना॥॥नुका
दग्धा॥उंकरुकांकारिकेमासिके॥गव॥अवाधयेंसुसफकुंवागेरुकिंसमन्ति॥गजीपुस
फमित्यधेवी॥धनेंउदिवेवायधववाहपूना॥॥कोमदस्यउमासस्ययासिगादादशीरुवें
॥॥अर्थयेअसुमीगजगस्यपूर्थरुले॥॥यावलीकादिवरुनंयायव॥जीवमाधवि॥म
रुकोडायगंगवदगुरुकोनेजायगं॥कलावेसमकसीलिहादग्धांसयमानन॥मसेववी
धनाथयि॥मीमनुमूदीवयें॥॥महंउरुडेवहिदुयमानोरुवानसिद्धिदिगवन्दनीय॥यापा

तवैयं द्वादशीकोपुदाखाडाग सुजाग सुथलाकनाथ ॥ मद्यागता निर्मलपुलुवन्दु शत्रयप्रथा
 विनाकनाथ। अहं ददानीतिवधर्महं गो कृति सुजाग सुथलाकनाथ ॥ उर्वकम्पलिकुर्व
 ति द्वादशीययगतिनि। ममरुको नम। गुष्ठा यानि गंयवमो मिति ॥ तद्वमकादश्या द्वा
 दशी वादिवात्रये नपादयोगवधमदवी काने। नरुथयोगमरावें दु द्वादश्या मव यधारे
 विधा ॥ मेजअपादं सुपिगीहविष्णु वेषु वामधु पविर्वर्गं य। यो प्रावसनें यसु ना विरुको
 विपुद्गात मासवउरु मने ॥ निजमहा वादिवा काने स ध्यायी पविर्वर्गं। जन्म गुपादयोग
 वि द्वादश्या मवकावय ॥ इति ॥ इयधु उत्तान द्वादशीमचकनादि ॥ अथवकपधुकां ॥ ७४
 ७३। उकादश्या मवकावय ॥ इति ॥ इयधु उत्तान द्वादशीमचकनादि ॥ अथवकपधुकां ॥ ७४
 उकादश्या मवकावय ॥ इति ॥ इयधु उत्तान द्वादशीमचकनादि ॥ अथवकपधुकां ॥ ७४
 व्यातथादि सा मा सरु कदा मवव। तथैव य ० नि ॥ उकादश्या समासा ययवद्वे पुलुवन्दु
 का। वकाधि तनुना ग्रीया नीर्न मा सधु किं नर ॥ इयधु उत्तान द्वादशीमचकनादि ॥ अथवकपधुकां ॥ ७४
 ध्यायधु क मिति पधितं पु पिद्या मकादशी पुरु गियधु दशी श्रयावत। अन्ना नरा उर

परस्य नवस्य गमिनिष्टे ल ददगिमा उ वजम धेन्या ॥ अथ कार्तिकी पुनप्रादा ॥ यो
 पुमासा उ सम्यग्गो रुकादा मादवः सदा य सि चरुनियतं न कर्कवी नक हाडने ॥ कार्तिके यो
 किर्क यो पुमासा लु सायवासा धुयधुवि। सा विष्टा मरु ल विन्दे तस्य यो लो कधु ग कृति ॥
 अ। ग्रयं उयदा मर्क कार्तिकी रुवति कवि। म हगी सा गि धि र्द यो सानदाने प्रवी क मा ॥
 यदा यामी उरुवति मर्क गसा गि धो कवि। ति धि ॥ सा पि म हा पु ध्या मु नि रि ध्य वि की र्ति ता
 ॥ पुजाय ली यदा मर्क ति ध्ये गसा नवाधिया। सा म हा कार्तिकी पुा का द वाना म वि ड न रा। अ
 (ग्रमी ० क कि का। यामी रुवली पुजाय ली मोहि ली ॥ तथा। म हा पु ध्या कार्तिकी सा उी वं नो
 ४ क कि का सु यो ४। वि ध्या सु यदा रा न ४ क कि का सु व य नु मा ॥ स यो ग ४ प म को ना म पु क
 व धु मि ड र्ने रु ४ इति कार्तिकी पुलुमा मचक नादि ॥ अथ मर्ग जीर्ण क ल ०। रु वि ध्या पु म
 (६ ॥ ययं मा ग्री जी र्ण सा सि ध र्ण रु व ग स क म। पु ध्या पा प रु वा ध न्या नि वा ध न्या गु रु पि
 या। सानदाना दिर्क क मी गसा म क य म्भु तं। मधी वयं गुहा उरु प क स्य पु क ग ता

॥ गथा ॥ श्रीदिदी पुणियद्रु कामा (ग्रं) सासि सिगं ग ना। गमी पीयदिलसं ग सुय्य गुहजो ॥
 समाधुदिनं ॥ कथया ऊं हं मिमी नामदिवाकन ॥ सागुली वस्यमा समु कुपकं ॥
 तिल्या। सफसी गं नसाखाता लो के सिन मिगुत प्रसी। ग गुयवा सकरु को। रकु धध ॥
 निवा। दग्गि के ॥ कुपकं ॥ कुयवा जो लो व कु दडी। गसासा ना प्रयं दवीं न के पाषाडी ॥
 उने ॥ पाषाडी का व पिष्ट करी डने निलय ॥ दग्गि के ससुसी सो पिष्ट के विवि (धर्म) ॥
 धी (धर्म) सासा पुका धं ॥ सुसाति के गुमय ॥ ॥ सागुली वसि गं पकं दो दग्गी नियत ॥ सुविः ॥
 क तो पवासा द वें ॥ समस्य ऊना दनी। पशु ग वा डलमान ॥ य ॥ गवा क ता ॥ न ॥ य ॥
 वडी हिरु नीचा ॥ दग्गि प्राय रुकि ग ॥ दवा वा व न रुका द व स्य पुन न द वं ॥ सफ ड
 न स्य लि (ग्रं) मया ख उवर्त कनी। गग व न स्य सा द न ते द ख उ मिह रु मी ॥ यथा ख उ
 उग सार्व ल मे वपु र्वा ॥ गथा सिला अख उ नि पुगानि स स स कुवे। पुव मे वानू सा
 सैव वा उ म्मा स्य विवि ॥ सति ॥ व उ रि व व सा सै लु पाव न पव मं स न। विडा दा व स्य

॥ ॥

॥ ॥

दग्गि क स सफ मा द व वाणी नागार्त रुक ॥ सुव दग्गि का पादा दि पाद उय वा दि ली स ग लि व ॥
 दग्गि यो व दग्गि (ग्रं) म ग लि व ॥ पाद दग्गि न पुति पाद विं ग ति दग्गि पिक दिन उय स्या व दग्गि
 न व वा विं ग दग्गि अधिक दिन ना गुम पुव म ग न ता नू ति ग्गी या स गुया धि के विं ग नो उ म्मा गु
 स्य वे ग ता म ग नं ग स्य ता ना ति न्नी वा नं ग य व ऊं यं ॥ यथा ॥ क पू य कं रु गुदिनं विं ग रा स
 विव ग्गी ति ॥ उ के विं ग गिका द्वा द्वा न वा न्नी ने व का र यं ॥ ग्गी ति प ठि ग म ना क व ॥ सुय्य स्य विं ग
 खा व रि गि (ग्रं) विं ग ति दग्गि अधिक दिन उय ॥ समु ल वं विवि ग रा स्य व दग्गि न नि वि द्वा पु थ म दि
 न गुया दग्गि विं ग ति दिना नी ति ह्म यं ॥ य व्वा कि समाना थ म व ॥ गथा ॥ ति यं ॥ न वा न्नी ने व न दग्गि
 न व स्य ऊं ना द न ॥ न क पू य कं ध न पि उ ला यी ने व का र यं ॥ गथा ॥ सुय्य व विं ग रा स्य (ग्रं) स व
 ति (ग्रं) ता नं ति उ ना ति नं न दग्गि म दग्गि उ का मा दि व सें मा सें थ यो धं ॥ यथा यथि म ती ग
 गं दिन क नं व उ स थ यो धं मं गुा द्वा त गुन वी गथा व म दि नं गी ग दि सी व दग्गि ॥ यथि म ती ग
 मा स्य (ग्रं) यथि म ती ग्गी ति ॥ यथि म ती ग्गी ति यान् ॥ रुसा स्वा ति पुन व स र्म ग नि व ॥ यथि म ती ग

८३

धातु मूलायागुव (६) चरं वगिधनं रिजानलं वा (६)। गुर्गु मकु विमखया शुभ्र (६) सोम
 नुजी वा रुवं। यन्तु (६) मरुतगानकं चः पुरुदं गुर्गु नवा नैः कर्त॥ धनं धनिष्ठा। जनलः कर्किका।
 वा रुदं मरुतिष्ठा। गुर्गु मरुतिष्ठा। मरुको श्रेष्ठा। उवग अग्निनी। तथा मरुतवाजः॥ वृक्षा वि
 म्र वरुस्यती मरुधमामाकं दुको म्रुादिहो मेरुं विग विमखय धनं मूलागि वंदो तथा।
 मरुको वा रुदं मरुतगानकं चः पुरुदं गुर्गु नवा नैः कर्त॥ वृक्षा ४ विष्ठा २ वरुस्यती ६ मरुधमामाकं
 मरुको १० यो म्र २० वायु १० धन २० वरु १० मरुको १६ वा रुद २४ कर्क २०॥ यथा अग्नि
 वा कर्किका श्रेष्ठा मूला ऊपा दकं पुर। रुगुको मदिनं विरुति (६) ना शान्न वीदनं॥ मूनिव ६॥
 यनं मरुतगानकं चः पुरुदं गुर्गु नवा नैः कर्त॥ वृक्षा ४ विष्ठा २ वरुस्यती ६ मरुधमामाकं
 मरुको १० यो म्र २० वायु १० धन २० वरु १० मरुको १६ वा रुद २४ कर्क २०॥ यथा अग्नि
 वा कर्किका श्रेष्ठा मूला ऊपा दकं पुर। रुगुको मदिनं विरुति (६) ना शान्न वीदनं॥ मूनिव ६॥
 यनं मरुतगानकं चः पुरुदं गुर्गु नवा नैः कर्त॥ वृक्षा ४ विष्ठा २ वरुस्यती ६ मरुधमामाकं
 मरुको १० यो म्र २० वायु १० धन २० वरु १० मरुको १६ वा रुद २४ कर्क २०॥ यथा अग्नि
 वा कर्किका श्रेष्ठा मूला ऊपा दकं पुर। रुगुको मदिनं विरुति (६) ना शान्न वीदनं॥ मूनिव ६॥

१. अथ कन्यागणैः सूर्यकाम्याय धृतिहारना विधिः ॥ ० कालकाम्यादं देवतासमिति कं चित् । वस्तुतः
सुयत्रीवर्गं साकुं देसावं देवतासं पावृणधर्मतादिति प्रागुक्तं भव ॥ ॥ अथ यौगकल्प ॥ त
उक्तप्राप्तमीयुपायको ॥ तस्यैसाग्निना पूषयूकं नक्तृतीयाकं नाष्टकायागीकृता पावृणविधिना
पूषयूकपक्षात् नैनागुं देव्या ॥ यथा विष्णु ॥ अथ कास्तृणकसी स पूषे ॥ गुडं कृता अन्व
ष्टकास्तृष्टकावद (मोहता) साकुं वितासत्रै पुविता सत्रै यपूर्ववद्वाज्रभननौ उ मित्वा न्त्यादि ॥
यथा ॥ वायुयूना ॥ पिशादानायमूलं स्रष्टु कास्ति तु पुवव ॥ कसूयकं वनिष्टा य पूर्ववैन्दु
वितायागं ॥ उडा यत्वा द्वितीयायागं तीयावेष्टा देविकी ॥ आया पूषे ॥ सदा कार्यामी सै वन्ना लव
यथा ॥ भर्गः ॥ कार्यात्तीयात्वा दवड युगा ॥ विधिः ॥ अन्वष्टका विगृह्णीतु नित्यमैव विधीय
ते ॥ यायाया न्नाय उधीया काश्चि कृयादि (मयतः ॥ अथ गुणैर्द्विजैः कृयात्सर्वेत्थेन पिनित
सु ॥ कियं प्राप्ति (गुपी सिपन गुं देवमादगं) उन्दी न् देवतायागसम्भवादेवं उडा यत्वा
वेष्टा देविकी रक्तं या ॥ अथ अष्टकायैर्द्विमागुदायत्वा सुमिष्टाष्टमीति (मरितु वयनादागुदा

७१॥

मदी गान न न न क प्रारु सो प्रय पोष माय हा लो दी य म स का य द वा यी मी से (म स द
 ता वे व (म ११) गी वी उरु म ध मायी जो वि ति (म ११) लो नो ति धाय अथ वा अत्त स र व त मा द
 वि प मु रं ने व य था ल्प ती पा के व (म ११) स्त नै क म्प म्प न क लियी । गु व य रं स व सा यो स
 रू धा (म ११) प य म्प ७ । नू ति कु न्दी ग य वि जि स व व नो त् । अ न्ति ति उी द न र व ११ प म्प दि
 ल प ११ अ न्त्स के ति । अ न्त्स का य न दि नै म्प न न व मी य । (म ११) न्त्स क मि ति (म ११) लो व
 नै प व दि न नो ति ग्वा । प द गु व ११ दि ति के दि त अ गु व न्त्स का यि त् ११ दि ल्प गु पि त् ११ ७७
 स र व न्त्स का स या ग लु स र व ति ति यी य रं । अ मा वा म्प मि म्प र का ति म्प म्प र का मा यी
 पु ति य ल्प म्प क प्र ग यो द जी व न्त्स द व न न रं गु त ल्प अ क क ल नै नि ल्प नो द पु र य ति
 ११ अ क म नै स र वी (म ११) न र के पु ति य अ नै ति । अ क क व (म ११) न्त्स का उ य गु व दी धा वि म्प व
 च नो धो गु य रं । य नु अ न्त्स र वी म्प मा य मि ति (म ११) लो (म ११) मी । व क म्प र वी स र वी स
 को लो म नै र व का रं रं गि क्क म्प ग य वि जि स व व रं । त य म वि म य । न र य म ग उ ल्प म्प

अ क म पि म ध मा य म वं ति वा यी । व र न न्त्स य म्प इ व ल्प दि ति के वि ग् । व ल्प ग लु कु न्दी ग
 य ति नि र क ता क्क को अ क म रि ध यै व न्त्स र वी म ध मा य मि ल्प क लो कु रं य व रं म व य व
 ल्प यो नू ति य नु नु डाले पु थ मा य नु ११ के १ स क य य ति ग् नू ल्प दि नो पु थ मा य का
 म्प ११ के वि ध नै य द पि त ११ स र वी ११ म म्प म्प म्प की र्थ दि ति के लो नू ति (म ११) लो व रं । त क्क
 र व न र वी (म ११) लो य पा व र व यो लु स र व ११ उ ल्प ग य वा य पु नो (म ११) क क म ग गु व ड र वी ११
 ॥ त य म वि म्प ॥ यो ध म्प ति य द द वि लु का र म्प र व ११ त क्क उ स म ल प र म्प म ल र ड
 ति की र्ति ता । त म्प म्प नै य यो द म ल र वी वि य रं डे नै । म ल्प म्प क रं द वि म ग स द पि क
 रं व ११ ॥ व ल्प र व र व ११ उ य नी वा र मी लु र । त म्प म्प नै त य द नै उ य द म र वी (म ११) । स
 क्क का दि गु दी द वि क रं र व ति क ल म्प ११ नो ड म य पु र व ल्प द य द आ ड य म्प स क्क वा र । त म्प
 अ पि अ ज य द द व र व नै र ड र व र व नै ग रं व र ति । गु त द न न रं लु क्क का द जी म न न र
 दि । यो ध म्प ति य यो द म्प म्प रं वि य य व र ति । स म स म्प म्प रं द म्प म्प स र वी क म न वा य
 यो । त य म । उ र वी के त य ल्प लो पि त म्प लो नै र व रं । यो ध उ र व र न क म्प वि य के वि वि (म ११)

पिबु न । असुयं यथा दवान् दिवानात्मानमवव । गोवसर्षपकल्केन समस्य र्थस्वकी
 तनू । कृतस्मान्नेसुभाकार्यमलक्रीनागनेष्व ॥ गगनागायलान्नु ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥
 निःसम्पुत्रः ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 गोवसर्षपकल्केनागदितजगोभागवृक्षतादिरिः ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 वृगा ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 सद्यो वैश्ववसूकेषु हस्यत्येवमनुः ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 गीकवृद्धादनेन कर्मणा मया ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 उपकृष्टीगके असमाजयद्वद्व ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 आयुवागोपावद्वृक्षसमाकसम्यदि ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 पृष्ठाया जीपुक्कवा ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥

७॥

७२

यथा आवागोपाव ॥ ॥ अथमाद्यकल्प ॥ अगुसं जानिडकवायदासं जानिगागद विमं
 जानि वृत्तं कृष्णम् ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 यथा जाकि सत्यवसु विरुषले ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 वयुक्तगता ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 यत्तुस्युष्टोपमान ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 यो सर्वपापे ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 दीपुवादे ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 पूवा ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 ले ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 अनयो ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 दपप्रवा ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 गवन् ॥ १५॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥

१॥ मकर सं नवीमास्य (म वि द्या युत साधव । स्नानं नानं नमं द वय (था क रु ल दी र व ॥ पु ग न
 २॥ स म यो य स्नाना नो न म सा श्रित ॥ वा स दं वंद वि वि र्म शी ध न श्री स म रं न त ॥ पु ग न कु द म
 ३॥ पठि ता स्या मा त ॥ स्ना ता ॥ धी द ता प (० ॥ ॥ उ दि वा के व ज ग द्वा थ उ ता क व न मी ॥ सु तं ।
 ४॥ य वि पू णु क र षे द मा घ स्नानं म दा यु ती । अ उ म क र रु ग्ग ति धु मः । सो व मा य प्र व ज्ञा त ॥ स्नान
 ५॥ मिति व रु व ॥ त नि धा कि क । सो व मा य म दा थ हा वा त । अ त उ व पु र्द न सं क ल्प वि ष यी
 ६॥ यो णु मा स्या म मा वा स्या मा व स्या स्नान मा य वं दि ति । मा घ स्नान पु क र दी रु र वि षा य वा ल व र
 ७॥ न स म य पु क र क ता लि खि त । म क र सं व वा वि ष य श्री म न्नी म क र स म य य ० नी य ॥ २०
 ८॥ अ स म रं गा थ त्वा त्वा न्ना ग । य ग्ग ल स ग्ग दं प्र व मं वा या वी धि त (ये वं ति ॥ म त्म पू र्ण ॥ ॥ स
 ९॥ छि ती थ स द सु नि ष छि ती थ ज्ञा त नि र । मा धं मा सि स मा यी ति ग जी य म न स ग मं । ग जी ण
 १०॥ त स द सु स म स म द त स म य रु ली । पु या ग मा य मा स म य अ द स्नानं न ग रु ली ॥ ग जी यी उ
 ११॥ म न रु ॥ ग जी यी उ व ग द कि मा धं मा सि न वा धि प । व रु य ग स द सु क न प र कि स मा ले

मा ॥ दि नं दि नं स द सु लु सु व रु नि मि श प त न न द रं दि ग जी यी यो मा धं मा सि त मा न व ॥
 त था । त फे न वा वि द म य लु य रु दं स्नान मा य वं ॥ अ उ द रु ल दं त छि म क र सं दि वा क रं ॥ व दि
 १॥ स्नानं उ वा प्पा दो द्वा द श व रु लं ॥ त ज । ग दि गु दी धी कं न श्री त व रु गु ली । द श धी
 २॥ दं व र ता नं व ज त धा य म स्नान दी । म त श्री त रु ली वा ज न रु ल न द्वा य स र्ग मं । स द सु गु नि त
 ३॥ स र्वं ग रु ली मा क रं व र्ण ॥ ग जी यी स्नान मा गु द ल रु गं मा नू धी न प । अ उ व त ग जी व रु य
 ४॥ क ल्प स्नान मा य वं त । प दं प दं ज मं व स रु लं ज यी ति मा न व ॥ त ल मा स ल क (वो व ती थ द
 ५॥ य श्री नि ल य ॥ त थो पु क र ल यं द कि मि न ना र्थ छि ड न म नी ॥ मा धं क प्र ष मी रं मी सा स
 ६॥ पू कं ति पा गु कं । पु र्ण पू र्ण ॥ मा धं उ क प्र द्वा द श म मा हि रु ग वा न पू र्ण । उ ल न त्या द या
 ७॥ मा स ग य स स्ना स द क रं । वा डा द श व (था रु मी त मी तान व ता व यं दि ति । ति ल ना मा धि प
 ८॥ लं व वि पू र्ण क र त ॥ स र्वे ॥ ग स म यो धि त ॥ स्नान ति ले स म य उ रं द वि । ति ले ले नं दी या
 ९॥ श्री दं य दं व रु दं पू व । नि रं द यं ति लं रु गु दं ग व्वा य त था ति ला ॥ ति ला न्द य वि पु र्ण

लक्ष्म्यं यथा गितान् ॥ यमः ॥ माघं मासि वटं व्यापः किं हि दस्यु दिगं यवा । वृष्यं यमपि यावु
 लेकं यतर्कं पुनीमर्दं ॥ माघं मास्यसि गं यकं वटं व्यापय उदङ्गी । तस्यामस्य दयं यं तावीना
 गोने वं किं गं यमं ॥ सप्तमि वटं ॥ जनकस्य दिगं कां कं यमं यं उदङ्गी । तस्यामस्य
 वर्यं युयसा न सर्वपाथे । प्रमूयानं । जनकस्य दिगं नति न स दधनि ॥ जनक उदयं वं
 लाया नित्यं न नावि गं ॥ विष्णुः । माघं मास्यसि गं यकं व्यापका मय उदङ्गी । कामविष्णु
 पिसाका यमं शिव वागु विधाना ॥ तथा सप्तमि ॥ सवरावलि गं तानो या उदङ्गी यमं उदङ्गी
 गी । गणेशो कालिका पूजा सर्व विधाप शनयं ॥ गणेशो जागर्त कला पूजा पितृ दत्त
 प्रियी । नृसिंहा नृतरु गं कामान् प्रिय पूजयमानि व । अगुहान् उदयं वं लाया को पूजा
 जागर्त लादिका लीने युगञ्च पुदीष वाचिनी । उरय उदङ्गी व्यापका वप्या को य उदङ्गी
 जी विद्वं वगुं क्षति । नदं वाह ॥ कामविद्वं व । रुविष्णु ॥ माघं मासि गती या मी गु उदङ्गी लव
 दस्य वंति । दानं गुयस्करं गाऊ नृ लीला पूजयस्व वंति । गुठन उदङ्गी यं दवी लव

धनस्य यं उदङ्गी । तृतीया यं उदङ्गी । पुकं वला ७ उदङ्गी न क वं व व य उथी धी पञ्चा माघं कं ॥ तथा ।
 माघं मासि वटं व्यापकं ववसा वा व्याप गिय ॥ पञ्चा माघं कं दक स मे पूजा का यमं सप्तमं । वती
 विनायक । सप्तमं ला नृति पाशाला र्गु दं वा व दाना पितृ धेवे । तस्यामस्य यमं ॥ तथा यम ०
 कि । पञ्चा माघं पूजयं नृ श्रीं पूजयं पञ्चा वा विरि ॥ सप्तमं धर्मं लयनी धी पूजयं नृति र्दं कत ॥
 नृति गं लय ॥ रुविष्णु पूजा ॥ माघं मासि गता गुका या व उथी मदीयमं । सागानो धा किदा
 नित्यं कं यमं किं सदे वदि । सानदाना दिर्कं कर्म सर्वं मसी कर्तं विरो । रुवं सप्तमं गु लीनी
 उका यमं विवात्र ॥ लवने यं उदङ्गी गु उदङ्गी लय ॥ दत्ता उरुका विष्णु ॥ रुवं साद
 सिर्कं लेकं ॥ उदङ्गी वं दाना मगसी । मेरी सपूजिता । सोराग्य म उ लेकं यमं ७ पञ्चा माघं जीन
 पि लीनी । अगु उदङ्गी दय लरं य वं वगुं ॥ सप्तमं गानीति यमं वं वना ॥ जी पञ्चा माघं नय ग
 दन ॥ किं नृति निरु यं उदङ्गी लिखित यमं मी लिखा दि पुस वे वरु ॥ उदङ्गी यमं नृति वाचिक
 धी पञ्चा माघं विवात्र ॥ माघं सप्तमी ॥ रुविष्णु ॥ सप्तमं गुदं उदङ्गी गुका माघं सप्तमी ॥

[illegible]

श्री कृष्ण सदानन्दके श्री नन्द । स्नानदानैकया दामोद वाचनमूया धर्मा । सर्वे गदकर्मयुक्त न
 वसी क्रियार्थ नये ॥ ॥ अथ श्रीमत्साम्पदा । ॥ यद्यप्यस्यैव बुद्धिर्गोदादग्निमथ लावता
 अग्नीष्टुविदिनैश्च नगकः समूपाधिष्ठ । गतः पूज्यमिति महीमतिथिपापपुष्पाणिनी ।
 उपाध्वविधिना ननसगकुं द्विष्टुमन्दिन ॥ विष्टुधर्मा ॥ मगफादौ गगधनं माधमासिष्टुजा
 पतं । उकादग्निमिगं मकं सां पवासांति गं दिव्ये । द्वादग्निमिष्टुलायार्थकलापायात्पुम
 युतं ॥ तिलस्त्रयीतिलो द्वाकीतिलदागीतिलोदकी ॥ तिलस्य दामोदरां क्रायमिष्टुलीनावसीदति ॥
 सकृदुषजिलीरुता सर्वपाथे ॥ पुमयार्थं । त्रिगद्वयसदृशासिष्टुलोकं मदीयार्थं ॥ अग
 रांमनकं गताद्दमीयं । विष्टुनरुस्ये ॥ माधमासिष्टुगं मकं उकादग्निमिष्टुलायार्थकलापायात्पुम
 लेकादग्नीरुकलागस्यदुलमग्नी ॥ अस्याश्च ॥ कर्मापवासाय ॥ दिने वनादद्वादशी
 युतं कर्मा ॥ यमः । माधमासिष्टुलान्यस्तु दामोदस्य ॥ पुमयकृति । सर्वसत्त्वसमाकीर्ण
 नरकं सवग्नि ॥ माध्याह्नेष्टुमासीयगयाश्च ॥ मिष्टु ॥ मिष्टुष्टु यदा ज्ञेयि ॥ मिष्टुष्टु

[illegible][illegible]

युक्ताऽनोऽतः कियदि । मरुमदं ति विख्यातं युक्ताऽदि कूलमृदु नै ॥ अतः सि
विधं वा नदी महा वा नदी महा महा वा नदी कंदन । कं वले गुप्ता तु लानि वा नादि
यो (रा) पिनेयु धु जनि को । साने क वक्रिया नाये धु नं गत रिषा गत । सफ जन्म
रुवै मुक्ता विधवा इरु वा धु व । दधति गत रिषा यी सान व लो यव लो वि विव गमि
वय लो (रा) वि (धु) ध इ रव । धन मि व क य नाना सफ जन्म किताना वि गत गि
यदि कं रं कं रि कं क लाना नि गि ॥ पुर्वे ग वा क ॥ ली ला साना न धि का वा गुप्ता
दधति गती या यी दधति गती वि (रा) ध गत धु इ वि द क रि या साने ना व नै य ॥ कथ
वने गि जा वा लि व र ना ग मृ दाना म पान धि का वा जे गु वि (रा) ध गत धु ल रि धा ना
॥ मृ दाना म रं हा व ग मृ द ने मो गु स सा मा न्य सै व क र वा गा व ग मा ग । अ न्य धा वि
(रा) ध गत धु ल स वै य य ॥ साने वि (रा) ध गत धु स वि धि क ल मि ति क रि त ॥ त
ने साने क रं गी ला दि व र ने द य स उ न क नि ति क क सान पु क र (रा) पु रं त

सप्रतिगता । यासी जन्म क गत रिषा ता सी ग वि मि क साने दा ध पु ति पा द क र ता । उ व म न्य
(रा) ध य को वा र (रा) न स मा य कं ला दं ॥ सी की यं स पु क रं ला ग स वा न्या य ला त अ न्य य
धु क र ता । मृ द स्या पि वा ग धा वि साने वि (रा) ध सै व नि धं (रा) न नू वै ध य स । न धु वि (रा) सी की य
त्यं ध न र य यी दधति गती ला दि व र ने स्या पि वा ग धा फ मा उ व नै तं सी की वा दि नि ग मा ला व मि
ति वा यी । सा मा न्य मा न स्या नि धं धु लं ना रु य उ रं सी की वा यं क य ॥ पु क रं सी की य ला रु सै व वि
नि ग म क र कि श्री । वा ग धा फ वि स य तं न (रा) म र्था (रा) नि धं ध प व रं स्या ग सा मा न्य वि धु
य डी वि तं उ प डी वा वा ध ला प कं ॥ प र्था दा स ल र वा पु स रं ॥ स्या त वि (रा) ध गत धु ल रि धा ना
ति वि ति रं ग उ द क ना दि पु रं क स्या नि धं ध स्या इ धि क रं ल वं दि ये द वा वि (रा) ध गत धु ल रि धा ना
ध गी ना र वं दि ल नू य ॥ धि क रं ध पु ति पा द ना धः । य तं ग ॥ य वि व रं थ दि ला दि व दि ति
अ न्य उ व मृ द अ पि स व रं द य यी दधति गती ला दि व र ने स्या पि वा ग धा फ मा उ व नै तं सी की वा दि नि ग मा ला व मि
पु रं वा ग धि साने का य ति ति वा मा रु उ व ग स्या मा इ द ध ना दि पु रं ग व ग स रं क मा नि

यद्यदसुखादिति॥रविषा॥येषु कस्युत उदयः॥साया किवमन्त्रि॥मनीयी उचि॥गण
दीनसुपुता॥तिजायते॥सुन्दः॥वसुकावतमासायत॥तीयायी उचि॥गुणकयकस्यपूय
कृतिले॥सा नसमायते॥अथवायवतीदती सर्वकामसमृद्धयं॥नृप सौराग्नतीया॥
मासा॥वदयं येगुमासं उचि॥नवागन्धनूलं पनी॥उक्तिं गन्धं यतीदया विप्रायसितावाससी
वारदं चदमाप्रीतिरुतिपुगमिदं सती॥उचि॥उक्तायामथयचमी येगुमासिगुणानना॥
वीरुसलाका नानवी संपाकाकं नवाकमा॥गमा गी पूजयंक उचि॥नली नी नृमृ यति॥
अथवायवती काय विपुला कगतिपुया॥अगुतिविद्वेध॥उचि॥वसीवदुदयसमृद्धिनी
आका॥दमनकाधिकारं॥दं विपुवा॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा सर्वयकाविक॥
हवसुखसौराग्नमनं कन्दयुर्वदं॥अगुतिविद्वेध॥अथवायवती कन्दस्य क
लादिप्रागुक्तता॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
नागानविगताथिमीरागपा॥ले॥पूजासर्वयकाविक॥अथवायवती कन्दस्य क

२७

गस्ययदिवसं तवाजययकूलतरे॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
कार्यमभाकाकं पूजावासनिकीदिसा॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
सासिसिगाहमी नगी॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
निर्वृतिमाप्रीति येगुमासिसिगाहमी॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
कमायुमाकृति सफरु नसमानव॥कलिकायानमनु॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
समृद्धव॥विवासा॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
लेवपनीयी॥नच॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
प्रातिपदिकलि॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
नवीविषयतया संपाकाकं नवाकमा॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
वकिरुकि विविवि॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी
दित॥अथवायवती कन्दस्य कर्कशा पूजा दमनकादि कि॥कलायागिननी

यतः । यथिषीयानिगीर्धनिसवितः सागरादयः । सवृत्तोलिलयामानि वै गुमासिसिगावृत्ती ।
 वृषपूजमहारागगानेनाः कलनन्दन । जम्भायागुरुसंरुगपायलोहितमंदन ॥ स्नानम
 कः । रुविषा ॥ वैगुमासिसिगं पञ्चदश्यां उवि । जषगः । नवाविष्णुगदगत्तानरुयपू
 र्वावृत्तः ॥ दंवीपूजा ॥ नवम्यापूजयद्वी° सदिषासुनमदिनी° । कंकमागुत्रकप्यनः
 धूपात्वा बुजदयत्तलिः । दमनेमंत्रपठेत्तविजयाखीपदं लकं ॥ वैगवेनी ॥ महाकुर्वंरुवि
 षुपूजा ॥ वैगुगुपूजयादश्यां दमनेमंदनात्मकं । कलासीपञ्चविधिवत् वीडयद्वार
 जनेननु ॥ गगुसंपूजिताः कामः पूजयेत्तविवर्द्धनी । कामदं वस्तुयादश्यां पूजनीयाय
 थाविधि । वतिपीतिसमाय कं द्रुज्जकमालिसवदा ॥ संपूजिताः प्रीतिगन्तव्यार्थः ॥ पूजा
 चैव सध्याद्रं स्रवांसिद्वन्द्वविडादिवर्त्तः । कंकुल्लुलं वाज्रः । कामगवसुत्तसध
 नः सर्वदक्षिणाप्रीतिपूकं वामं वगिसदिर्गं कामं वसक्तं । विलिख्य पुष्पधूपदीपनै

[illegible]

मायसकास्य। यदुद्देश्यं कर्तव्यं समनर्तकं निवसन्निष्ठा। उपाधिः प्रवृत्तिः १ कृ
पकं मस्यानापिते। तावत्कीर्तिः तं प्रीतायावत्ते लनसम्य (मते)। कथायननिवः
सिद्धा। अस्याकोयनकं न विना। तावत्समादयु विविधो यवनिर्देशेन नगत्। दिवाकावि
दुमास्यनाजीवदधिशकुः। धात्रीरुलेष सकस्योमलजीवसमसदा। आह रीम
ननिर्दीतथादानपुतिगुहो। कर्मयाधमनश्च विस्माकालविवर्तय ०। अह
आधिमाध्यातिगर्तो मोडु मेथनात्। स्वप्रगः सादलजीवी कर्मवेवागुनिः १ रु
। अ (ध) तानयकं याति दानानाध्यातिगत् ० ले। पुतिगुहीरुवंडीगी तस्मादंता १०१
वर्तु ५०। द (ज) सार्ने नकृष्टीत मागाधि शुभ्रजीवतां ॥ नवसा दानयं क गुनिमि
नकवसरुव ॥ पुतिपत्र नय तस्मात्कीयायासयुक्तक ॥ द (ज) सार्ने न ॥ सा
सुवृहन्ति गुमादजी। पूतऊननिर्सीकाली आह ऊनदिनं तथा। निलसार्नेव
कर्तव्यं निधिदीधानविद्यमं। सुयो ३८ कर्मात्तां ॥ यवान्नयसुरुक्तय ०। तस्मात्

पिथं यस्यानैतस्यैवतत्। जस्मावास्यामिलेखः ॥ षष्ठाष्टमी जस्मात्तास्या उरुं पकं
दजी। मेधुर्नभापसं वं तद्वा दजी श्वरममपिया ॥ तथा। कुरुपुल्लुन्दुसं काकी यदुद्देश्य
मवान नग्यालुलया निस्पात्ती तेलमीसमं वनात्। पुल्लुन्दु १ योलुमासी ॥ तथा ॥ न
स्यगीमयाचवं कुको वध्वरिका सुडयासमीसं। पुल्लुसुयोचित्यविवर्तनीयात्
जालिसमावर्तग। यदुद्देश्यष्टमीयैव जस्मावास्या यपुल्लुमा। पक्वप्रागानिना ०
१ कानि ववय ॥ दवल ॥ दिवाकतेकुले ॥ सार्ने निजिक कर्मात्रिमिक्त ॥ अरिया
दोसत्रिध्यायामिमेववा। नागदक्षानवीवाङ नप्राप्यत्पुतलध ॥ अ (ध) गता
तथा निविधानाजसंजय ॥ उतमोकायगदध ॥ पूतदिमासिराडकं नकृष्टीतप
यौ उ कृपकं पुयत्त ॥ हाउयं द्वासा (ध) वतं न तस्मादिगीरुव ० ॥ सदा निष्पयीना
। मेनाप्रो नैड तयाय ०। नप ॥ ० वृविधयेतत् प्रायसीरुय तं तव ॥ वीधायन ॥ स
हानिष्पसुविहं यासर्वा मध्यामया ॥ तगु सार्ने न कृष्टीत स्वाध्यायं हाउनेतथा ॥ ११

गायत्रि ॥ महा निष्ठादं चटिके ना गोमयसमासथा तिलनेन द्वितीयायासा न चटिकी ॥ तीय
यासाया चटिका प्रमहा निष्ठामारु ॥ कर्म विष्णवे वासा अय्यययोगा तथा ॥ वा जो नापिगया
तु कपिनाम नकीर्ये ॥ सुकुलसी न निरुंग जीवें तिदु लुता वदं ॥ त्रिविवानें कर्त्तुका
सुखी वें सफरी तिथो ॥ आमाग्य काम लुनना निमपय नरुदय ॥ पो लुमासाममा
संकाशी गुद (दाहनि) धनपुत्र कल कुधी जिला पिष्ट नरुदय ॥ सीका लोप्य सु
दादभी गुद वासयें ॥ वल नवी ययें द वं नापिक नं दधो डयें ॥ उलमरे (धवय
द्विजा तिरुन इ वल ॥ निषी उयति तदु सु स्नान गत्य वधरु वें ॥ मन्द मर्जिल य १०२
दादभी गुद वासयें ॥ वलानी कामसीयो (गो द हलासक सैक ली ॥ पुगानिवव नानि
ऊन यत्रिगुदी तानि सप्त सब पुदी येलिखितानि ॥ तथा कल्पसा नं (मोतमसं गुदं
लिखितानि ॥ यथो ॥ महा गुत्र निपा गें तु वृक्ष रेख्य वत ॥ सुत ॥ वेग ली पि हिक वी न
द्विपि (मुदक क्रिया ॥ यथा गला कन दं वल ॥ अत्र गुद यवा ननु गन्धमा ल्यादि

वर्ज्यं शुक्रपातं शुक्रावत्पू लुन वत्सव ॥ मातुः वक्षसासतः शुद्धिवर्जं यत्पितृवद्विष ॥
अदभ्यक्षं न वृषोत्सर्गं कर्मातिशयः ॥ यतः स्वर्गमवाप्नोति यः श्रमिविषमूले ॥ ७ ॥ महा
नपा ॥ उको मय कि विन्नका वयं ॥ अन्विर्ष वृक्ष रेख्य वत ॥ शुद्धं दं वक्रियो गथा ॥ विष्णवे तानि
मीतपिष्ट को नव धाया वदु सत्रय मर्क मनसापिनया वयं ॥ डी वरुणा वमाना वी
सुयमं यदि ॥ सुवत्सम किं गि धेनु गायत्री यपुदापयं ॥ यतिपुत्र वगी नारी मुय
सुयो ॥ वृषी ने वी लु डं लुगी यावत्पि ग विडी वति ॥ पत्रकी यनिषा गें तु स्रामा नवक
षानक कुः सला नुदु गी लान लिपा गें ॥ यक्ष पि डान नुदु लने स्रामा लने व विष ॥
दीद वरुणा गें गें पु सुवद्विषय ॥ त्रिपिष्ट मूद के पृथ्वी मय वान पु लु गी तथा तस्मादक्षि
यं गो (मिय सुत गो धिक ॥ स्नान मधुं दिनी कृया लुडी (लुनं निरामिष ॥ ननु कालं क गें
नारु गें ॥ सुसिना क लं ॥ अकलं अमं धा दिनी ति (गवि ॥ जावमनी ॥ सीद गें तु लिना
यं पालिना द कि (हो नव ॥ मूकार्गु वृ क निष्ठा ली (गर्वे नाय मने विदु ॥ त्रिः प्राप्तीयाय

कलुषीताः स्पर्शनादयताः। बुद्ध्याविष्णुश्चरुत्तमकीलनश्चुष्टुमागती ययमनायेवपु
धैयविमा कुनात्। नासंतीयेवधीयंते स्पर्शनात्पुष्टयं। स्पर्शंतीयेनयमसंख्योत
लितान्ते। कर्तुमेषामतथास्पर्शंतीयेन नितानेनो। नास्तीयेनतथावुक्ता। प्रीतयेन
वधामर्षं सस्यर्जनायापि प्रीतस्वरुपं रंभांरुवं। अकथं सस्यर्जनादेवपु। यं नैसर्वध
उत्तिदंरुपं उद्युक्तामदास्यपवित्रकं। अकथं नूनं विदुः यं वेत्तुवेत्तु कुमं धिउ।
समायुक्तं बुद्ध्यानुक्ति समन्वितं। लंघयं त्वयं मातुक्तु द्वितीयं न कदाचन। पृथ
पर्वतं नैस्ययं। कोऽप्येविरुयानिर्लेयविउदकि। धिकं। उश्चनस्तु १०३
लगादिताम्रविष्णुधने। नास्तीयेन उलं तिष्ठनायाकः। गुवितामियात्। अथेता
तं पि। समावाकीनं भुक्ति। योमाहात्म्यानकालं उरुयं दनधायनं। निराशास्त
कं किं पितृ हि। मरुदं वता। नाडं ननायदीयं न नसिवागुचिं न नव। नादशा
वर्तुननाया। लोपिनकाददि। सात्वायामं सदाविषः कलायादीन् जलं फलं। उरु

। सोऽनुद्वेष्टाः कार्यकर्मोत्तमं। आपस्तम्बः। अकथं दकं आवाकाः कथं वयं तां वति। उ
कं आवाकीं वदितं वयं तां वति। तस्मादनैकं वदितं कथं कलायादयावा मं इत्येव
वति। नोपतिष्ठति यः पूर्वो नापार्कं मरुदं शिवा। सप्रदवददिकायाः सर्वस्माद्विउक
धनयुतं न तोयेन सन्ध्यापासाविगादिता। पितृनीनप्रसंगं निनयुगी सकिदेवता। सो
गजगंतामुदाय्यापुंथकाउयं। गुरुं सन्ध्यादिउः कथं नैउधवयं नैकुले।। जय
जयपुं वदुकरुका। अकागुमनसा सदा। दनकिं कुं सजनिगीनं न नरपुत्रकं। गियं
पुं लगामयुगीद क्रियातकं। अथं यमनसा वेत्तुनिजिह्वोर्ध्वं नयवालयं। नैकं ययं
। वदकानैवपुकागयं। नपदापदमाकुस्य नयेवपितथाकं। गुविक्तुलाउयं क
। वसं भुवयं ऊयं। माहात्मी जययक्तु वायिकस्य यदीविगी। तस्मा कृतं पुं लया
उः सादृशोमानसः सतं भानवाये। भुयतं यस्तु सडपि। पुकीकितं। वायिकस्तु
यकपुव। उरुयाये। तदिजनि वेत्तुलां मिश्रकस्तथा। द्विउकविषयविधौ नकामं गिय

दाहयं ७१ नव कुसुमवत्सुतनपाग्येसवती कयना नापाणिनी नकुल्य श्रीनेवा बूठलिमासुधा
 नयदायादमाक्रमानववदितो कको नवासमाहितमनानयमीश्वरयैत्यनामासुवल्कु
 वपुठ श्रीगिरयप्रमदीं कथा । कुलगुनि श्रीवडा केमकमाली पुकल्ययं ७१ अनामिका
 कवदयोनेधि । अंगुष्ठमध्यासा पुढा अकसू उविधलेवा दक्षिण श्रीव
 मालिमंके कमावती । पुलंकमानू यूयुदाकवयन उपमाययं ७१ कलिः खटखटीनव
 गलेनमिति ॥ वलितं ववविद्वं ॥ सुटि गवाधिसकवडा रुक्म श्रीगं महाविष्णुः १०४
 मधि । गमी कुलसमझूती मदीमूद्विरुक्तियः विरुक्ति विरुक्ति सांकेत्यगमीनाडा
 ॥ वदत्रानदीयै ॥ यदुदानतथा दामः साध्यायः पितृ तप्यदी । वधा रुवति विधुंदा
 विनाकती ॥ अर्गुलीरुलं ॥ अर्गुं पुः पुष्टिदः पुः कं लुङ्नीमा ददासु गा । म
 थकवाथीका धनदामिन्ननामिका । मल्लगमिकुती पाथी दः सधूय दया किंती । गी
 नसकल्यादिनिवस्य सनवेषूवि ॥ नावदीयै ॥ गमीती वसमझूती मदीरुकावुमा

[illegible]

नेमिदिके ४ सदा । जलोक गूढपादाद्यु तथा गद्युपदादिकान् । कामाद्व संनर्सीत्यु नित्यकर्म
संत्यजं गुणमात्रं विविधं प्रयुक्तं तेषां विना । न कस्या नित्यकर्म विनं प्रयत्नं यत्
तथा ॥ साधकैर्वलिदानं न गुणैः सर्वं स न स्यात् । पक्षिणः कक्या गुहामत्स्याधः पक्षधाम
दिषीगवयो गाव ग्वा । गोवत्स्यसूक नः । खड्गश्च कर्णसाव ग्वा । गोधिका मरुतः ।
नवा ॥ एवमगुणैर्विना । खड्गकर्म न वादीनी वलयः पत्रिकी कर्म भावलिनिः
किं वृत्तिरिति साधकं दिव । वलिदानं न सगती जयं कर्तुं न । पान न च ॥ मत्स्यानां
गुणैर्विना । सासेकं न किमाप्नोति गुहमी से सुगुणैः । म । गजैः ॥ १० ॥
वयानी वि । एषा ॥ अष्टमासान् वाप्राति न किं कल्याणदावसा । गोधिकानी व
वर्कान् किमाप्नुयात् । वृषसावस्य रूषिने ॥ गूकवाधः ॥ एषा लिने ॥ अप्राति न त
पुंदाद गवाधिकी । अजाविकानी रूषिने ॥ पक्षी विगतिवा र्विकी । मदिषा एषीय
रूषिने ॥ गवाधिकी । न किमाप्नोति यत्र सी जगद् न रूषिने स्तथा । हिंस्र एषीय रूषिने ॥

[illegible]

यत्। तदा शिरो पुदग्रा कुपूति गार्ध सवासनैः॥ काटी वद्धं वाचिर्यं तु आशिन श्री गलद्वली। फीवैदी
- स मथ वा विह्वलि गगलद्वली। शिरो दीयाति कुसुम मरुवाग किर्त्तनं तथा। यशनी पदिकी
नवानाश्च विष्णोः शिरो नदग्रा कुवर्ति दत्तानवक सा प्रमात्। नतिमा सीय को
दग्रा विवावर्ति। नवा येयदिकान् नर्न पुदग्रा द्वे पागिनी। विन्नलाष्टे लक कुदि
तत्वे वय। रुग्रा शनी दिकी ये व नदग्रा कुपूति यन। सिंदूरद्वि। दग्रा न मदि
। यकिर्त्त वास गोदग्रा न अगोदं दह (मो) जित। उवादी नीय शूना श्रय कि लो शी १०१
डी। वास निवेदयं ता (एव) कुलडाना प्रसव लो। क पूसा न स कू म सख द्रु स्रज
। गुह्य लाम म स्राना मगु पुवे निवेदयं १। दृष्ट दं (न नदग्रा कु जिमो वा न वि न
तत्त स्र मि ४॥ निषिद्ध दिन मासा अय ४ कू म किल तयर्त्त। नृधिर तद्रु वं का य दत्ता
क वृत्तं १। न गृहीत कृति वं क सा मा न्य डलं। तीर्थ पुति पुव स्र व स्र मा लता त॥ तत्त॥
कुदि नर्त्त व द्वाद शी गुह्य वासनं। सफ स्री ड नदिव सं न कू म किल तयर्त्त। य

॥ संकाशं निलि सफमं ववि ७ क दिने गथ । गुहं उन्मदिने नै न कूर्यं किल ग
 ॥ आद्वयदमसा वासी क व पद न्ना द्रु पर । तथा सा ॥ नीलकंठ विमां कं ए असा वा
 नोद के ॥ तर्क मू दी य दाने न पि नृ क्षाम न् । क्षीर वं ७ । प्रति पु स व समा रु स ७ ति ७ अ
 ७ वं ये व संका शी गुह । एष वा उपा के म व वोत्स । प्र यगा दे म त वा स नै । सूर्य गु
 र विन दो षे किल ग य ७ । असा वा सा उ य म क ७ पु य रु कि ति लो द के । पा गु म
 य म धू मि त त यो ध नै । क री त व ति त कु डं स व द सी य थ र व ॥ कान्दं ॥ ती थ
 र्क वा त यो दी स ति लो द के ७ अ न्ध थ ग य य म् म् स वि ष्टा यी रु वं कि मि । वि ७ ए ष
 ७ द वा स र्गु दा त यो य न पि नृ न । न काल ने य म् स ७ किय तं स र्व क म् स । तथा
 ७ प ७ ७ ॥ यो नि र्ग त यो य म् म् ७ य पि नृ न क म् स ति लो द के ७ व न्ध ना म् वा यि ता ७
 ७ व न्ध य र्गु ७ ७ ७ ॥ अ द्भु र व न काले य पा लि ने के न नि र्व य ७ त यो य इ ल य न
 ७ उ व ७ ष वि षि स ७ ॥ स यो य पा गु म् स रु री ग ७ ॥ का व न न नु पा गुं द वा ड ग ७ नु म् न

[illegible][illegible]

या नारीयाकुं धनस्य वा सुवमाडा यनं गुणं गाली वामदावनं ॥ यावत्स्वतो मस्येखा सि गाव
प्रमाण निव । रुकी स्वर्ग सुखं कुं नममा एष पति युता । विरुर्वंश मावर्वंशः पतिर्वंश
यः पतिवतायाः ये । धन स्वर्ग सोखादिरा गिनः ॥ ॥ नगुविधवाधर्मः ॥ किन्द
३ ॥ विधवाक वनीर्वधार्क वंशः प्रमाणं ॥ ॥ जिनसा वपनं तस्मात्कायं विधव
उकाहानः सदाकायं निदिता प्रकृतान । विवागुं यधीनार्गं कायक वा
या । सासाधवासे वाक्कायं वा न्यायलमथपिवा । ककुं यनार्क वाक्कायं
थपिवा । यवानेर्वा रूताहारेः ॥ सकाहारेः ॥ यथा दुर्ग ॥ ॥ यानमागुं पुक्कूति १०
॥ स्वर्ग पुक्कू ॥ ॥ पय्यं की धमिनी नारी विधवाया वयं त्यति । तस्मात्स्वर्ग यनं का
ति सोखा समीहया । नीता । नी । दुर्ग नं कायं लि या विधवा कविता । गन्धद्वय
का । गानेव कायं सपयनः ॥ तथा । गन्धवत्तनाद्या आहती लिगुः स्वाह का ॥ यु
का ॥ उक्कू उवः स्वः स्वाह ति विप्रो दद्यात्तथाह ति । गन्धदं वक्ता स्यात्तथाह ति

॥ इति । प्रमाणं यदीमं कायं तथादिष्टि क ग द्यं । वि । जन्म असापि दवं सोमं मोदयात्तु
॥ ॥ सर्वे स्यापि ॥ ॥ इति । नमो नमो दद्यात्तु ॥ ॥ दद्वि । लापिग स्य स्य प्रावीनारीति
॥ ॥ निल गुर्ग देवदीनं नियमादि विवर्जं गी । दद्वि । लापिग स्य स्य प्रावीनारीति
यद्यु र्मावर्ग स्यात्तं तलं मां ससदेवादि । यधी दद्वि र्मावर्ग स्यात्तं तलं मां ससदेवादि
रूताप ननु । दं यो गी या तस्मात्तलं न इव ल ॥ दाउः ॥ लुक्कू रूतं ना सि लोका कि लिप
॥ वेद वावदीय ॥ वातापेला धग रिना अद्वय जग वत्तथा । वेउ सत्ता वाउस
दकि विगागुं । प्राप्ता धनः समाहूय । दास्यामीति धनं दिक्कं यद्यु नारीति
नमो र्मावर्ग स्यात्तं । यः ॥ यदं नममाहूता माउ नं कुरु गं दिउः ॥ ॥ नारीति समी
तुर्व कर्मावदिः कतथा यः ॥ यदं नममाहूता माउ नं कुरु गं दिउः ॥ ॥ नारीति समी
यः ॥ सर्व कर्मावदिः कतथा यः ॥ यदं नममाहूता माउ नं कुरु गं दिउः ॥ ॥ नारीति समी
ति नीति प्रायश्चित्तं यत्तवपि । नयः ॥ यदं नममाहूता माउ नं कुरु गं दिउः ॥ ॥ नारीति समी

नाहोनी यागना दूतसंयुवी। यासिद्धिः पूजितं निर्गं विष्णु वाचिनं लुप्यः। तकाटिकृतसं
 मकं शकल्यं नोत्र वं वसे। सु। धामनयनीतानीं गूडाणां वडमं गूडा। एतन्निनाधिकारी
 नोत्रोवाहीकयं विवा। गूडावाः नयनीतावा। सुभावायतिता विवा। कंनववा निव वापि
 । वाननकमापुयः॥ ॥ अथसंयुतगमूडाधामातिगुमन॥ विवालीवेंद विइसी ध
 मयः। सिनी। गूगुधेवदिगूडस्य धमनिः। गुयसः पयः। गुविः। लुगुगु
 गानदहं तथवा। मू। धामागुयानिले मूकशरीं तिसापुमाः। विप्रसेवेव
 जोईकमकीकृतं। यदतीनादिकृतं गद्वल्यस्य निष्कूलं। अगद्वतिः द ११०
 लुधः। विष्णुः। द्विजगुगुधेवेवपाकयः। धिकानयान। निजानेउयतिः
 गूडाधनगरेः। मूतः। रुविष्णु॥ वलुगुयस्य गुगुधे। गुविः। गूडाः कयतिमः
 मूकः। तिहारा गमगुदामाहवलि॥ वदत्यतिः॥ एतं वडमं गूगुधे सत्यम
 धमं वव। गूडधमं कथामनु। नमस्कां धदधितः। गूडस्य द्विजगुगुधे। सर्वमिल्या

थ। विक्रमः सर्वयः। धानी गूडधमं उदाहृतः। धमार्थमूयार्थमवाप्तं धमार्थं॥
 मूकः। गद्वल्यं गमकस्य गद्वल्यं। विक्रमः सर्वविक्रमं। कृतेन गूडां नदीं यराक। म
 पूर्वालादी लुकासी सपु। यदीमी। मनुभानगूडा ममिदयात्री द्विर्न दिव्यं।
 दि। गद्वल्यं नरास्य गमदि। ॥ ॥ नंदं लसकं दारिपायी। नतं नमलु। उ
 दागयी जीकुनिवेसनानिवायलाका। प्रवधाना नी। जीकुनिवेपविद्वदा
 लुका। धनं नुवायं वाक। गम्याचिनमस्कावमागुकव। यरुविधानादि
 यः। पलाकाजसाधनानि। गथा। गूडा। धीं मासिकं कार्यं वपनी नमयवर्दिनी।
 जोरकल्यं द्विजादि ईवलाउनी। मासिकं वपनी पुमिमासिमूनी। जसावासा
 दिजातिगुगुधे। जीवन्गूडी विविधनिली जीवः॥ निली जीविवि। धेजी वं दि
 दिगमावः॥ मनुः। गीकं नापिदि गूडं दानकाधो धनसंयुः यथा गूडादिधनमा
 मयुक्तं लानं ववाधमं॥ वासः। अथ धनसंयुः यनदीधः। असायान्पुकल्य

[illegible]